

विखरे तिनके



मूल्य पञ्चीम रुपये (25 00)

प्रथम संस्करण 1982, © अमृतलाल नागर
Bikhare Tinke (Novel) by Amritlal Nagar

बिन्दु तिन्क

अमृतलाल नागर

राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली

7

बनागत की छठ गुरमरनलाल का जन्मदिन है और पिछले पंद्रह वर्षों में पितर पक्खी सराधा में उनके पिता का धाढ़ दिन भी। आज उनका छपनवा जन्मदिवस है। नगरपालिका व स्वास्थ्य विभाग में हेल्थ अप्रमर पी० ए० के पद पर काम करने का अंतिम दिन शायद एक्जेंटेशन के लिए जाइए आ जाए। वन तक ताहर मुझ आशा की पतंग ध्रुव दीन दन्वर उडाई और हन शाम एक निसास दीन कर शायद बल आए की आशा व साथ नीचे उतार ली। दिन टल गए पर तु आज अपन जन्म दिवस के दिन झूठी चाहत भरे झूठे सपना की घुघ मिट चकी है। वस्तु सत्य साफ-साफ चलक उठा है आज तुम्हारा अंतिम दिन है। आज तुम रिटायर हो जाओगे। समय आइ आ रहा है। शायद है आ भी जाए। परसा राजधानी जाकर लोकल मेल्ल व जनसघी मंत्री स भी मिल आए थे। जन्मशर नास्त्री व साथ गए थे मंत्री जी के समधी हैं मंत्री जी न आश्वामन भी दिया था। शायद तीन प्रस के लिए नौकरी बहाल हो जाए। दखो।

गुरमरन बानू का मन ऊना-नीचा हो रहा है। मान आठ बज रह हैं। रघुर महाराज के यहा बिल्लू को भेजा है कि बुला लाए। पता नहा बनागत में घाहून और चढनी उमरिया में लौडिया व नक्शे नहीं मिलत हैं।—स्माल ! नीचे का आधा भवान किराय पर एक प्रेम वाले को दे दिया है। बठक का एक दरवाजा किरायदार का मुग्य द्वार बन गया है बठक स घुरभीनर तब दीवार छिचवा दा है इसलिये बठक और आगत दास्तान छाटे हो गए हैं। बुरा क्या है, तीन सौ रुपय किराय के जात है, दीवार उठवान का खर्च भी किरायदार न दिया था। वस सतसाइ बाबा की ल्या स इस समय गुरसरन बानू की तीन काठिया सिविल लाइ स मे है दरीय में एक छह दूकाना वाली इमारत है। ऊपर, तीन पनट बन हैं जिनमे उनक तीन पट अपनी-अपनी गिरस्ती व साथ रहने है। बल्कि तीसरा लडका

बिखरे तिनके

सतोपी प्रसाद तो अब पसचाला हो गया है विशननारायण रोड पर काठी बनवा रहा है। दुबानो का किराया आप वसूलन है। सब मिलाकर दा सवा ११ हजार किराये की आमदनी है। चार सड़कियां बंध्याह किए इसलिए बक बलेंस बहुत नहीं बन पाया। पत्नी भी किरासत में एक गांव लेकर आई थी। उम जमींदारी जवालिशन से डढ़ बरस पहले देच कर लाख रुपये जमा किए थे। उमका ब्याज भी जाता है। खाद के लिए त्रिकन वाली शहर भर की मला गाड़ियां को बमाई में गुरसरन बाबू और चीफ सनेटरी इस्पेक्टर तो बड़ी तात् घाल बने ही। मेहनत महावीर चौधरी भी लखपती बन गया। म्युनिसिपल अस्पताल के लिए दबाआ और इजेक्शना आदि सामान की खरीद होने पर भी अच्छा बमीशन डकारा है। हर पूड इस्पेक्टर की आमदनी इनकी मुट्ठा गरम किए बिना हो ही नहीं सकती। शहर भर के पूड इस्पेक्टर को अच्छी आमदनी बाल शत्रु में अपनी नियुक्ति के लिए गुरसरन बाबू के द्वारा आयोजित पुफिया नीलाम में सबसे ऊंची वाली नगानी पड़ती है। या खाते तो सभी है परंतु गुरसरन बाबू जैसे सबका बोटी-बोटी नोच कर खाते रहे वमा कोई बड़ा बेदिल वाला ही खा पाता है।

गुरसरन बाबू ने जनियर बनक की नौकरी से शुरू किया था। तरकीब करत-करत हेल्थ अफसर के पी०ए० के पद पर पन्च चीटा भसा बनकर रिटायर हो रहा है। अगर आइस न आए तो? य साला हेल्थ अफसर हराभी है सोशलिस्टा जनमधिया दानों का पटाय हुए है और इह बेहद सताता है। हर हफ्त दा चक्कर राजधानी के मार आता है। दफ्तर में इनके खिलाफ एमी पालिटिक्स फनाई है कि यही है जा पिछन तीन वर्षों से थान के साथ खेल रहे हैं। अगर गुरसरन बाबू दो बरसा का एकमटेशन पा गए तो हेल्थ अफसर का ऐस ठौर पर मारेंगे जहा पानी भी न मिने। वस अगर आज रिटायर भी हुए तो भी उसकी जनमपत्री ऐसी बिगाड जाएंग जसी तजाब से सूरत बिगडती है। पिछन पौन दो बरसा में गुरसरन बाबू का फमान के लिए एच०जा० (हेल्थ अफसर) ने क्या क्या जाल फलाए ह कि वस उनका कलेजा ही जानता है। बह ताबहो कि मारने वाले हाथ से बचाने वाला हाथ बड़ा साबित हुआ। बड दामाद उन दिना शहर के सुप्रिटेण्डेंट पुलिस थ। अपन समुर का बचाने के लिए उसन एच० ओ० का बिछाया जाल बार बार काट कर फक दिया। दफ्तर के हर क्लक हर इस्पेक्टर के पीछ पुलिस की जूतामार घमकिया छोट नी थी। दमरजेंसी

ही नहा उसके बाद भी छ जाठ महीनों तक न ता जनता वाल इनके तामाद का ही हटा पाए और न इनका एक बाल भा बाका हा पाया । तब तक गुरसरन बाबू न यण्डित जटाशर का दरबार भी साध लिया था । इस बीच म एच०आ० खराब तो बहुत मारत रह पर उह घायल न कर पाय । दगो, आज एच०आ० जीनता है कि मैं जीतपा हू ।

बटक जब म एक दर वाली हा गइ है तब स कोठरीनुमा हो गई है । बाप राज की एक छोटी आरामकुर्सी, तीन मूत्र और एक गोन मेज म भरी भरी लगती है । ऊपर जान का एक रास्ता इस कोठरीनुमा रठक स जुड़ा है । गुरसरन बाबू ने अपनी चिन्ता ममाधि से ऊपर कर एक छान हुई नजर घड़ी पर दूसरी सीड़ी पर तीसरी दोनार पर टगे कलेंडर पर डाली । यहा उचटती अबुलाई नजरें एकाएक हाण मे आ गइ । १३ मितम्बर । माली अग्रेजी तारीख म भी आज का दिन माहूम ही साबित हो रहा है । बिल्लू का बाहान बुलान भेजा वह वही बिपक गया । अत्र गी बजन म सात मिनट ह । सवा नौ की बस नहीं छटनी चाहिए । घर, आज रिवश म भी चला जाऊ तो कम म कम खाना खाकर तो घर से निकल सकता हू । तेलहन दीम का बुझती बाती की चुन्नी-मो मो जसा गुरसरन बाबू का मन इस मनहूमियन बोध से बिबश हाकर अपने आपका अनिवाय अत के प्रति समर्पित करने लगा । नबिन गुरसरन बाबू को आज आपस स करेकर रडियां टाइम स पढ़चाा ही है । भल रिटाय- हा जाए पर आज अगर दपनर के तीन चार बिडामार को जान म फसी बिडिया बनाकर न छाडा तो असल बाप स पण नही । हम तो डूबेग गरम पार का ले डूबेंगे । एच०आ० साल के खिलाफ ऐसे डाकूमण्डल है कि अमम्बनी तक म तहतका मच जाएगा । दूसरे, इस्टन्सिशनल क्लक नौवतराय की नौबत मजानी है । कमीना अपन जातिभाई के खिलाफ एक कमीनूल्वमीन बनिध का समर्थन कर रहा है । इस कम्बधन की तो नौकरी ही ने बीतना है । हन्थ अफसर को भी त्यागपत्र देने के लिए मजबूर होना पडगा ।

कपिला बेमीकल एण्ड फार्म्युटिकुल कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड म इनके दूसर दामाद का सगा छाटा भाइ काम करता है । सठ का पी०ए० है । पीन की सत है । एक बार अपन सठ के नाम एच०आ० गायन की एक चिटनी गुरसरन बाबू के हाथ पिछहसर रण्य मे बेच गया था । दपतर के छप कागज पर गोयल न लिखा था— मन आपका भला करने के लिए आदेश-नल टाइप करवा लिया है । आप लच टागम म आपस आवर

बिखरे तिनके

सतोपी प्रसात ता अब पसवाला हा गया है विशानारायण रोड पर बाठी बनवा रहा है। दुकाना का बिराया आप बमूलन हैं। सब मिलाकर दा सवा दा हथार बिराय की आमनी है। चार सठबिया ब ब्याह किए इसलिए बब बलेंस बनुन नही बन पाया। पत्नी भी बिरासत म एक गाव लकर आई थी। उस जमीनारी अबालिशन म डेन घरम पहन बेच कर लाख रुपय जमा किए थे। उसका याज भी आता है। पाद ब लिए बिकन वाली शहर भर की भला गाडिया की बमाई म गुरसरन बाबू और चीफ सनेटरी इस्पक्टर ता बडा ना बान बने ही। महतर महावीर चौधरी भी लखपती बन गया। म्युनिसिपल अस्पताला ब लिए दवाआ और इजबगना जाति सामान की खरीन हान पर भी अच्छा बमीशन डकारा है। हर फूड इस्पक्टर की आमनी इनकी मुठ्ठी गरम किए बिना ह। ही नही सपनी। शहर भर ब फूड इस्पक्टरा का अच्छी आमदनी बाल क्षेत्र म अपनी नियुक्ति ब लिए गुरसरन बाबू ब द्वारा आयोजित खुफिया भीलाम म सवम ऊची वाली लगानी पडती है। या छान तो सभी हैं परतु गुरसरन बाबू जसे सत्रको बोनी-बानी शोध कर घात रहे बमा कोई बडा बेजिल बाना ही छा पाता है।

गुरसरन बाबू ने जूतियर बनक की नौकरी स शुरू किया था। तरबकी करत-करत हल्य अपसर ब पी०ए० के पद पर पट्टेचे चीटा भसा बनकर रिटायर हा रहा है। अगर जाइस न आए ता? य साचा हल्य अपसर हरामी है साशलिस्टा जनमघिया दानों को पढाय हुए है और इह बेहम मताता है। हर हपन लो चक्कर राजधानी ब मार जाता है। दपतर म इनक खिलाफ एमी पालिटिकम फनाई है कि यही है जो पिछल तीन बपों स शान ब साथ चल रह है। अगर गुरसरन बाबू दा बरसा का एकसटेशन पा गए तो हल्य अपसर को एस ठौर पर मारेंम जहा पानी भी न मिल। बस अगर आज रिटायर भी श्रुए ता भी उसकी जनमपत्नी एमी बिगाड जाएग जसी तजाब स सूरत बिगडती है। पिछल पौन दा बरसा म गुरसरन बाबू का फमान ब लिए एच०आ० (हल्य अपसर) न क्या क्या जाल फलाए है कि बस उनका कलेजा ही जानता है। वह ताबहा कि मारने वाले हाय स बचान वाला हाय बडा साबित हुना बडे दामाद उन दिना शहर ब सुप्रिटेण्डेंट पुलिस थ। अपन समुर की बचाने ब लिए उसन एच० जो० का बिछाया जाल बार बार काट कर फेंक लिया। दपतर के हर बलक हर इस्पक्टर क पीछे पुलिस की जूतामार घमबिया छाड दी थी। इमरजेंसी

हा नहा उसके बाद भी छ आठ महीनों तक न ता जनता वाल इनके दामाद का ही हुटा पाए और न इनका एक बाल भा बाबा हा पाया । तब तब गुरमरन बानू न पण्डित जटाशंकर का दरबार भी साध लिया था । इस बीच म एच०आ० घराबे तो बहुत मारत रह पर उह घायल न कर पाय । दखो, आज एच०आ० जीतता है कि मैं जीतना हूँ ।

बटक जब मे एक दर वाली हा गई है तब स कोठरीनुमा हो गई है । बाप राज की एक छाती आरामकुर्मी, तीन मूत्र और एक गाल मज्ज म भरी भरी लगती है । ऊपर जाने का एक रास्ता इस कोठरीनुमा बठन म जुड़ा है । गुरमरन बानू ने अपनी चिंता ममाधि मे उतर कर एक खाई हुई नजर घड़ी पर, दूसरी सींगी पर तीसरी नीवार पर टंग कलेंडर पर डाली । यहा उचटती अकुलाई नजरें एकाएक हाश म आ गई । 13 सितम्बर । साला अग्रजी तारीख म भी आज का दिन मनहूस ही साबित हो रहा है । बिल्लू का बाह्यन बलान भजा, वह वही चिपक गया । अग्र नी बजन म सात मिनट है । सवा नी की यम नहा छूटनी चाहिए । घर आज रिकशे म भी चला जाऊ तो कम स कम खाना खाकर ता घर स निकल सकता हूँ । तलहीन दीय की बुझती बाती की चुनी मा ली जसा गुरसरन बानू का मन इस मनहूसियत बोध स विवश हाकर अपन आपका अनिवाय अत के प्रति समर्पित करने लगा । लेकिन गुरसरन बानू को आज आफिम ता करकट रडियो टाइम म पहुचना ही है । भले रिटायर हा जाए पर आज अगर दफ्तर क तीन चार बिडीमार का जाल म पसी बिडिया बनाने न छाडा ता असल बाप स पदा नहीं । हम तो डूबग सनम बार का ल डूबेंगे । एच०आ० साले के खिलाफ एस डाक्यूमेण्टम है कि असम्बली तक म तहनका मच जाएगा । दूसरे, इन्विशमेट कनक नीवतराय की नीवत बजानी है । कमीना अपन जातिभाई के खिलाफ एक कमीनु-कमीन बनिय का समयन कर रहा है । इस कम्बल की तो नीकरी ही ले बीतना है । हथ अफसर का भी त्यागपत्र देने के लिए मजबूर होना पडेगा ।

कपिला केमीकल एण्ड फार्मस्युटिकुल कम्पनी प्राइवट लिमिटेड म इनक दूसरे दामाद का सगा छोटा भाइ काम करता है । सठ का पी०ए० है । पीन की लत है । एक बार अपन सेठ के नाम एच०आ० गायल की एक चिट्ठी गुरमरन बाबू के हाथ पिछहत्तर रुपय म बेच गया था । दफ्तर के छप बागज पर गायल न लिखा था— मैं आपका भला करने के लिए आदेश-पत्र टाइप करवा लिया है । आप लच टाइम म आफिम आकर

मुझस उसपर दस्तखन करा ले जाइए। यह ध्यान रखिएगा कि वस्तु छाटी छाटी गड़िया म आए बड़ी मनही गिनती पूरा हा, धन्यवाद। बीस बीस रुपय हर बार दकर तीन स्लिपें गुरसरन बाबू न और भी पुराद रखी है। कपिला कम्पनी क मालिक भीमूमल जन को पच्ची भेज कर डा० गायल न नगरपालिका अस्पताल की मट्टन मुन दा घूरेलास का रुपय दन का बहा था। मुन दा डा० गायल की रखल है यह सब जानत है पर यह बात नहा जानता कि बाबू गुरसरन साल न उन मभी पचिया की फोटा स्टेट कापिया हो नहा उनक बनाव भी बनवाकर तयार रने ह। दलिक आजकल क चीफ रिपोन्डर को गुरसरन बाबू क तीसर बटे सनापो न पहल स ही घटा और पना रखा है। अगर आज गुरसरन बाबू रिटायर हुए तो कल सबर क आजकल म य लाक छप जाणन। लिखित न सही पर यह परम्परा बन गई थी कि सूट का माल एच०जा० की जन म उनक पी०ए० की माफत पहुचता था परन्तु डा० गायल की अपन पी०ए० स कुछ बिगड गई तन स ही नीवतराय की माफत यह काम होन लगा। नीवतराय की भी एक् चिटठी इनके पास है। मुन दा क नाम लिखी गई यह चिटठी भी गुरसरन बाबू न गुरदीन अपरासी स दस रुपय दकर खरीद ली थी।

गुरसरन बाबू ऐसी कारमाजिया म आरम्भ स ही बडे तज रह है। शुरू म कई बरमा तक एक स्थानीय नता के लिए ऐमा बहुत ना काम करके उह लौहपुरप बनन म बड़ी सहायता पत्रचाइ थी। फिर जब नौह पुरप मंत्री बनकर लगनऊ जा वस और एक बार इनके सिर पर भी अपना लोहा बजाया तो दूसरे दिन स ही उनके पच्चे भी अखबारा म छप गए। लौहपुरप मंत्री जी न तुरत मोम बनकर इह भी पिघला लिया। चालाक स चालाक मनुष्य बेहोशी म कभी न कभी और कही न कही चूक कर ही बठा है। गुरसरन बाबू चतुरा के उही बहाण क्षणा की चूक का मद्रह किया करते है। अपनी इसी जान्त के कारण गुरसरन बाबू स दफतर म ऊपर से लेकर नीचे तक सब लाग आतकित रहत है। परन्तु इम समय तो वह दफतर म तोट हो जाने की आशका से स्वय आतकित है लगता है भूछे ही जाना पडगा। कसी मनदूस है मेरी जमतिथि। बीस हाथा वाला रावण दो हाथा वाल क तीरो स मरा जा रहा है—वही रावण जिसने बाल का भी बाघकर पटक रखा था। एक गहरी सास भूह स निकल पडी। हडबडाकर घडी पर दृष्टि डाली। इधर नौ की लकीर पर मुई आई उधर

बिल्लू ने एक सड़के के साथ बठक में प्रवेश किया कहा, 'रघवर महाराज ने कहा है रोजीने क दो पाठ करके ही आवेंगे।'

"कमीना !

"मैं उनका भतीजा का पटा लाया हू। जनऊ बहुत मत्ता था इसलिए एक नया जनेऊ भी पहना दिया है। आप इसे लेकर ऊपर चलें।'

सभी बिल्लू को मा सीटी के दरवाजे पर दिखलाई दी। बिल्लू हड़बड़ा कर बोला, 'मम्मी रघवर ता पापा का टाइट साध न सकेंगे। उनका भतीजे को ले आया हू।

"रघवर के कोई भाई ही नहीं भतीजा कहा स हो गया। यह तो मुनुआ महावामन का भाजा है।'

'हां है पर पण्डित तो है ममी।

'बिल्लू इसे दस पस दे के विदा कर। महावामन का सराध नहीं जेवाऊगी। फिर पति से कहा 'तुम पण्डित की पसल भस के खाना खाओ। जनमन्ति के दिन भूखे नहीं जाने दूगी।'

महाबाह्यन का भाजा पसा क लिए अड गया। चबनी लेकर ही टला।

टन !

दफ्तरी घड़ी की आवाज आज अरमे बाद गुरसरन बाबू के काना में पड़ी, अपनी रिस्टवाच पर उल्टि डाली कोई बजे थे। उनके मन में इस समय सतौप का सागर आनन्द-तरंग से लहरा रहा है। अभी आधे-पौन घण्टे पहले ही वह अपने सर्विस करियर की सर्वोत्तम उपलब्धि प्राप्त कर चुके हैं। बाईस फाइल के वोन में सबसे नीचे अपनी नई कारगुजारी की फाइल लेकर डा० गोयल के पास पहुंचे। थोड़ी देर पहले उन्होंने एच०ओ० का किसी आत्मीय स्वजन किस्म के व्यक्ति से फोन पर यह कहते सुना था कि मैं ठीक सवा बारह बजे दफ्तर से उठ पड़ूंगा। गुरसरन बाबू ठीक बारह बजे के दस मिनट पर साहब के पास पहुंचे। गुरसरन बाबू को देखते ही साहब की त्योरिया आमतौर से चढ़ जाया करती थी लेकिन आज अच्छे मूड में थे बोले 'कहिए गुरसरन बाबू कैसे तकलीफ की ?

हुशूर नोकरी का अंतिम दिन है, अपना पूरा नमक अदा कर जाने की चिंता से आपको यह कष्ट देने आया हू।'

इतनी फाइलें। पर मुझे तो अभी पांच मिनट में जाना है, भई।'

विघरे तिनवे

पाच ही मिनट का नाम है सर, सिर्फ साइन करना है आपको, बड़ी मामूली सी फाइलें हैं। कहत हुए पहली फाइल पेश की। गुरसरन बाबू की मनायोजनानुसार ही पहली फाइल ही डाक्टर साहब का दुर्घाता बना गई। लगभग बीस-बाईस दिन पहले पालिका अस्पताल की मेट्रेन सुनगा क पति धूरेलाल (जो संयोग से दफ्तर में जनम मरन रजिस्टर सम्भालने वाले कलक है) के विरुद्ध नाइट-सॉयल कलक माताप्रसाद की शिकायत पर साहब ने अपने पी० ए० को जांच के लिए आदेश दिया था। गुरसरन बाबू जानत थे कि उस समय सुनगा और डा० गोयल के अवध रिश्ते से दुखी धूरेलाल ने अपनी नसबंदी करवाके अपनी पत्नी को यह धमकी दी थी कि अब जो तुम्हारे बच्चे होंगे उनका बाप बानूनी तीर पर मैं नहीं तुम्हारा यार ही कहलाएगा। सुनगा ने डर कर यह बात अपन यार ने कह दी। यार ने दुष्ट पति को दण्डित करने के लिए उसका विरुद्ध शिकायत लिखवाकर फाइल चलवा दी। बाद में धूरलाल अपनी पत्नी और उसके प्रतापी प्रेमी के चरणों में पाहिमाम हो चुके थे और एच०ओ० न मौखिक रूप से गुरसरन बाबू से यह कह भी दिया था कि धूरेलाल की शिकायत फाइल कर फेंक दें इक्वायरी न करें। फिर भी फाइल पेश की और धूरेलाल मुलफेबाज जुआरी और लडावा साबित कर दिया गया था साथ ही यह नोट भी था कि इस बार धूरलाल को कबल कठोर चेतावनी ही दी जाए। यह फाइल देखते ही डा० साहब का मूड आफ हो गया मैं आपन कहा था कि इस लटर को डिस्ट्राय कर दीजिए।

गलती हो गई सर सुन नहीं पाया था। इसे अभी खतम कर दूंगा। बाकी फाइलें—

गुरसरन बाबू का चलाया तीर अपन ठीक निशाने पर लगा। धूरेलाल प्रकरण साहब के काल त्रीध को जगा गया। जान की जल्दी भी थी इस लिए गुरसरन बाबू की मनहूस सूरत का जल्द से जल्द टालने की उतावली में आखें माच कर दस्तखत करते चले गए। धूरेलाल के बागड फाइल से नोच कर गुरसरन बाबू ने साहब के सामने ही फाइल फेंके और हाथ जोड़ कर कहा आज मेरा आखिरी दिन है सर मुझसे जो अपराध हुए हा उन्हें क्षमा करें।

एच०ओ० यह कहते हुए निकल गए कि बाबू नौबतराय का चाज देकर जाइएगा। साहब ने जान के बाद मनोवैज्ञानिक धोखाधड़ी से जिस सादे बागड पर साहब के दस्तखत करा साए थे उसपर गुरसरन बाबू ने

डा० गोयल के खासुलखास चमचो के विरुद्ध एक बड़ा ही सख्त नोट टाइप किया। साहब की दम्तखती चिठिया के ऊपर प्रशासक के नाम यह नोट लिखा कि इन लोगों के विरुद्ध कुछ प्रमाण एकत्र किए जा चुके हैं जा सलग्न हैं। इनके विरुद्ध उच्चस्तरीय जांच करने के आदेश दिए जाए। प्रमाणा की फोटोस्टेट प्रतियों के साथ चार व्यक्तियों पर आरोप लगाए गए थे पालिका अस्पताल की मेट्रन सुनंदा धुरेलाल, इस्टेब्लिशमेंट क्लब नौबत राय फूड इस्पेक्टर गुरुचरण सिंह और नाइट सायल क्लब माताप्रसाद।

किसीको ब्यूतर पासने का शौक हाता है किसीका टिकट जमा करने का गुरसरन बाबू की हाँवी दूसरों की बमजोरिया के प्रमाण एकत्र करने की रही है। उसी शौक की वजहसे अपन सेवा काल की यह अंतिम फाइल लेकर ठाई बजे वह प्रशासक के पी०ए० चंद्रप्रकाश अग्रवाल के पास गए। चंद्रप्रकाश और डा० गोयल सजातीय और सम्बन्धी अवश्य हैं पर उनके चद्रमा आठवें-बारहवें पड़े हुए हैं। गुरसरन बाबू न बाता मे मिठास धाल-कर एच०ओ० और पी०ए० की आपसी बड़वाहट का उभारा। रखल सुनंदा को कमीसफाई से उसके घर के हाथों ही कत्ल करवाया है कि उसे देखकर चंद्रप्रकाश बाबू गुरसरन बाबू को अपना गुरु मान गए। प्रशासक महोदय सवा तीन बजे लच से लौटे। चंद्रप्रकाश फाइल पर एन हफ्ते मे रिपोर्ट देने के आदेश लिखकर अपने बड़े साहब के दस्तखत करा लाए। चलते चलाते गुरसरन बाबू भी बड़े साहब को अपना विदा प्रणाम निवेदन करा गए। बड़े साहब ने कहा 'मिस्टर गुरसरन, मुझे दुख है कि आपको एकमर्शन न मिल सका। मेरे पास ऊपर से भी आपने लिए फोन जाया था मगर चूँकि डा० गोयल का नोट आपके बहुत खिलाफ था इसलिए'

'कोई बात नहीं हुआ, आपके दिल में मेरा क्याल है यही बहुत है।'

लगभग पौन चार बजे अपने विभाग में पहुँचे। स्वास्थ्य विभाग दर-असल राज इसी समय गुलजार होता है। विभिन्न क्षेत्रों के छात्र भर्पाई आदि के निरीक्षण तीन बजे के बाद ही यहाँ अपनी रिपोर्ट देन आते हैं। केसरगज बाड के फूड इस्पेक्टर मानस महोदय पंडित रामखेलावन मिश्र गुरसरन बाबू से लगभग पाच-छम सवेण्ड पहले कमर में आए थे। तब त्रिपथ क्लब एम०डी० शर्मा की मेज के सामने पड़ी कुर्मी खींच कर बठ ही रहे थे कि गुरसरन बाबू ने प्रवचन किया। उन्हें देखते ही मिश्र जी बोले, 'अरे गुरसरन बाबू बड़ी उमर हो आपकी मैं अभी रामन में आप ही

विखरे तिनके

पाच ही मिनट का काम है सर सिफ साइन करना है आपको, बड़ी मामूली सी फाइलें हैं।' कहते हुए पहली फाइल पेश की। गुरसरन बाबू की मनोयोजनानुसार ही पहली फाइल ही डाक्टर साहब का दुर्वासा बना गई। लगभग दोस-चाईस दिन पहले पालिका अस्पताल की मेट्रेनसुन दा क पति घूरेलाल (जा सयोग से दफ्तर में जनम मरन रजिस्टर सम्भालने वाले क्लक है) के विरुद्ध नाइट-सायल' क्लक भाताप्रसाद की शिकायत पर साहब ने अपने पी० ए० को जाच के लिए आदेश दिया था। गुरसरन बाबू जानते थे कि उस समय सुन दा और डा० गोयल के अवध रिश्ते से दुखी घूरेलाल ने अपनी नसबंदी करवाकर अपनी पत्नी को यह धमकी दी थी कि अब जो तुम्हारे बच्चे होंगे उनका बाप कानूनी तौर पर मैं नहीं तुम्हारा पार ही कहलाएगा। सुन दा ने डर कर यह बात अपने पार में कह दी। पार ने दुष्ट पति को दण्डित करने के लिए उसके विरुद्ध शिकायत लिखवाकर फाइल चलवा दी। बाद में घूरलाल अपनी पत्नी और उसके प्रतापी प्रमी के चरणों में पाहिमाम हो चुके थे और एच०ओ० ने मौखिक रूप से गुरसरन बाबू से यह कह भी दिया था कि घूरेलाल की शिकायत फाइल कर फेंक दें, इक्यायरी न करें। फिर भी फाइल पेश थी और घूरलाल सुलफेबाज, जुजारी और नडाका साबित कर दिया गया था साथ ही यह नोट भी था कि इस बार घूरेलाल को केवल कठोर चेतावनी ही दी जाए। यह फाइल देखते ही डा० साहब का मूड आफ हो गया मैं आपसे कहा था कि इस लटर का डिस्ट्राय कर दीजिए।

गलती हो गई सर सुन नहा पाया था। इसे अभी खतम कर दूंगा। बाकी फाइलें—

गुरसरन बाबू का चलाया तौर अपन ठीक निशाने पर लगा। घूरलाल प्रकरण साहब के काले क्रोध का जगा गया। जाने की जल्दी भी थी इस लिए गुरसरन बाबू की मनहूस सूरत को जल्द से जल्द टालने की उतावली में आखिरी मीच कर दस्तखत करते चले गए। घूरेलाल के कागज फाइल से नोच कर गुरसरन बाबू ने साहब के सामने ही फाइल फेंके और हाथ जोड़ कर कहा, आज मेरा आखिरी दिन है सर मुझसे जो अपराध हुए हा उन्हें क्षमा करें।

एच०ओ० यह कहते हुए निकल गए कि बाबू नौबतराफ का चाज देकर जाइएगा। साहब के ज्ञान के बाद मनावजानिक घाछाघड़ी से जिस सादे कागज पर साहब के दस्तखत करा लाए थे उसपर गुरसरन बाबू ने

बिपरे तिनके

डा० गोपल व खामुलपास चमचों के विरुद्ध एक बड़ा ही सख्त नोट टाइट किया। साहब की दस्नयनी बिडिया के ऊपर प्रशासक के नाम यह नोट लिखा कि इन लोगों के विरुद्ध कुछ प्रमाण एकत्र किए जा चुके हैं जो सलग्न हैं। इनके विरुद्ध उच्चस्तरीय जांच करने के आदेश दिए जाए। प्रमाणों की फोटोस्टेट प्रतियों के साथ चार व्यक्तियों पर आरोप लगाए गए थे पालिका अस्पताल की मेडन सुन दा घुरेलाल, इस्टेब्लिशमेंट बनव नौबत राम फूड इस्पेक्टर गुरुचरण सिंह और नाइट सायल बलक माताप्रसाद। किसीको ब्रूतर पालन का शौक होता है किसीको टिकट जमा करने की रही है। उसी शौक की बदौलत अपने सेवा काल की यह अंतिम फाइल लेकर आई बजे वह प्रशासक के पी०ए० चंद्रप्रकाश अग्रवाल के पास गए। चंद्रप्रकाश और डा० गोपल सजातीय और सम्बन्धी अवश्य हैं पर उनके चंद्रमा आठवें-बारहवें पड़े हुए हैं। गुरसरन बाबू ने दाता म मिहाम घौन-बर एच०ओ० और पी०ए० की आपसी बड़बाहट को उमारा। रखल सुन दा को कमी सफाई ने उसके पार व हाथों ही करने करवाया है कि उसे देखकर चंद्रप्रकाश बाबू गुरसरन बाबू को अपना गुरु मान गए। प्रशासक महोदय सवा तीन बजे लच से लीटे। चंद्रप्रकाश फाइल पर एक हफ्ते में रिपोर्ट देने के आदेश लिखकर अपने बड़े साहब व दस्तखत करा नाए। चलत चलाते गुरसरन बाबू भी बड़े साहब को अपना विदा प्रणाम निवेदन करने गए। बड़े साहब ने कहा, मिस्टर गुरसरन मुझे दुष्ट है कि आपको एमर्जेंशन न मिल सवा। मेरे पास ऊपर से भी आपके लिए फोन आया था मगर खुवि डा० गोपल का नोट आपके बहुत खिलाफ था इसलिए कोई बात नहीं हुआ, आपके दिल में भरा ख्याल है यही बन्त है।

सलग्न पौन चार बजे अपने विभाग में पहुँचे। स्वास्थ्य विभाग दर असल रोज इसी समय गुलजार होता है। विभिन्न क्षेत्रों के छात्र, मरीज आदि के निरीक्षण तीन बजे के बाद ही यहाँ अपनी रिपोर्ट दन जात है। बैतरगज बाड के फूड इस्पेक्टर मानस महाद्वि पंडित रामखलावन मिश्र गुरसरन बाबू से लगभग पाच-दस सेवेण्ड पढ़ते कमर में आए थे। त्रय विक्रय बलक एस०डी० शमा की मेज के सामने पड़ी कुर्मी खींच कर बठ ही रहे थे कि गुरसरन बाबू न प्रवेश किया। उन्हें देखते ही मिश्र जी बोले बरे गुरसरन बाबू, बड़ी उमर हो आपकी, मैं अभी रास्त में आप ही

के विषय म चिन्ता करता जा रहा था। पहले बतलाइए शुभादश आ गया ?

जामतौर से गम्भीर रहनेवाले गुरसरन बाबू इस समय परम प्रसन्न थे। दायें हाथ की फाइल बाई बगल में दबाकर तपाक में शेकहैड के लिए हाथ बटाया और कहा 'आफिस में आज आपसे पार्टिंग शेकहैड कर लू पंडित जी। ब्राह्मण है इसलिए चरन भी

अरे अरे आप आयु में पद में मुझसे ज्येष्ठ हैं। गुरसरन बाबू को चरणा तक न झुकते उठकर दोनों हाथों से खींचकर छाती से कसकर लगा लिया। फिर नौबतराय की मेज के पास रखी कुर्सी खींचकर गुरसरन बाबू का हाथ पकड़कर बठाया। फिर कहा 'अरे हम तो बड़े विश्वस्त सूत्रा से पता चला था कि आपको अटठावन वर्ष

वह सत्य था मगर यह भी सत्य है मिश्र जी। हमारे माननीय बास ने बहुत एडवस कमिण्ट्स दिए थे। प्रशासक धंधारे क्या करते। वह तो बहुत ही इसापपसद और सज्जन पुरुष हैं।

एच० ओ० की निंदा सुनकर उनके सबसे बड़े चमचे नौबतराय उचके बोल 'बड़ी-बड़ी रमायनें आचते हैं आप पंडित जी 'याप की कहिए। भला काल नाग को पालने के लिए भी कोई उसे दूध पिलायगा।

दफ्तर में सनाटा छा गया। प्रसन्न को आध्यात्मिक बनाते हुए मिश्र जी बोल 'देखिए बाबू नौबतरायजी किसीको दाप देना उचित नहीं है। मैं तो मंच पूछिए यह मानता हू कि न तो डाक्टर साहब का दाप है और न हमारे माननीय गुरसरन बाबू का ही श्रीराम सरकार की मर्जी अब कुछ और है। वह यह देखते हैं कि म्युनिसिपल सचिव से पार्सि हुई लक्ष्मी से अब यह काई घधा करें कि जिससे इनका और सकड़ा बेकारा का भला हो

अपना भला य अवश्य करेंगे मगर दूसरो का भला ?—यह इनके धरम में लिखा ही नहीं। एक लडका स्मगलर प्रिंस हुआ ही गया। भारत हागकांग से ऐसे आता-जाता है जस घर-आगन में घूमता हो।

देखिए नाइट सायल बाबू अपने काम की सहाय सज्जनो के बीच में मत फलाइए

अरे उसीकी बदौलत तो कोठिया खड़ी की है इहाने। बहुत-बहुत नाइट सायल बाबू अपनी कुर्सी पर दोनों पर उठाकर उचककर बैठ गए।

गुरसरन बाबू कुर्सी से उठे, "अच्छा, मिथ जी "

'अरे बाहू इस प्रकार कैसे ? बघुआ आज हमारे बाबू गुरसरन लाल जी श्रीवाम्तव हमारे कायानय से बिदा ल रहे हैं, उनके लिए अपशब्द बोलना उचित नहीं है। हमे कम से कम अपने वार्मलिय की परम्परा रखने हुए एक फेयरवेल पार्टी देनी चाहिए। ठाईए एक एक रुपया निकालिए फराफट।'

नही पंडित जी आपने अपन श्रीमुख से ये जा शब्द कह लिए यही फेयरवेल बहुत है। अब आया दीजिए। चलने के लिए खड़े होकर एक बार नौबतराय की ओर मुझे मुस्कराकर कहा, आपमे भी एच० ओ० न कहा होगा। मुझे भी आदेश दिया है कि नौबतरायजी को चाज दे दो। पाच बजे तक जब चाहिए चाज ल लीजिए।'

नौबतराय भी अब नम पड चुक थे कहा "चाज भ नेना ही क्या है। टाईप राइटर रहगा ही। स्टेशनरी हा फाइलें "

'मैंने आज ही सब सादन कराके रख ली हैं एक भी पेंडिंग म नहीं रखी। आप कल से कल का काम ही शुरू करेंगे।' गुरसरन बाबू एक बार मानस महोदधि मिथ जी का दूसरी बार सबकी एक धुमोवा हाथ जोड़ करक अपन कमरेम चले गए। उनके जाने के बाद इस्टेब्लिशमट बाबू दबी डबान म बाने हठार हरामिया क भावे खोडकर रक्षा जी न इसको डाना था। इनकी चाह न भरली क भीतर समती है और न आवाश मे।'

मिथ जी बोले अरे कुछ भी हा पार आफिमि का टूट्टीशन मल बिगाडो बिदाई समारोह होना ही चाहिए। साओ सब जन एक एक रुपया निकाना, शर्माजी हा यह बात है। धन्यवाद, बाबू नौबतराय। अरे डाक्टर कुलथेष्ठ निकनी माई।

'एक रुपया बहुत होना है मिथ जी'—

मिथ कहिए मैं स्वी थोडे ही हू जा मिथ्या कहते हैं।

अरे खर, मिथ ही सही ? अमा रुपये म पूरे सौ रुपये जाने हैं महाराज।'

स्नो बाबू डाक्टर कुलथेष्ठ हस पड बाले, आपकी बात पर एक पुराना कथित याद आ गया। किसी उनीमवी मताली क कवि न आप ही को तरह रुपये का बढपन बखाना था।

'अरे मुनाओ पार कविताआ और मविष्यवाणिया क तो तुम बान्शाह हा। एम० डी० शर्मा की बात पर और भी एक-एक बातें उठा। डाक्टर

कुलधेष्ठ सुनान लगे 'रूप की महिमा बखानत हुए बचि रहता है—

जाम दू अधला चार पावली दुबनी आठ तामें पुनि आना
सखि सातह समात हैं ।

वत्तिस जघनी जामें चौंसठ पसा होत एक सौ अठठाइस अघेला
गुनमात हैं ॥

जुग सन छप्पन छगम तामें देखियत दमडी सु पाच सत बारह
सघात है ।

कठिन समया बलिबाल की कुटिल दया सलग रुपया भया
बाप दियो जात है ॥

अरे बाह कुलधेष्ठ नौबतराय तो बबल सौ तक ही गिन पाए परंतु
तुमने ता सक्डा से रुपये का बजन बढ़ा दिया । देख लिया मिश्र जी कोई
रुपया शिवया यहा दिखलाई नहीं पड़ता । चाह तो मेरे रुपये से आप
फैपरवेल दे सकत हैं ।

अरे मार रछा भी अपना रुपया आफिम म किसीका भी फैपरवेल
देन का मूड नहा है । नौबतराय बोले ।

स्टेना बाबू न बहा अरे ये तो अपनी मर्जी से जा रहे हैं चुनाव के
बाद बड़-बड़े यहा से बेआवरू होकर निकाले आएंगे तब फैपरवेल का
मूड बनाइएगा बाबू नौबतराय जी ।

ता क्या तुम समझत हा कि तुम्हारी भविष्यवाणी सत्य सिद्ध होगी ?'
मिश्र जी न बड़े रोव क साथ पूछा ।

स्टेना बाबू भी उमी तरह रोवीले शगम (कुछ-कुछ मुस्करात हुए
भी) बान मायबर आप कुलदीप कुलधेष्ठ की बात पर अविश्वास कर
रहे हैं । क्या आपको यह स्मरण नहीं है कि मैंने ही पहले वाल मुट्पमसी
का सत्ता पलटन की भविष्यवाणी सबसे पहले की थी तब आप ही की
तरह तान चार भविष्यवक्ताओं के कमण्डस मेरी भविष्यवाणी क विरुद्ध
निकल ॥ ।—'

नाइट सायल बाबू माताप्रसाद गदगद होकर बोले हम खूब याद
है कि डाक्टर साहब तब आपन भी उन पंडितों की लाजिक काटन म अपना
शास्त्राय दिखलाया था, बल्कि हमे अच्छी तरह याद है कि आपने य जो
प्रेजेण्ट चीफ मिनिस्टर हैं उनके आने की बात भी प्रडिक्ट कर दी थी ।

मानस महोदधि पंडित रामखिलावन मिश्र कुछ उछड़ी उछड़ी सी
अदा म बोले भई तुम्हारी वो भविष्यवाणी सही थी, हम याद है । मगर

हमारा भी यह ब्रह्मवाक्य आज की दिनांक में नोट कर लो स्टेनो बाबू कि इंदिरा कांग्रेस जीत भले ही जाए परंतु उसे बहुमत कदापि नहीं मिलेगा ।'

स्टेनो बाबू डा० कुलदीप, कुलश्रेष्ठ हंस, हाथ जोड़कर बोले ' अपना ब्रह्मवाक्य अभी रिजर्व रखिए, मिश्र जी, क्योंकि आप सब जगह दिसम्बर के अंत में इस अकिंचन कुलश्रेष्ठ की भविष्यवाणी को सत्य प्रतिफलित होत हुए देखेंगे । इंदिरा गांधी जितनी ही प्रबल मजारिटी से जीतेंगी जसी पिछली बार जनता जीती थी ।'

'अमा, कोठ नृप हाथ हम का हानी । हम तो वैसे क वैसे नाइट सायल बाबू ही बने रहेंगे । हा, यह हमारे इस्टेब्लिशमेंट बाबू कल से एच०ओ० के पी०ए०—'

"इस भ्रम में न रहिएगा बाबू माताप्रसाद, मैं बड़े रितायबिल सोस से पहले ही जान चुका हू कि कौन पी०ए० बनकर आ रहा है । मुझे तो खाली नोमीनल बाज लेना है । कल से दो चार रोज एच०ओ० की चिट्ठिया चिट्ठिया हमारे कुलश्रेष्ठ बाबू टाइप कर दिया करेंगे बाकी जब फिर पन्नालास आरेंगे तभी गुरसरन बाबू की जगह भरगी । मैं तो जो हू वही रहूंगा । अमा कौन क्या बनेगा क्या बिगड़ेगा इसकी चिन्ता क्यों करें, हुइये वही जा राम रचि राखा । क्या भई मिथ जी ?

मानस महोदय मिश्र जी ने बात का प्रसंग ही बदल दिया, कहा, ' शर्मा जी हम रोटरीवाला के यहां शंडो प्ले क साथ रामायण पाठ करेंगे । आप अवश्य देखन आइएगा । लखनऊ के कलाकार हैं उनके झण्डे बम्बई तक गये हुए हैं ।'

रामदीन चंपरासी के हाथों सारी चिट्ठिया और फाइलें यथास्थाना पर भिजवा कर गुरसरन बाबू ने अपनी सब खाली दराजें झडवाइ और उसके बाद दाहिने हाथ की दराज में नई फाइल रखकर और जेब से चालीस पैसे का एक छोटा-सा ताता निकालकर उस में दब डिया । उसकी बायीं बायें हाथ की सबसे नीचे वाली दराज में पीछे की ओर फेंक दी, फिर मुस्कराए घड़ी देखी चार बजकर पच्चीस मिनट हुए थे । सोचा, चले । पर जिस कमरे में, जिस कुर्सी मेज पर पिछले आठ-नौ वर्षों में उठने भल बुरे काम करत हुए अपने दिन बिताए हैं उससे उसे एकाएक छोड़ने को उनका जी नहीं चाह रहा था । एक जगह गुरसरन बाबू के मन में यह कष्ट भी था कि उनका विदाई समारोह नहीं हुआ । घर, न सही । उन्होंने

दफ्तर में एक ऐसा टाइम बम रख दिया है जो सम्भवतः बन-
ऐसा विस्फोट करेगा कि जच्छ अच्छे बिना विदाई समारोह व ही
विदा होने पर मजबूर होंगे। यह सोचकर उनका मन भीतर ही
जट्टहास कर उठा। उम्मी आह्लात में यह ध्यान भी आया कि सत
मिलकर 'आजकल' के रिपोटर का मसाला दना है। सतापी के रूप
फान किया और बतनाया कि वह आ रहे हैं। चला यह काम भ
लिया अब चतना चाहिए। चपरासी को आवाज दी रामदीन।

रामदीन सामने आ गया। गुरमरन बाबू ने अपना दफ्तर का गि
उठाकर अपनी काट की जेब में डालत हुए कहा, मुना, तुम्हारी क
शुक्र में मैं बहुत ही अच्छा मोट लगाकर चला हूँ तुमने मेरी बहुत सब
है।'

'अरे हज़ूर आप एस हाकिम बड़े भाग से ही आत हैं। क्या
साहिब इत आफिम वाला की नीचता कि आपको फेरबल पारटी भी

रामदीन के कंधे पर हाथ रखकर थपथपाते हुए अरे भैया छोटा
मह चकलस तुम शाम को हमारे यहाँ आना। खाना वही होगा समझे
बहुकर एक नज़र अपने कमरे की हर चीज़ पर डाली और तेज़ी से बा
निकल आए। दफ्तर वाला न उहें जात हुए देखा। मानस महोदधि मि
जो उस समय कमरे में नहीं थे बाकी लाग उह देखकर चिड़ीचुप हो गए
एक नाइट सायल बाबू ही चहक कर बोल उठ 'निकलना खुद से आद
का सुनत आए थे लेकिन बहुत वे जाबरू होकर तरे बूचे से हम निकल।

दरवाजे से निकलत हुए गुरमरन बाबू पलटकर मुस्कराए मन
कह रहे थे कल देखना वच्छू मैं वे आवर होकर निकला हूँ या तुम लौ
निकलोगे।

मुशी भगवानमहाय एक गाव के भार्तिक और एक बानी बंदा के पिता थे। उह अपनी बित मा की बड़ी लाइली बेटी गुलाब कुंवर के लिए उपयुक्त घर की तलाश थी। विरादरी न बड़े बड़े लोगों के पठ लिखे लड़के गाव की लासब म जब बानी बीबी को स्वीकार करने के लिए तयार नहीं हुए तब हारकर उहाने म्युनिमिपेलिटी म एक विभाग के सुपरिटेण्डेंट बाबू श्योसरन सास क इकलौते पुत्र गुरसरन बाबू का अपना दामाद बनान के लिए बच्चे डाले। दो बेटीया के ब्याह म श्योसरन बाबू पहले ही अपनी सिजारी की तली झाड़ चुक थे। इसलिए उहें साठ सत्तर हजार की वारिस बानी पतौदू का सास म कोई आपत्ति नहीं दिखनाई दी। किंतु गुरसरन की अम्मा की अपने इकलौते बच्चे क लिए बानी बहू पसंद न थी। गुरसरन बाबू की उम्र तब केवल सोलह बर थी। दसवें दर्जे म ही पठ रह थे मगर दुनियादारी के ज्ञान में बड़े आभिम फामिस थे। पिता से बाले, 'सासा, मेरे स्कूल के हेडमास्टर न भी अपनी एक आख पंखर की बनवाई है। चरमा लगा लेने पर मकली और असली आख म कोई भेद ही नहीं लिखनाई दता। अम्मा से कह दीजिए कि लड़की के बाप ने आपरेसन क बाबू आख ठीक करवाके ही ब्याहने का वचन दिया है।

बाबू श्योसरन ने बेटी का कतजे में लगा लिया, कहा, तू बका होन हार है, जरूर लखपती बनगा।

सन '39 में ब्याह हुआ, गुलाब कुंवर उह लक्ष्मी बनकर आई। 40 म हाईस्कूल पास किया। स्कूल छोड़ा, इयर-उपार सभी कुछ एक्की की नौकरिया सभी द्यूशन करत हुए ग्राइवेंट तरीक से इटर किया। उसी साल गोना हुआ। गुलाब कुंवर न अपने सवाभाव और भीठे व्यवहार से अपनी बानी आख की कतक अपनी सास क मन से निकाल दी। इटर करके समुर न कहा कि बेटी घाडा जमींदारी का काम भी समझ लो, आपे तुम्ह ही करना है। वह समझा और ग्राटर्हैंड-टाइपग्राफिंग भी सीखी। उहाने 42

क आदोलन म नेताआ की पकड़ा घबड़ी हिटलर मुसोलिनी की चर्चा, बढ़ती महगार्द और कीतना या फिल्मा क चस्का म न पढकर केवल अपने ही दा टका की कमाई का ध्यान किया—अपने मा-बाप को एक पोते का उपहार भी दिया। यह गुलाब कुवर पर और गुलाब कुवर इनपर हज़ार जान स रीझ रहे। तभी एक दिन श्योसरन बाबू ने अपने लायक पूत से कहा 'बेटा हमार हैल्य डिपाट मे एक नाइट सायल क्लक की जगह खाली होने खाली है तू उसम बठ जा। तनखाह ज़फ़र पच्चीस रुपये ही है पर काम ऐसा है कि सधमी मया दोड़कर आती है। राधेलाल न कम म-कम बीस-बाईस हज़ार रुपया बनाया है। एक बार तू इस डिपाटमट म घुस भर गया तो समझ ले कि मरी उमर पाने तक तू लाखा म खलने लगेगा। अभी दो वष मेरे रिटायरमट मचाकी है। बठ जाएगा तो मुझे भी तुझे जागे बटाने म कुछ मौक हाथलग जाएग। पढाई सात्ती मे क्या रखा है। अच्छे अच्छे एम०ए० बी०ए० मारे मारे फिर रहे है।

गुरसरन न अपने पिता क चरन छुए और कहा, लाला, मैं आपको और अम्मा का बुढ़ापे म हर तरह स सुखी बनाना चाहता हू। पढाई से सिफ डिग्री हासिल हागी और आप दोनों की सेवा करने स मेरा यह लोक और बह लोक दानो ही बन जाएग।

बेटे को साखी आशीर्ष देकर बाबू श्योसरन ने पढाई छुड़वाकर गुरसरन का अपने यहां नाइट सायल क्लक बनवाया। यह सन 1945 की बात है।

और आज 13 सितम्बर 80 के दिन नौकरी के सारे पापड़ बेलकर लगभग ठाई-तीन लाख की सम्पत्ति आठ बटे बंटिया और उनके परिवारा स सुखी जीवन बिनाते हुए व नौकरी स रिटायर हुए है। दफ्तर म बहुतो के लिए यमदूत और अपन तथा हाकिमो क लिए सफल सधमीबाहक बनकर व आज दफ्तर से विदा होकर रिक्शे पर बठ रह है। दा-तीन बरस का एकस टेंशन मिल जाता 58 पर रिटायर होते तो कुछ और लाभ होता। घर सतसाइ बाजा जा सोचत है वह भल के लिए ही सोचते हैं और उनके मन मे यह सताप क्या कम है कि चलत चलात अपने कट्टर दुश्मन हैल्य अफसर डा० गायल और उसके खास खास चमचो के विरुद्ध ऐसा टाइमबम बनाकर रख आए हैं कि कल परसा मे जब ज़ारदार घडाका होगा तब दुष्टो की समझ म जायेगा कि बाबू गुरसरन साक्ष क्या हस्ती है।

अपने तीसरे पुत्र सतीषीप्रसाद उफ छुटकनू के कार्यालय की ओर जाते

हुए गुरमर्न बाबू अपनी महिमा में आप ही फूले हुए थे। उन्हें अपने रिटायर होने का तनिक भी गम नहीं। दा-दा मवान हैं, काठिया हैं, दूनाई हैं। बेटे बेटियाँ में उक्कण हो ही चुक हैं। कम एक चौथी बटी को लेकर ही मन में तीखा कचाटें उठा करती है। उसकी समुराल वाला न, खास कर पति न ही गुरमर्न बाबू का अधिक-से अधिक पसा खाचने के लोभ में दुख दे-दकर उसे जलाकर मार डाला। पिछने माल भर से गुरमर्न बाबू उनसे मुकदमा लड़ रहे हैं और अपनी स्वर्गीय बेटों की चिट्ठियाँ स तथा उसकी समुराल के पास पठासियाँ स जस प्रमाण इकट्ठ कर लिए हैं उससे यह आशा है कि वे मुकदमा जीत जाएंगे। हालाँकि दुष्ट समझी और दामाँ भी कम शांतिर नहीं हैं। उन्होंने भी अपने बचाव के लिए कई मोर्चे बड़ी सावधानी से सभाल रखे हैं।

दूमरा गम उन्हें अपने सबसे छोटे चौगीस वर्षीय बेटे चि० सतसाइ प्रसाद उर्फ विल्लू की ओर स है। एम०ए० पास कर चुका है एल०एल०बी० में दाखिला ले रखा है और प्रायः हर काम बापकी मर्जी के खिलाफ ही करता रहता है। यहाँ स लेकर राजधानी तक के छात्रा का नेता है। पूजीपतिमा और अपसरशाही के खिलाफ उसकी सलवार सदा तनी ही रहती है। कई अखबारों में रिपोर्टिंग भी करता है। अब ता घर में भी नहीं रहता है। एक अलग कमरा स रखा है। अपनी माँ के कारण ही जब-तब दो चार दिन आकर रह लेता है। बाप स एक पसा भी सर की इच्छा नहीं रखता। उसकी लाकप्रियता गुरमर्न बाबू को सदा डराती रहती है। समुरा नालायक ही सही पर बड़ा ता अपना हाँ है।

सतसाइ उर्फ विल्लू स गुरमर्न बाबू जितने ही असंतुष्ट हैं उतने ही उसके मझते बड़े भाई सतापीप्रसाद उर्फ छुटकनू स प्रसन्न भी हैं। यह बेटा उनक चारों बेटों में सबसे अधिक कमाऊ पूत निकला। यही बेटा एक दिन कराडपति बनकर उनक कनेजे का शीतल करवा।

गुरमर्न बाबू के तीसरे बेटे सतापीप्रसाद का एक्सपाट इम्पार्ट टूडस कार्यालय चौक सर्राफें स लगभग तीन फ्लॉर दूर शेषनाग माग पर स्थित है। इस दफ्तर स नूँकि डेड बितामीटर दूर दूसरी शताब्दी ईस्वी का एक शेषनाग मन्दिर अभी आठ वर्ष ही पहले पुरातत्व विभाग न उदघाटित किया है इसलिए उस माग का महत्व भी बढ़ गया है। वहाँ एक बड़ी सी बावली निकली है जिसक तीन छह अब भी शेष है। बावली के ऊपर बनी हुई मजिनें सयोग स इस तरह ध्वस्त हुईं या कि बावली क नल में बनी हुई शेषनाग की भव्य मूर्ति टूटने में प्रायः बच ही गई। केवल बायें भाग के

वे आदोलन में नेनाआ की पकड़ा घबड़ी, हिटलर मुसोलिनी की चर्चा, बढ़ती महगाई और कीतना या फिल्मों के चस्को में न पड़कर केवल अपने ही दा टका की कमाई का ध्यान किया—अपन मा-बाप को एक पोत का उपहार भी दिया। यह गुनाब कुवर पर और गुलाब कुवर इनपर हजार जान भरावे रहे। तभी एक दिन श्यासरन बाबू ने अपने लायक पुत्र से कहा, 'बेटा हमारा हेल्थ डिपार्टमेंट में एक नाइट सायल क्लक की जगह खाली होने वाली है तू उसमें बैठ जा। तनवाह खरूर पच्चीस रुपये ही है पर काम ऐसा है कि लक्ष्मी मया दौड़कर आती है। राधेलास न कम से-कम बीस-वाइस हजार रुपया बनाया है। एक बार तू इस डिपार्टमेंट में घुस भर गया तो समझ ल कि मरी उमर पान तक तू साखा में खेलने लगेगा। अभी दो वष मेरे रिटायरमेंट भवाकी है। बैठ जाएगा तो मुझे भी तुझे आग बढ़ाने में कुछ मौक हासिलग आएंगे। पत्नी साखी में क्या रखा है। अच्छ-अच्छे एम०ए० बी०ए० मारे मारे फिर रह हैं।

गुरसरन ने अपने पिता के धन छे और कहा साला मैं आपको और अम्मा का बुढ़ापे में हर तरह से सुखी बनाता चाहता हूँ। पढ़ाई से सिर्फ डिग्री हासिल हागी और आप दोनों की सेवा करने से मेरा यह लोक और यह लोक दोनों ही बन जाएंगे।

बेटे का साखी आशीर्ष दकर बाबू श्यासरन ने पढ़ाई छुड़वाकर गुरसरन को अपन यहा नाइट सायल क्लक बनवाया। यह सन 1945 की बात है।

और आज 13 सितम्बर 80 के दिन नौकरी के सारे पापड बेलकर लगभग ढाई-तीन लाख की सम्पत्ति आठ बेटे-बेटिया और उनके परिवारों से सुखी जीवन बिताते हुए व नौकरी से रिटायर हुए हैं। दफ्तर में बहुतों के लिए यमदूत और अपने तथा हाकिमों के लिए सफल लक्ष्मीवाहक बनकर व आज दफ्तर से विदा होकर रिक्शों पर बैठ रहे हैं। दा-तीन बरस का एकस टेंशन मिल जाता 58 पर रिटायर हाते तो कुछ और लाभ होता। खर, सतसाइ बाबा जो साचते हैं वह भले के लिए ही सोचते हैं और उनके मन में यह सताप क्या कम है कि चलते-चलाते अपन कट्टर दुश्मन हेल्थ अपसर डा० गायन और उसके आस पास धमका के विरुद्ध ऐसा टाइमबम बनाकर रख आए हैं कि कल परमा में जब जोरदार घड़ावा होगा तब दुष्टों की समझ में आएगा कि बाबू गुरसरन साल क्या हस्ती है।

अपने तीसरे पुत्र सतोपीप्रसाद उर्फ छुटकनू के कार्यालय की ओर जाते

हुए गुरसरन बाबू अपना महिमा स आप ही फूने हुए थे। उन्हें अपने रिटायर होन का तनिक भी गम नहीं। दोन्दा मकान हैं बोठिया हैं दूकानें हैं। बेटे-बेटिया स उच्छ्रण हा ही चुके हैं। वस एक चौथी बेटो को लेकर ही मन म तीपी बचाटे उठा करती हैं। उसकी समुराल वाला न, घास करव पति न हो गुरसरन बाबू का अधिक-से अधिक पसा खींचने क सोभ म दुग दे-देकर उसे जलाकर मार डाला। पिछने मान भर मे गुरसरन बाबू उनमे मुबदमा लड रहे हैं और अपनी स्वर्गीय बेटो को चिटिठपा म तथा उमकी समुराल के पास पडासियों स जस प्रमाण इकट्ठे कर लिए हैं उसस यह आशा है कि क मुबदमा जीत जाएग। हालांकि दुल् समधी और दामाद भी कम शांतिर नहीं हैं। उहनि भी अपने बचाव के लिए कई मोर्चे बडी सावधानी स सभाल रख हैं।

दूमरा गम उह अपने सबसे छोट चौरीस वर्षीय बेटे बि० सतसाइ प्रसाद उफ बिरलू की ओर स है। एम० ए० पास कर चुका है एल० एल० बी० म दाखिला ले रखा है और प्राय हरजाम बापरी मर्जी के खिलाफ हो करता रहता है। यहा स लेकर राजधानी तक के छात्रा का नता है। पूजोपतिपा और अफमरशाही के खिलाफ उसकी सतवार सदा तनी ही रहनी है। कई अखबार म रिपोर्टिंग भी करता है। जब ता घर म भी नहीं रहता है। एक अलग कमरा ल रखा है। अपनी मा के कारण ही जब-सय गो मार दिन भाकर रह लेता है। घास से एक पसा भी सने की इच्छा नहीं रखता। उसकी सावप्रियता गुरसरन बाबू का सदा डराती रहती है। समुरा मानायक ही सही पर बेटा तो अपना ही है।

सतसाइ उफ बिरलू से गुरसरन बाबू जितन ही असतुष्ट हैं उतने ही उसक मसले बडे भाई सतोपीप्रसाद उफ छुटकनू स प्रसन भी हैं। यह बटा उनके चारा बेटो म सबम अधिक बमाळ पूल निकला। यही बटा एक दिन कराइपति बनकर उनक कनेजे का शीतल करया।

गुरसरन बाबू क तीसरे बेटे सतोपीप्रसाद का 'एक्सपाट इम्पोर्ट ट्रेड्स' कायालय चीक सर्राफे स लगभग तीन फलीग दूर शेपनाग माग पर स्थित है। इस दफतर स चुंकि डेढ किलोमीटर दूर दूसरी शताब्दी ईस्वी का एक शेपनाग मंदिर अभी जाठ बप ही पहल पुरातत्त्व विभाग न उदघाटित किया है इसलिए उम माग का महत्त्व भी कम गया है। वहा एक बडी सी बावली निकली है जिसके तीन छह अब भी शप हैं। बावली के ऊपर बनी हुई मजिले सयाग स दम तरह ध्वस्त हुई था कि बावली के तल म बनी हुई शेपनाग की मव्य मूर्ति टूटन से प्राय बच ही गई। केवल बायें भाग के

वइ फनो वाला हिस्सा टूट गया है। इसी शेषनाग के टीले की खुदाई से सतापीप्रसाद का भाग्य चमका पुरानी मूर्तिया के घघे म बरबस ही नियति न धकल दिया। मूर्तिया के घघे के बहान स्मर्गलिंग के घघे स जान पहचान हुइ फिर मूर्तिया के अलावा सोने की तस्करी स भी घनिष्टता जुटी। पिछन छ वर्षों म सतापी बाबू प द्रह बीम बार हागकाग हा आए हैं। जापान और अमरीका भा तीन चार बार घूम चुके है। शेषनाग के टीले की तरफ ही जान म रायबहादुर प्रभुदयाल की कोठा थी जिसे उहान कभी अपन जामा भवन क रूप म ही बनबाया हागा। उसी कोठी म सतापी के एक्सपान्ड इम्पोट टेडस का आफिस है। पुरानी ढग की बस्तुए हिंदुस्तानी ढग के सोने चादी के ऐस आभूषण जा विदशी सला निया को आकृष्ट कर सकें भारतीय पोशाकें कालीन आडफानूस पुरानी तस्वीरें आदि सामान जलग जलग कमरा म सजा हुआ है। पीछे क हिस्से म पहल बार भी बा और अब जनता राज म केवल उपहार गह है। इसी तरफ का कमरा म सतापीप्रसाद का दफतर है। एक मे स्वय बठते हैं दूसरे म उनके दो भाई और एक स्नेहा।

गुरसरन बाबू का रिक्श म आया देखकर दरवाजे पर खटे गारखा चौकीदार न उ ह तनकर सनाम किया और फाटक खोल दिया। गुरसरन बाबू का रिक्शा कोठी के पिछवाड़े तक चला गया। सतापी अपन आफिस के बाहरी बरामदे म निकल आया था।

पम आप न दीजिएगा पापा मेरा आदमी इसी पर आजकल प्रेस चला जाएगा सब पेमेंट एक साथ कर देंगे। पिता को साथ लेकर क्लर्कों वाल कमरे मे गया। एक बाबू को कही जान और कुछ करन के जाणेश दिए फिर पिता के साथ अपन आफिस मे प्रवेश किया।

बेने क दफतर म घुसते ही गुरसरन बाबू का गब हुआ। पालिका क प्रशासक का कार्यालय भी इतना भय नहा है। चीनी जापानी और भारतीय शली क चार बड़े बड़े चित्र दीवारा पर टग हुए थ पूरे कमरे म कालीन बिछी थी जति उत्तम फर्नीचर से कमरा चमचमा रहा था। गुरसरन बाबू न बठते हुए कहा भइ प्रशासक क आडर वाला कागज लाना मैं न मुतासिब नहा समझा। दफतर तो जाना नही था, कागज फाइल मे पहुचता कसे ?

ठीक है पापा मेरे पास बाकी कागजा की फोटोस्टट कापिया है ही एक न सही। ओरिजनल लटस भी रखे है और उनके ब्लाक भी बन मेरा

आदमी नन ही जा रहा है। कहिए ता चक्करपानी चौक का अभी ही -
बुलवा लू।

“हा बेटे मैं दरअसल उसीक लिए मीघे तुम्हारा पान आया हूँ” बोलि
आज तो सब पूछा तो मैं अपने उबूल के खिलाफ दफतर से आधा घण्टा
पहल ही चला जाया। यह ब्लाक मैंने इमीलिए तुमसे तयार करवाना को
कहा था कि वह तुम्हारा चक्करपानी यहा बठकर मेर मामन ही रिपोर्ट
लिखे और उन ब्लाक के साथ आज रात ही छप जाए। मरी यह आज
बाली फाइल बन दफनर म छुलन म पहुन ही नगर म तहसबा मच जाना
चाहिए।

‘रू द प्वांट काम होना पापा आप निश्चित रह। मैं चक्करपानी
को अभी बुलाता हूँ’ बठे-बठे ही घण्टी बजाई, चपरानी आया, उसम
अपनी देबुल का फोन साफे क पास मगवाकर रखा और कहा “आपरेटर
से कह दो आजकल क रिपार्टर चक्करपानि जी से लाइन मिला दो।’ दो
मिन टके बाद हा चौक चक्करपानि टेलीफोन लाइन पर आ गए। सतोपी ने
कहा ‘मैं गाड़ी भेज रहा हूँ चौके ओ, तुरत चले आइए हा घड़ी बलि
अपने ग्लास डिपाटमण्ट म यह भी कह आइएगा कि मेरा आमी उह
लेन के लिए यहा स चल पडा है। आप फौरन स केशर आइए। हा-हा भई,
बढिया चाय पिनवाऊगा। टेलीफोन रख दिया और पिता म पूछा पापा
आपक लिए नाश्ता अभी मगवाऊ या।’

‘अभी ता खाली एन प्याला चाय ही मगवा दो।’ फिर घण्टी पर
उगला पड़ी, फिर चपरानी आया और उसे आदश देन के बाद ही बाप बेट
मे बातें शुरू हुन। सतोपी ने कहा आपका ये हेल्थ डिपाटमण्ट का
संसेशन बबलू के इलकशन को चमका दगा। बबलू उर्फ कुरर उत्तमसिंह
इंदिरा काग्रस क उम्मीदवार थ और सतोपी उनक चुनाव आदानन का
विधायता था। सतोपीप्रमाद अपन सेज का प्रसिद्ध युवा नेता था। राजनीति
का आड म उसके घाघे बडी मफलतापूर्वक चलत रहते हैं। सतोपी बोला
‘मैंन गिम्ना विभाग की भी एक जवरदस्त पाल पकडी है।’

‘क्या?’

‘रामश्वर मोनयलिया ने जित जगह अपना हाटल बनवाया है न,
वह पिछने गवनर के राज म गवनमण्ट ने वास्तु त्रीटासन बनवान के लिए
एक्वामर को थो, आपका अनुकरण करत हुए मैंने भी मोनयलिया और
डिप्ती एजूकेशन सेनेट्री के दो सदन और शुभार्नासह एम० एल० ए० का

बिखरे तिनके

एक सिफारशी पत्र एक हजार रुपये में खरीदे हैं। उनके ब्लाक्स भी आप वाले ब्लाक्स के साथ ही तयार करवाए हैं। कल स्थानीय म्युनिसिपलिटि की खबर और परसा शिक्षा विभाग का यह भ्रष्टाचार आजकल में प्रकाशित होगा। भरे आदमी पी० डब्लू० डी० और सिंचाई विभाग से भी कुछ इम्पेक्ट डेक्लेरेशन जल्दी ही लाने वाला है।

चक्रपाणि जाए। इस कस्बे में अनूठ रत्न हैं। जहाँ सुदृढ़ न समाधि बहा पावडा चलाने की कला में बड़े ही निपुण है। दैनिक 'आजकल' में आजकल काम करत है कवि हैं सन 42 में जेल भी गए थे इसलिए कुछ नेतागिरी भी कर लत है। आजकल का प्रकाशन एक तरह से कहा जाए तो इन्हीं की प्रेरणा से आरम्भ हुआ था। हुआ यह कि अपने कस्बे के ही और अब कलकत्ता में रहने वाले एक सफल उद्योगपति का यह प्रेरणा देने में सफल हुआ कि उन्हें अपने कस्बे से भी कोई अखबार निकालना चाहिए। उद्योगपति महोदय का उद्योग के रूप में ही यह बात पसंद आई थी। यह कस्बा प्रदेश की राजधानी से लगभग बीस किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। एक तरह से यह कहना चाहिए कि यह कस्बा राजधानी का ही एक उपनगर है। राजमार्ग कबल आधे घण्टे के फासल पर दोना को जोड़ देता है। यह सुविधा विचार कर उद्योगपति महोदय ने इस कस्बे में एक बहुत बड़ी जमीन खरीद ली। कलकत्ते के एक साधनविहीन उग्र राष्ट्रवादी का प्रेस और मुशिदावाद में बंद पड़ी हुई दो पुरानी मशीनें खरीद कर वहाँ फिट करवा दी। दफ्तर बड़ सुनियोजित ढंग से चला। 'आजकल' पत्र भी लगभग उसी समय से प्रकाशित होता शुरू हुआ जबकि दूसरे महायुद्ध के बाद बड़े-बड़े कांग्रेसी नेता जेल से छूटे थे। देश में एक बार फिर राष्ट्रीय उमर्गों की ताजा बहार आई थी। इस तरह चक्रपाणि की कल्पना से प्रसूत आजकल निकला तो सही लेकिन उसका सम्पादक और सम्पादकीय विभाग में चक्रपाणि जी का वही स्थान न था। उनके लिए मालिक ने एक सम्मानजनक वेतनराशि और रिपोटर का जाहूदा दे दिया था। अपने कस्बे और आसपास के गांवों में हान वाली हर तरह की खबरों के यही मालिक थे। पहले अखबार मालिक ने इन्हें साइकिल दी थी और अब तीन चार वर्षों से स्कूटर दिला दिया है। इस छोटे से नगर की राजनीतिक उठा-पटक में बड़ा सक्रिय भाग लिया करते हैं। इसी अखबारी शक्ति पर चक्रपाणि जी अपने यहाँ के बड़-बड़ आदतिये दूकानदार और मामत बग के लागा के बड़े काम आते हैं। उनकी आयु भी अब लगभग साठ के पास पहुँच

सफारशी पत्र एक हजार रुपये में खरीद है। उनके ब्लाक्स भी आप ब्लाक्स के साथ ही तयार करवाए हैं। कल स्थानीय म्युनिसिपलिटि वर और परमा शिक्षा विभाग का यह ध्रष्टाचार आजकल में शत होगा। मरे आदमी पी० डलू० डी० जी० सिंचाई विभाग से भी इम्पेन्ट डाक्यूमेण्ट्स जल्दी ही लाने वाले हैं।

चक्रपाणि आए। 'स कस्वे के अनूठे रत्न है। जहाँ मुझ न समाय वहाँ चले जाने की कला में बड़े ही निपुण है। दैनिक आजकल में आजकल करते हैं कवि है सन 42 में जेन भी गण थ इसलिए कुछ नेतागिरी पर लत हैं। 'आजकल' का प्रकाशन एक तरह से कहा जाए तो इन्हीं रणों से जारम्भ हुआ था। हुआ यह कि अपने कस्वे के ही और अब ते में रहने वाला एक सफल उद्योगपति को यह प्रेरणा देने में सफल है कि उन्हें अपने कस्वे से भी कोई अखबार निकालना चाहिए। उद्योग महादम को उद्योग के रूप में ही यह बात पसंद आई थी। यह कस्बा की राजधानी से लगभग बीस किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। तरह से यह कहना चाहिए कि यह कस्बा राजधानी का ही एक उप है। राजमाग जबल आधे घण्टे के फासने पर दोनों को जोड़ देता है। विधा विचार कर उद्योगपति महादम ने इस कस्बे में एक बहुत बड़ी न खरीद ली। कलकत्ते के एक साधनविहीन उग्र राष्ट्रवादी का प्रेस, मुशिदाबाद में बंद पड़ी हुई दापुरानी मशीनें खरीद कर यहाँ फिट दी। दफ्तर बड़ा सुनियोजित ढंग से चला। 'आजकल' पत्र भी उसी समय से प्रकाशित होना शुरू हुआ जबकि दूसरे महायुद्ध के बड़े-बड़े कापसी नेता जेल से छूटे थे। देश में एक बार फिर राष्ट्रीय की ताजा बहार आई थी। इस तरह चक्रपाणि की कल्पना से प्रसूत कल निकला तो सही लेकिन 'उसके सम्पादक और सम्पादकीय में चक्रपाणि जी का वही स्थान न था। उनके लिए मालिक ने सम्मानजनक बतनराशि और रिपाटन का आह्वा दे दिया था। अपने और आसपास के गाँवों में होने वाली हर तरह की खबरों का यही कवि थे। पहले जबकि मालिक न इतना साइकिल दो थी और अब तीन वर्षों से स्कूटर दिला दिया है। इस छोटे से नगर की राजनीतिक पटक में बड़ा सक्रिय भाग लिया कर रहे हैं इसी अखबारी शक्ति पर चक्रपाणि जी अपने यहाँ के बड़े-बड़े जातिय दूकानदार और सामंत वर्ग के बड़े काम आते हैं। उनकी आयु भी अब लगभग साठ के पास पहुँच

चुकी है लेकिन हराम की खा-खाकर भाल बूद बन हुए हैं।

जब चन्नपाणि जी आए ता गुरसरन बाबू ने झुक के उनके घुटन छए मगर सतोपी ने अपनी कुर्मी पर बैठे-बैठे ही पालामी गुरुजी' कहकर अपना कत्तव्य निभा दिया। बैठे ही गुरसरन बाबू से बोले, 'आपके ब्लाक के प्रूफ मैं उठवा लाया हू। यह देखिये।' अपन ग्रीफनेस से निकालकर प्रूफ उनके हाथ में लिए फिर सतोपीप्रसाद से बोले, "आपके ब्लाक में न मब अपने सामने पक करवा के ब्लाक डिपाट के मनजर की मज पर रखवा दिए हैं और यह देखिए एजुकेशन मिनिस्ट्री वाले कागजों के प्रूफ य हैं।' उठकर सतोपी बाबू को उनसे संबंधित प्रूफ दिए।

पिता-पुत्र दोनों सन्तुष्ट हुए। दोनों की आँखों में अपनी सफलता की घूत बनिया चमक उठा। सतोपी बोला, 'पापा, आप उनको अपन प्वाइण्टस नाट करा दीजिए। मैंने अपन कंस का डाफ्ट बनवाकर टाइप होना क लिए दे दिया है। चक्कर मुरु, तुम उसीको अपनी भापा में जरा जोरदार नमक मिच लगाकर इन ब्लाकों के साथ छाप देना। मैं अब जाऊंगा।'

'बाह अभी कैसे, पहले इस ब्राह्मण का सन्तुष्ट तो करो, तब जाने पाओगे।'

'अरे गुरु तुम्हारे लिए मैंने पहले ही से आइड दे रखा है। भग की कचौड़िया बनवाई हैं मगर पहले तुम लिख लो तब।'।'

'यह सब जानबाजी हमसे न चलेगी। पहले जनपान करेंगे तब लिखने लिखाने की बात माचेंगे।'

'अच्छा भाई, पण्डित देवता की पेट-भूजा ही पहले करवाए दते हैं। पापा, आप भी खाइएगा एकाध भाग की कचौड़ी।'।'

'नई बाबा मुझे तो नाम सुनकर ही नशा आ जाता है।'

चन्नपाणि बोले बाबू जी जरा बिल्सू का अपने बाबू में रखिए, किन्ती दिा उसके कारण आपको कोई बरारा आघात भी लग सकता है। मैं पहले मैं ही चेतावनी दिए दता हू।'

सुनकर गुरसरन बाबू चुप हो रहे।

सतोपी एक ठण्डी सास भरकर बोले, 'पापा बेचारे क्या करें। वह घर में रहता ही नहीं। हम लोग से कोई खास मतलब उमका है नहीं। अपनी मर्जी का मालिक है भाई और क्या कह सकता हू।'

आज दोपहर में उसने जानते हैं चुनौती से क्या कहा है। कहा है कि भाला तुम्हारे गोदाम पर आठों पहर मरी मबर है। तुम जनता को

खुनेआम नहीं बेचते हो तो हम तुम्ह उस माल को कही भी नहीं बेचन देंगे। रात बिरात भी माल निकालकर ले जाना चाहोगे तो तुम्हारे आदमियों का हमारी गालिया का सामना करना पड़ेगा। अब भला बताइए अपन पिता की उमर कें पुरुष सें और बट भी ऐसा घमप्राण व्यक्ति, गो-ब्राह्मण प्रति पालक, तिस पर हमारे सचालक जी का सगा मौसरा भाई। उहाने पुलिस म रिपोर्ट करा दी है। हमारे यहां भी छपने आई है। अब भला बताइए एक तरफ मैं सतापी बाबू का अपना परम मित्र समझता हू दूसरी तरफ आपके प्रति भर मन म इतना आत्तर भाव है अगर छापू तो बुरा न छापू तो बुरा। मरी तो दोना ही टागें उयाडी हो रही हैं। बताइए कदाकद ?

गुरसरन लाल बोले आप छापिए हम कोई दुख नहीं होगा। अधिक स अधिक आप मरी जार स इतना इस्टिमेट जोड सकते हैं कि बिल्लू स मेरा या मेरे किसी हमारे बटे का कोई सम्बन्ध नहीं रहा बल्कि पिछल आठ दस महीना से वह घर रहता भी नहीं है। हा कभी-कभी अपनी मा से मिलने आ जाया करता है।

सतोपी बोला, नहा पापा की तरफ से कोई वक्तव्य नहा जाएगा।

क्या ? चन्द्रपाणि की ल्यौरिया खड़ी।

क्याकि उसकी एक्टिविटीज बबलू के इनक्शन म सहायक भी है।

मैं इस समय उस नहीं छडना चाहता।

‘मगर चुनी हमारे मालिक का

मालिक का नमक भले जदा करो मगर बिल्लू का बचाकर। वसे बिल्लू मरी या बबलू की पकड म भी नहीं आ रहा है पर उसका यह एक्शन हमारे पक्ष मे है।

गुरसरन बाबू चुपचाप सुनत रहे फिर चन्द्रपाणि की जाघ पर थपकी देकर कहा, ‘पण्डित जी आप तो जानते हामे कि जब द्रौपदी स्वयवर मे तौर चलाने स पहल श्रीकृष्ण भगवान का ध्यान किया तो उहाने अजुन स कहा कि हे अजुन, तू इस समय मेरा ध्यान भी मत कर सिफ नाचती हुई मछली की आख को ध्यान म रख। सो पण्डित जी मैं तो सामन के काम म ही अपना ध्यान रखता हू। यह फाइल जा मेहनत स बनाकर मैं तयार करके रख आया हू वह गायब न हा जाए। कस सबेर अखवार मे यह खबर छप गई ता फिर गोयल को फसना ही पडया। अभी ता मुझ सिफ उसीका ध्यान

बिखरे तिनक

है। बिल्लू अपने कामों का जो फल पाये सो पाये, मैं भला क्या कर सकता हूँ। बाकी जो अभी छुटकानू न कहा है, उस भी ध्यान में रखना।”

गुरसरन बाबू केवल अपने जीवनाद्दश्य की चिन्ता कर रहे थे। उन्हें और कोई चिन्ता नहीं थी।

तीन

चार-पाच बरस पहले अहीर के बेटे सुहागी और करमू हरिजन की बेटा बेटो की आँखें लड़ गई थी। दोनों जवान अरमाना भरे जिले वाले। हरमुख और सुहागी बचपन से साथ खेल पढ़ और सजातीय भी थे। बाद में हरमुख तो कासेज और यूनीवर्सिटी तक पहुँच गया था लेकिन सुहागी ने पहलवानी और घरे की भैसे चराने में ही एम० ए० पास किया। सुहागी ने ही अपने प्रेम-बाण की चर्चा हरमुख से की थी और उपाय पूछा था।

हरमुख बोला अमा तो परेशानी क्या है? दोनों जने ब्याह कर लो। दोनों ही बालिग हो।

बप्पा मार डालेंगे।

मरने से डरते हो तो छोड़ो साली को। सला न मही शीरी सही।'

लिलगी की बात नहीं हरमुख, मरा मन बावला हो रहा है। सरसुतिपा हमसे कहती थी कि वही भाग चलें। हमने कहा भाग तो चलें पर ध्यान क्या। अरे जब फिरम करेंगे तो लौंठे बच्चे तो होएंगे ही समुरे। क्या झूठ कहता हूँ?

हरमुख बोला यार बात तो तुम्हारी सही है लेकिन हमारी सलाह तो यही है कि तुम दोनों ब्याह कर लो। अब तो साले ऊँची ऊँची जाती वाले भी अंतर्जातीय ब्याह करते हैं।

सुहागी ठण्डी सास भरकर बोना करते ता हैं। हमारी बिरादरी में ही लल्लू बकील ने मुसलमानी का हिंदू बना के ब्याह किया। कोई साला नहीं बोला न हिंदू न मुसलमान—क्योंकि मल्लू अब पस वाला की बिरादरी का हो गया है न। हम तो समुर गरीबा की बिरादरी के हैं न। और फिर लल्लू तो रहते हैं राजधानी में। उसकी बीबी भा बकीलन है। शहर में तो सब चल जाता है मगर अभी गाँव में यह बात दूर-दूर तक

पहुँच जाएगी।”

हरसुख ऊँचकर बोला ‘तब भई हम तुमका क्या सलाह दे सकते हैं या बिरानरी से दर लो या प्रेम कर लो। हा तुम्हारा यह सब मेरे दिल में जम गया है कि अब भारत में सिर्फ दो ही जातियाँ रह गई हैं—एक अमीर एक गरीब। (कुछ साँचकर) सुनो सुहागी, आज शाम को सात-साढ़े सात बजे तुम बिल्लू के यहाँ आ जाओ।”

‘गुरसरन बाबू के घर?’

‘नहीं यार बिल्लू अब अपने घर में रहता कहा है। नेताजी सुभाष भाग जानते हो न?’

‘जानता हूँ।’

‘वहाँ तरकारी वाला की दुकान के बाँध आ चरही पड़ती है। चरही लटक के बाँधे हाथ है उसका ठीक सामने ही जो गला है।’

‘पकड़ियाँ टोल वाली?’

‘हाँ बेटे तुम ठीक पहुँच गए। जहाँ पकड़ियाँ का पेड़ है। उनके ठीक सामने ही परभूतली की दुकान के ऊपर बिल्लू बाबू का कमरा है। शाम का हम लोग सब वही जुटते हैं। कोई न कोई रास्ता निकाल ही लेंगे पट्टे। सला मजदूर का ब्याह हो जाएगा।’

रात को बिल्लू के यहाँ जुड़ने वाली मित्र मण्डली ने यह सब बियाँ कि सरसुतिया को गाँजे-बाँजे के साथ सुहागी की सौभाग्यवती बनाया जाएगा। चौहान बोला, ‘तुम लोगो को शायद एक बात नहीं मालूम मगर यह हरसुख जानता है कि सरसुतिया की मन्तर ठाकुर रिपुदमन सिंह की बील वेड है और यह लडकी भी शायद रिपुदमन सिंह की ही है।’

बिल्लू हसकर बोला ‘तब फिर क्या है यार रिपुदमन सिंह सही कहें कि बेटा आओ तुम्हीं क-या-नान करो।’

सब लोग हम पडे। सुहागी बोला, ‘बाबू आप जानते नहीं हैं। बटारीपुर के यह सारे हरिजन ठाकुर रिपुदमन सिंह के बच्चे में हैं और सुराज हो जान के बाद भी उनकी मर्जों के बिनाफ यहाँ के किसी पट्टे का एक पत्ता सब नहीं हिन पाता। पूछा हरसुख स।’

हरसुख वाला लखन पासी, बल्लू माझी और छिदा अहीर के गिरोह उत्तीन पाल रहे हैं। रिपुदमन के दामाद आखिर मंत्री बिम बून पर बन हैं।

बिल्लू ताब छा गया, ‘झाड़ू मारो साने मंत्री और इन तीनों शातिर

ठाकुरा को। मैं कहता हूँ कि हमारी स्टूडेंट कम्युनिटी अगर एकजुट हो जाए तो मैं सुहागी और सरसुतिया का ब्याह करा दूँगा।'

चौहान न कहा। हमारी विद्यार्थियों की संस्थाएँ भी अब सब की सब किसी न किसी पोलिटिकल पार्टी की रखलें बन गई हैं। इन बईमांगों के बल पर क्या तुम रिपुदमन के इन तीन शांतिर ठाकुरा से सुहागी की बचा सकते हो।'

अब्दुल सत्तार ने अपनी सिगरेट ताब में एकाएक धाय की खाली तण्टरी में दबा कर बुझा दी और बोला। 'तुम इनकी शादी का इन्तजाम करो जी हमारे यहाँ और राजधानी के दा-तौन होस्टल में भी गुण्डों का काम नहीं। बिल्लू अगर उन्हें ताब पर चढ़ा दे तो हम साथ लड़ने बल्लू और छिद्दा तीनों सालों के गिरोहों के छक्के छुड़ा सकते हैं।'

तुम शादी का ज़रेंजमेंट कराओ जी मैं पाब पाच रुपया कांदा हर एक से कोसट कर लने का वादा करता हूँ। सब-भरिज में हम साले मंगल मन काम न आएंगे तो क्या बूढ़ खुर्रट काम आएंगे। चौहान बड़े ताब से बोला।

सुहागी चुपचाप बठा सुन रहा था अब बोला, 'सादी के लिए तो पचास रुपय तो मैं भी खरब कर सकता हूँ। सवाल तो उस बात का है जो हरसूख न पहले बही थी। रहने के लिए घर चाहिए और पेट पालन के लिए धंधा भी जरूरी है। यह जो भया ने पाब-पाच रुपये जमा करने की बात बही उस रकम से मुझे एक भस दिलवा दी तो उपहार मानूँगा। गांव छाड़कर मैं सरसुतिया के साथ इसी कस्बे में आ जाना चाहता हूँ और जो ग्रह सब न कर सकते हो तो हम दानो जने एक साथ मादुर खाकर सो जाएंगे और भगवान के बकुण्ड में अपनी शादी रचाएंगे।'

अमा प्रेम जीने के लिए हाता है या मरने के लिए। बहरहाल तुम्हारी बात मेरी अवतल में आ गई। तुम्हें इस कस्बे में घर भी मिलवाया जाएगा और शादी के उपहार में लकमनी भी मिलेगा।

'लकमनी क्यों?'

अब साल भस।

चौहान की इस बात पर सब जने हस पड़े। सत्तार न कहा 'एक बात और बहू। तुम लोग बुरा तो नहीं मानोगे?'

'कहो-कहो।'

सुहागी के रहने के लिए मुस्लिम महल्सों के पास वाला कोई

बिछरे तिनके

महल्ला ही ठीक रहेगा। अगर रिपुदमन हम शादी का विरोधी हो गया तो हमारे कपड़े में भी आपके बहुत से हिंदू इनके कस्टमर हरगिज नहीं बनेंगे।'

सुहागी फिर बोला, 'अकेले रिपुदमन की ही बात नहीं है भया खुद मेरा बाप और मेरी विरादरी ही मेरी दुश्मन बन आएंगी।

रमेश, जो बड़ी देर से चुप बठा हुआ बातें सुन रहा था एकाएक सिर झटकाकर बोला सुहागी को बसा घर, जसा तुम लाग प्रपाज करत हो मैं दूंगा।

'अरे बाहू रे मेरे अलानीन क चिराग। ऐसा घर कहा स लाभोगे बेट्टा ?'

रमेश बोला अभी तीन ही चार दिन हुए हैं हमारा फादर ने क्याने में एक भवान खरीदा है। खरीदा क्या इनके पास रहन खा गया था और वह पार्टी उस बचकर चली ही गई क्योंकि राजधानी में उस जाव भी मिल गई है और मोहिनीपुर कालोनी में एक भवान भी इन्स्टालमंट पर खरीद लिया है।'

'मगर तेरे वालिद-धुजु मवार वह मकान सुहागी को क्या देंगे ? अरे किराय पर चलाएंगे या बेचेंगे कि

रमेश वाला 'यार किराया मैं दूंगा। बाद में जब इसका काम चलने लगगा तब यह देने लगगा। घर क हाते में याड़ी सी जमीन भी है। भस वही बाघ ली जाएगी। बहरहाल हम लोग सला मजदू की शादा करेंगे।'

सुहागी ने भावावेश में सबके आगे अपना मत्था टेक दिया। भर गले से कहा, 'आप सागा का उपकार सात जनम नहीं भूलूंगा भया, मगर यह हमकीम चलेगी नहीं। रिपुदमन का सरसुतिया की विरादरी वाला पर बड़ा जोर है और सतरी महेसनाथ सिंह

"एसी-तमी साले मतियो की। वा पानिटिकम लाएगा तो हम भी लाएंगे। कटटेवाजा की भी कमी नहीं और इस समय चुनाव में प्रलू राठौर भी फाइनेंशल हेल्प कर देगा। क्योंकि रिपुदमन और महेसनाथसिंह वाला ही स उसकी पुरानी दुश्मनी है।' विल्लू न कहा और सुहागी सरसुतिया क प्रेम विवाह की पूरी योजना फटाफट बन गई।

चार

सरमुनिया घर से भाग गई। कटारीपुर में हरिजनो में कुछ हल्ना गुलना ज़रूर मचा। सुहागी और सरमुनिया के बार-बार छिप छिपकर मिलने जुलने की बात अब छिपी न रह सकी। फल गई। लखन उक्त सरमुनिया का मामा लगता है उसकी माँ रुक्मा का सगा बचरा भाई। सरमुनिया में भागने के चार दिन बाद लखन ने आजकल में सुहागी और सरमुनिया के विवाह का चित्र देखा तो भड़क उठा। लखन को लगा कि उसकी भाजी की भगाकर अहीरा ने मानो उसकी नाक काटी है। छिद्दा अहीर की टोली से उसका कुछ खिझाव भी था। उसने सोचा कि इसमें छिद्दा का हाथ भी कहीं न कहीं अवश्य ही है। ताब और अपने घमड़ में अकेले ही खेल पन्ना।

कटारीपुर में हरदोई माग के किनारे सुहागी की बाप ने दूध मिठाई की दुकान भी खोल रखी थी और सबेरे शाम गोशाला के बड़े आगमन में दूध बचता था। एक दिन सबेरे ही सबेरे वह सुहागी के पिता की घर आ घमका। सुहागी का पिता शिउदयाल अपनी गाहकी के काम में फंसा था। उसने लखन की ओर तब देखा जब लखन ने उसकी गदन पर छुरा रखकर पूछा— बता दे तरा लौंटा कहा है?

शिउदयाल और उसने गाहक एकाएक चौंक पड़े। गदन पर रखे छुरे से कुछ सनसनाहट भी फैली। मगर शिउदयाल भी कुछ कम नहीं था। छुरे की चुभन की साथ ही दूध बेचत-बेचते उसकी आँखें लखन में मिली और जाहू का माँ कश्मिमा दिखाते हुए झटका लेकर जिस नपने से दूध नाप रहा था वह भरा-का-भरा अचानक लखन की आँखा पर फेंक दिया। लखन का क्षण भर के लिए झपकना था कि शिउदयाल के छोटे भाई ने दूध काढ़ना छोड़ कर पीछ से उसे गपची में भर लिया। गाहकों का भीड़ में से भी कुछ लोग तब धीरे-धीरे झपट पड़े। हा-हुल्लड़ ने महल्ले भर की आतन पानन ही चारों तरफ झपटता कर दिया। लखन सशक्त होने हुए भी पूरे घेराव में आ

चुका था। उसके छुरे वाले हाथ पर पर रखकर बाबू पा लिया गया था। महल्ल ने एक सीकिया पहलवान को जोश चढा तो पगहा बाधने वाली रस्मी उठाकर ले आया कि साले के पर बाध दो। यों महल्ले के शाहमदारो ने मरे हुए को बाधकर मारना शुरू किया। लखन पासी के हाथ-पाव बाध कर भी एक बम्ती के एक 'इण्टेलिक्चुअल' टाइट म्यूजीकी ने कहा, "तखत पर सिटाकर दोना पायो से साले को बाध दा। मारो मत बरना कानून तुम्हारे हाथ में निकल जाएगा।" इस बात पर हरका मा शास्ताय हुआ। बघ हुए लखन के मुह पर शिउदयाल के तडातड तमाचे पड रह थे। और जब उसने करबट सी तो आगे-पीछे की भीड ने दोना ओर से उसपर अपनी लाता के प्रहार किए।

पुलिस आ गई। बाबू लखन पासी सब तक बेहाश हो चुका था। लग भग पुलिस के साथ ही साथ 'आजकल के नगर रिपाटर चक्रपाणि चौत्रे' भी अपने स्वटर पर कमरा सहित आ पहुँचे। सरकारी और पत्रकारी पूछताछें हुई। गवाहों के नाम लिखे गए। लखन बेहोश था इसलिए उस जानवाली तक उठाकर ले जाने के लिए किसीके गद्दा से दरी आई। चक्रपाणि फाग पर फोटी से रहे थे।

दूसरे दिन 'आजकल' में लखन पासी के पकड़े जाने और किसी गहरी घाट के कारण हवाजात में उसके मर जान की खबर उसकी तस्वीर के साथ छपी। राजधानी के दो अखबारा में इसमें साथ ही साथ एक खबर और भी छपी थी कि वित्तमयी महसनाथ सिंह लखन पासी को देखन के लिए अस्पताल गए थे। और लखन पासी रोन हुए जब उनके गले में हाथ डाल रहा था तभी उसका प्राणांत हुआ।

दूसरे दिन सबेर नौ-माढ़ नौ बजे के लगभग सतीषीप्रसाद और बबलू राठौर गुरमरन बाबू के महा आए। अबकाश प्राप्त गुरमरन बाबू के पास अब पढ़ने का समय चूकि अधिक निकल आया था इसलिए दो अखबारों की एक एक खबर चुन चुन कर पढ़त थे। कुबेर साहय को देखकर उनका साम-ती मन आदर और प्रसन्नता से धिल उठा। हाथ का अखबार फेंक हड़गडाकर हाथ जाड़े उठत हुए अपनी अध आरामकुर्मी छाइन हुए छड़े हो गए। विराजिय विराजिय। अपनी कुर्सी की ओर हाथ बढ़ाया। बबलू ने साग्रह उन्हें उहीकी जगह बिठलाते हुए पूछा, 'बिल्लू घर में है?'

गुरमरन बाबू चौंके गए। पूछा, 'हा मरे ब्याल में कल रात आया

विपरे तिनके

तो था। शायद सोया भी यहीं था। छूटव-नू तुम अपनी गम्मा से जाकर पूछो और चाय-बाय बनवाओ झटपट।'

सतोपी उफ छूटव-नू भीतर गया। बबलू गुरसरन बाबू से कह रहा था आप मेरे लिए काइ कपट न करें बाबूजी। आप मरे बडे हैं। सतापी मेरा कितना गहरा मित्र है यह भी आप जानत हैं।

जी-हा जी हा। वो ता सब है कुवर साहब मगर मेरी इन बूडो रगा म जो आप राजे महाराजा का नमक घुसा हुआ है वह आखिर कहां जाएगा। हं हं हं। आप समझें कि हमारे बाबा परबाबा सभी आपकी रियासत का नमक खा चुके हैं। ये जो महेशनाथ सिंह लछन पासी के मरने पर उमक नन लिपटकर रोय ये वह उबर सच हो सकती है कुवर साहब ?

'इसम झूठ क्या है बाबू जी। महेशनाथ सिंह इसीके बूते पर इलकशन लड रहे हैं। एक तरह सउनका दाहिना हाथ कट गया है। आप जानत नहां झूठे गवाह बनाय जा रह हैं कि बिल्लू ने सरसुतिया को गायब करवाया और उसी न उन दोना की मिथिल मरिज का अरेजमेण्ट भी किया था। बिल्लू की मार से लछन पासी के मारे जाने की झूठी गवाहिया पर पुलिस उस गिरफ्तार करने आ सकती है। इसीलिए चेतावनी देने आया हू।'

बाबू गुरसरन गम्भीर हो गए फिर बोले "भुझे एक मिनट की इजाजत दीजिए। मैं अभी अंदर जाकर तलाश करू कि बिल्लू है या नहीं क्योंकि मैं नहीं चाहता कि पुलिस मेरे दरवाजे पर आए। गुरसरन बाबू उठे ही थे कि सतोपी और बिल्लू भीतर स बठक म आए। बिल्लू बबलू म हाथ जोड़न हुआ। बबलू बाले तुम इसी समय हमारे साथ चलो।"

मैं कायर नहीं हू बबलू भया। क्या तुम यह सस्पेक्ट नहीं करते कि कटारीपुर के पासिया मे सुहागी के बाप और हमारे बस्ते के अहीरो के घर तबाह करवाय जा सकते है ? मैं

'तुम चलो तो सही।' मैं यही सब प्लान डिस्क्स करने के लिए उस समय आया हू। महेशनाथ सिंह के साथ खाली पासिया का गिरोह ही नहीं छिद्दा अहीर का गिरोह भी है। अभी मामला बहुत टेढा होने वाला है। तुम जल्दी हमारे साथ चलो।

तीना चलने लगे ता गुरसरन बाबू ने उठकर पहल तो कवर उत्तम सिंह राठोर उफ बबलू को सविनय झुककर हाथ जोड़ फिर सतोपी से कहा, 'छूटव-नू।'

‘जी पापा ।

‘भई सुना वो डा० गायल वाले मामले

सतापी के उत्तर देने से पहले ही बबलू बोले उठे, बाबूजी घबराइय मत जरा इस बेस को निपट जान दीजिए । दो-एक दिना म फिर गायल भी गो बेण्ठ यान हो जाएंगे । आप निमा खातिर रहिए ।’

‘नही गोयल वाले मामल का भी साथ ही साथ उठाना चाहिए ।’

उनकी बात पर हा हा का टालमटोनी लगाकर वे लोग ता चल गए पर गुरसरन बाबू के मन म यह कचोट बनी ही रही कि इन लागा क मन मे केवल अपना ही पालिटिक्स क प्रपच का महत्त्व है । कसा घोर कलजुग आ गया है सतमाइ बाबा ?

कुबेर उत्तमसिंह की बाठी सातनेश्वर प्रासाद’ म बबलू और बिल्लू म देर तक बातें होती रही । बिल्लू ने कहा देखिए बबलू भया, अब ता मैं इस बात पर डट गया हू कि इन दोनों की शादी बाकायदा बंदिब ठग से भी हो और मैं धूमधाम से रचा कर रहूंगा । अंतर्जातीय प्रेम विवाह अब पाप नहीं है सारे हिंदू समाज म होन लगे है ।’

माई डियर तुम हम समय इस प्वाइण्ट पर जोर मत दा। मैं प्रामिस करता हू ”

प्रामिस-आमिस कुछ नहीं । मैं अच्छी तरह जानता हू कि स्व० लखन के साथी हमारे अहीर पाडे पर खास तौर से और कटारीपुर मुहागी क बाप के यहा भी अवश्य आक्रमण करेंगे । महेशनाथ सिंह इस मुद्दे पर चुप नहीं बठगा । मैं कटारीपुर और यहा भी छात्रा की टोलिया लगा दी हूँ । आज से उनका पहरा लग जाएगा ।

सतोपी बोला, तुम मममत क्या नहीं बबलू हम इस समय छिद्दा अहीर के गंग का रिपुदमन और महेशनाथ सिंह क कण्ट्रोन से निकाल भी सकते हैं ।

‘भई विरान्दरी का मामला है कही छिद्दा छिटक गया तब आपन हो जाएगी ।’

बबलू भया, इस मामले का मैं अच्छी तरह ममझता हू । बड़ी मेहनत मे मैंने छात्रों पर कण्ट्रोल किया है । हमारी उम शक्ति को भी मत भूलो । लखन पासो का बचा-बुचा गिरोह हमारे अहीर पाडे पर आक्रमण करेगा, उसके पहले ही मैं यहा धूमधाम म खुलेजाम दोनों की शादी करवा देना चाहता हू ।

पागी जब उसपर अटक करेंगे तो

छिद्दा का जानियान् मुहागा और उसके बाप व माय हागा महान नाथ मिह व साथ नहा। एक बार कलश हा जाए ता म बाई नहीं बचा पाएग और इससे मर न्याल से आपकी पाडीशन स्ट्राग ही बनगा। महान नाथ फिर अपनी जमानत जध्य न कराए ता मुक्त कहना।

अब बिल्लू यह जिन्मी और मौन का मामला है। मैं छिद्दा का अपन प्रियाय नहीं जान न्ना चाहता हू। हा मुहागी और उमकी परना का मुर गित रूप न अण्णरघाउण्ड कर दना मने और मतेपी व वग म मूय है। इलकगन जीत से फिर ममस पैग इन गाता का।

छिद्दा को अपन हाम म करने व निण भी मर पाग एव तगडा सोस है। हरमुख मानव मरा गाथी है। यह मूलरूप न है तो बटारीपुर का ही। उसक पात्र व वान बनकर महा भा वस थ मगर गाथ व वाष्टक्यत अभी टूटे नहा है। और जहा तन मुक्त मालूम है कि हरमुख की छिद्दा म कुछ रिशानगी भी है। मैं आज हा कल म हरमुख व माय छिद्दा म मिल जाऊगा

बिल्लू तू अवकूप है। छिद्दा न वाष्टकट कर पाना तर वस की बात नहीं। गतायी बोला।

बिल्लू नाथ ग्य गया। कुसी म उठ पडा हुआ और कहा छुट्कानू दान अगर मैं असल गाथ का बटा ह तो चौगिम पण्टे व अण्णर छिद्दा म मिल लूगा और मही नहीं अस्मी प्रतिशन यह वादा भी करता हू कि छिद्दा अब मन्शननाथ के चुनाव को मरागज करेगा। मरी भी अपनी कुछ नीतिया है।

बबलू बोला करक द्य सा भर् लकिन तुम यह जानन हो कि मरे लिए यह जावन मरण का प्रश्न है। अगर बाग (आई) जीत गई तो मरे मकी वनन व वासज है।

बरनू भया, मैं सुम्हार इलकशन के त्रिद्व कुछ नहीं कहगा। बल्कि सच माना अगर मुहागी और सरमुतिया के पुलवाम विवाह-समारोह म तुम अपनी पार्टी व लागा का भी हमारे साथ जोड सोग तो पावदे म ही रहोग। हीरो बन जाओगे हीरो।

ठीक है। तुम छिद्दा म मिल सा फिर दपूगा। मगर यह चेतावनी दिए दता हू कि पुलिस तुम तीन चार लडको को गिरफ्तार करने के लिए

अभी मुझ गिरनार करत बाबा पना नहीं हुआ। मैं बिन्दू हूँ
बिन्दू और मेरा गम भी बिग्री बड़ी म बड़ी मना की गिराव म कम रही
है।

बिन्दू बबलू राठीर का काठी म बिबनकर मयम परन अमुम गतार
क यता पटना। उमम बाने की। गतार पर पुनिम का मका अभी ता।
अभी है। हमारा बिन्दू का घड़ी बैठा रहा बिन्दू मताह हगुगु गोहा
और मना का मुता क मित पना मया। पट भर म मभी पाग जमा हा
गए। बिन्दू ३ बबलू राठीर म हूँ अपनी बापे मयका बगमाह और कता
मै हगुगु का मकर छिदा अरीर म मिमना पाहना हूँ। मुम मोमा की
कपा मर है ?

रमश बाला बार हम छात्रा का हकना क गाव

ता छात्र हकनी क गाव कता कनी कामा जा रह है ? छात्र छात्रा
के अलग-अलग समठन करा पौमिगिबय हकना क गाव नहीं है। और कदा
मह बाग मय नहीं कि हम मयम मिन पाटी क गिमाग छात्रों म भारी
अगनाय है। महमनाय मिह मरन हा मयम पामी क मर म हाय हाककर
राय थ। उम चकपाणि गाव ३ उमकी कोरा भी उमर मीची हागी। मैं
उमकी मकर को भलीभाति जानता हूँ। छात्रा रही मका होमा कदाकि
'आजकल क स्वामी काग (आई) विरोधी है। अगर उमक पाग पागपाग
हुमा ता मैं प्रीमिम करता हूँ कि कीगे दगर हो छिदा हमारे गाव हो
जाएगा।

बिन्दू की इस आशीसी भाषणनुमा बात न मयका ममन कर
विषा। हगुगु बाबा, छिदा म हमारी कुछ दूर की रिक्तागरी भी है। मैं
कटारीपुर म अपन चारे भाई रामकर का गाव तकर छिदा म मुह
मिना दन का प्रीमिम करता हूँ। जा मही है कि मुम चकपाणि पर अपना
पानी पर दा और मयम हा जात्रा।

रमश बाला, "और मान ला चकपाणि क पाग पोपापाव न भी
निबना ता राजधानी के दा-मो अगवाग की रिपोटे ता हमारे गाव
होगी।'

बिन्दू बाला 'जीना रह मरा मार। मून मुझ मयम की बचत के
विहाय म अच्छी यात्रा सिद्ध है। मगर एक बात है—मान लो हम मारा
पाचा मोम एक डेपुटत बनकर छिदा म मित जाए ता क्या उमपर
प्रभाव नहीं पड़ेगा।'

चलो फिर साइकिलें उठाओ। हम सब कटारीपुर चलत हैं। मामला वहीं पर तय होगा।

नहीं पहले चक्रपाणि स चक्र लान की वाग्विश कर। पाव भर गुलाबजामुनें लेकर जाना उसके पास। समझे।

इधर बबलू गठौर और सतापीप्रसाद की राजनीति भी चुप नहीं बंदी थी। फ्रीडम और रणभरी में प्रकाशित महेशनाथ सिंह और लखन पासी की मिलन भेंट का समाचार। का प्रचार कटारीपुर तथा आसपास के इलाक़ में लाउंडरों के घर घूम घूमकर सुनाया जा रहा था। चक्रपाणि चौक से फाटी लन में प्रवेश सफल हो गया। राजधानी में पचास सरकार विरोधी कटोरे छुरेबाज भावी भी जा गए। बिल्कुल एण्ड कम्पनी तथा कटारीपुर की रक्षा के लिए भाई हुई छात्रा की टोली कटारीपुर की ओर जब चलने का ही थी तब अचानक यह खबर आई कि लखन पासी के साथियों ने सुहागी के बाप शिउदयास तथा कटारीपुर के अहीरा पर हमला कर दिया है। मुनत ही जवानों में जाश आ गया। साइकिलें हवाई जहाज बनकर उड़ चली।

पासिया ने सुहागी के बाप शिउदयास के हाथ पर बांधकर उसकी जननी हुई गौशाला में फेंक दिया। यह संयोग ही था कि जाग में न गिरा। फिर गेटा अहीरा की बस्ती में क्या हुआ और क्या न हुआ इसका हिसाब किताब भला मानवता का कौन-सा आदर्श करेगा। बन्मस्त और खूबतार डकत जब कटारीपुर में उत्पात मचा ही रहें थे तब तक बिल्कुल का टोली पहुंच गई। उनके हुस्सड और कटोरी की तडतड ने अहीर बस्ती के आतंक कारियों को सावधान किया लेकिन सुटेरे व्यक्तिवारी अब चूकें घर घर में बंटे हुए थे आधी बस्ती में आग भी फैली हुई थी इसलिए छात्रों के अकस्मात आक्रमण से दो चार लोग मारे गए बाकी भाग। छिटा अहीर सयाग से उस समय पड़ोस के गांव हरखपुर में ही मौजूद था। कटारीपुर में आक्रमण की खबर मिला तो उसका यादव रक्त खोल उठा। पूरे दो सान पासिया के घर।

एक साथी ने कहा 'उनसे बदला लेने के लिए राजधानी से लड़के भी आए हैं।'

ठीक है, उनको पीछा करने दो। तुम वहां के पासियों की बस्ती उजाड़ो। उस लीडिया की अम्मा महेशनाथ सिंह की रखल साली की तो कुतिया बनाकर छोड़ना और महेशनाथ सिंह के यहां से अगर कोई बोले

तो भी सालि की भूनके रख र्ना ।

जब पामी हकता का सफाया करके लडके जलती हुई पासो बस्ती क पास आए तो छिदा खडा ललकार रहा था । हरसुख हिम्मत करके अपन चचेरे भाइया के साथ आग बडा छिदा से कहा, "मोमा जी पहले मेरो एक बात मुन लाजिए ।"

'कौन हो तुम ?'

"रामनाथ यादव वकील का लडका । हम लोग शहर से आप ही से मिलने आए हैं ।

क्या ?'

महेसनाथ सिंह '

महेसनाथ सिंह क नाम पर ही छिदा के मुख से एक भद्दी माली निकल पडी । बिल्कु छूटते ही छिदा के चरण छूकर हाथ जोड़कर बोला, उसका बडा जवाब हम देंगे । वस हम आपका आशीर्वाद भर चाहिए ।'

क्या करोगे ?"

आप से पामिया क घर जलान की आशा वापस ले लीजिए । अब बडे-बडों में अन्तर्जातीय विवाह हो रहे हैं । सुहाग्री न अगर कर भी लिया "

इन सालो ने अभी अभी बजुआ क घर में घुसकर हमारी औरता की बदरजती करनी चाही । मैं यह मह नहो सकता । इन सबका वश नाश कर दूंगा । महेसनाथ सिंह साला समझता क्या है । उसका भक्ती मैंन बनाया था लखन पासो न नहा और साना गल मिलन गया उस कमीन से जो हमारे ही एक भाई का मान्न क लिए पहुँचा था ।"

'मैं इसलिए आपसे प्रार्थना करता हूँ कि हम लोग राजधानी के और कस्बे के नगमन एक हजार छाव सुहाग्री और सरसुतिया की बधिक रीति में खुलआम शादी करना चाहते हैं । आप बडा मौक पर पहुँच जाना को आशीर्वाद दीजिएगा । वस इतना हा चाहते हैं । फिर कोई कटारी पुर या हमारे कस्बे के अहीर पाडे पर हमना बरत की हिम्मत नहीं करेगा ।

सालो नीच विरादरी की लम्बी

दखिए यादव जी अब अन्तर्जातीय व्याह खूब हो रहे हैं । आपकी विरादरी में पहले भी एक व्याह हो चुका है और जिससे हुआ है वह आपका बकीन है । है कि नहीं ?

छिदा चुप हो गया । थोड़ी देर तक गभार खडा रहा । फिर पूछा

‘ यह ब्याह कब करना चाहते हो ? ’

आज या कल जब आप आना दें । ’

मैं अग्या देने वाला कौन हूँ । पढतो से महरत सुनवाओ ।

दो सब हम कल ही सुझवा चुके । अच्छी साइत में ही तो कल उनकी मिविल मरिज करवाइ थी । आज भी अच्छी साइत है और कल भी रहेगी । जब आप आजा दें । हरमुख न अपनी नीति भरी बातों से अपने सयाकयित मौसाजी को ठहा कर लिया ।

बड़ी-बड़ी मूछा पर ताव न्त हुए छिद्वा वाला करा ब्याह मैं मौके पर ही सामन आऊंगा । बाकी पीछ ही रहूंगा । अभी पुलिस से सीधी मुठ भेड लन का समय नहीं आया है ।

ठीक ठीक बिल्कुल ठीक । कल शाम रामलीला के मदान में ब्याह की घोषणा आज ही लाउडस्पीकरों से कर दते हैं ।

कर दो वज्रगवली सब भला करेंगे । छिद्वा ने फिर मूछा पर ताव दिया और पतलून से सिगरेट की डिबिया निकाली मुलगाई और धुआ उड़ाना हुआ भला गया ।

पांच

ऐन चुनाव की गर्मी के दिना म लखन का मारा जाना और छिटा का जातिवाद भड़क उठना इस क्षेत्र के दूसरे प्रत्याशी मंत्री महेशनाथ सिंह के लिए बड़ी चिन्ता का विषय बन गया। बेटी के चले जाने और अपन माव जनिक अपमान के कारण अपनी प्रेमिका के अत्यंत विलाप से रिपुदमन सिंह भी अतृप्त हो चुके हुए। तभी अखबारों में यह सूचना प्रकाशित हुई कि छात्र संघ के आयोजन में मुहागी और सरसुतिया का ब्यादा क्षेत्र के लोकप्रिय नेता और कांग्रेस (आई) के प्रत्याशी कुंवर उत्तमसिंह राठौर उफ बबलू बाबू करेंगे। मुहागी-सरसुतिया का विवाह चुनाव की राजनीति में जुड़ गया। वित्तमन्त्री महेशनाथ सिंह स्वर्गीय लखन आसी से अस्पताल में मितल गए थे। इस खबर ने विशेष रूप से चक्रपाणि के पीछे चित्त के प्रचार में शासक पार्टी की हलिया बिगाड़ रखी थी। बबलू राठौर और वित्तमन्त्री महेशनाथ सिंह के परस्पर विरोधी व्यक्तित्व जोरदार शब्दों में लाउड स्पीकरों में प्रसारित किए जा रहे थे।

रामलीला मदान में पुलिस की ट्रक आकर खड़ी हो गई। विरोधी राजनीतिक मतों के लड़का की टोलिया भी हाकी म्तिर्के लेकर मगन के आमपास घिर आएं। मारा दिन मुहागी सरसुतिया के विवाह की बाना में ही बीतता रहा। ब्याह होगा तो मारपांट होगी। काफी दगा पसाद भचने की सम्भावना भी यकन की जान लगी। रामलीला मदान में दिन भर कुल्लेज जस मोर्चे बढ़ने रहे। सब यही साचें कि लड़के जब मण्डन की मजाबट के लिए आएंगे तो कस मुठ हागा।

साक्ष दल गई। मोर्चा साध हुए विचार्यों राह तबत ही रह गए किंतु मगन में विवाह पक्ष का एक चिडी का पूरा भा न दाना। गोघूर्ल का समय हुआ। एकाएक शहर भर में विवाह मत्ता के स्वर लाउडस्पीकरों से सुनाई पड़ने लगे। लड़के के लिए जातुर विरोधी पक्ष के लड़के बीछलाए से विवाह-स्थल की खोज में जहा-तहा घूम रहे थे लेकिन कुछ ही देर में यह

‘ यह ब्याह कर करना चाहते हैं ?’

आज या कल जब आप आया दें ।

मैं अग्या गेने वाला कौन हू । पडता से महरत सुझवाओ ।

वो सब हम कल ही सुझवा चुके । अच्छी साइत मे ही तो कल उनकी मिविल मरिज करवाई थी । आज भी अच्छी साइत है और कल भी रहेगी । जब आप आशा दें । हरमुख ने अपनी नीति भरी बातों से अपने तथाकथित मौसाजी को ठंडा कर लिया ।

बड़ी-बड़ी मूछो पर ताव दत हुए छिद्दा बोला कर ब्याह मैं मौके पर ही सामने आऊंगा । बाकी पीछे ही रहूंगा । अभी पुलिस से सीधी मुठ भड लेने का समय नहीं आया है ।

ठीक ठीक बिल्कुल ठीक । कल शाम रामसीला के मदान में ब्याह की घोषणा आज ही लाउडस्पीकरों से कर दते हैं ।

कर दो बजरगवली सब भला करेंगे । छिद्दा ने फिर मूछा पर ताव दिया और पतलून से सिगरेट की डिबिया निकाली सुलगाई और घुभा उड़ाता हुआ चला गया ।

पांच

ऐन चुनाव की गर्मी के दिना म सखन का भारा जाना और छिद्दा का जातिवाद भड़क उठना इस क्षेत्र के दूसरे प्रत्याशी मंत्री महेशनाथ सिंह के लिए बड़ी चिन्ता का विषय बन गया। बेटों के चले जाने और अपन साव जनिक अपमान के कारण अपनी प्रेमिका के अथक विलाप स रिपुदमन सिंह भी अत्यंत क्षुब्ध हुए। तभी अखबारा म यह सूचना प्रकाशित हुई कि छात्र संघ के आयोजन म मुहागी और सरसुतिया का क्यादान क्षत्र के लोकप्रिय नेता और कांग्रेस (आई) के प्रत्याशी कुवर उत्तमसिंह राठौर उफ बबलू बाबू करेंगे। मुहागी-सरसुतिया का विवाह चुनाव की राजनीति म जुड़ गया। वित्तमत्री महेशनाथ सिंह स्वर्गीय लखन पासी स अस्पताल म मितने गए थे। इस खबर न विशेष रूप से चन्नपाणि के खींचे चित्र के प्रचार न शासक पार्टी की हलिया बिगाड़ रखी थी। बबलू राठौर और वित्तमत्री महेशनाथ सिंह के परस्पर विराधी वक्तव्य खारदार शब्दा म लाउड स्पीकरा से प्रसारित किए जा रह थे।

रामलीला मदान म पुनिस की ट्रकें आकर खड़ी हा गई। विराधी राजनीतिक मतों के सडका की टोलिया भी हाकी स्टिचें लेकर मदान क आसपाम घिर जाइ। भारा दिन मुहागी सरसुतिया के विवाह की बाता म ही बीतता रहा। ग्याह हागा तो मारपीट होगी। काफी दमा फना मचने की सम्भावना भी व्यक्त की जान लगी। रामलीला मदान म तिन भर कुक्षेत्र जस मोर्चे बघन रहे। सब यही सोचें कि सडके जब मण्ड की सजावट के लिए आएंग तो कस युद्ध होगा।

साश ढल गई। मोर्चा साधे हुए विद्यार्थी राह तकते ही रह गए किनु मदान म विवाह पक्ष का एक चिडी का पूत भी न छागा। गायूलि का समय हुआ। एवाएक शहर भर म विवाह मत्ता क स्वर साउडस्थाकरा स मुनाई पडने लग। लडन न लिए आतुर विरोधी पक्ष के सडक बोलनाए स विवाह-स्थल की खोज म जहां-तहां घूम रहे थ लेकिन कुछ ही दर म यह

पता चल गया कि सुहागी और सरमुतिया का विवाह बबलू राठौर की काठी के भीतर हो रहा है और लगभग हजार डढ़ हजार छात्र और गांधी के लठन कोठी की रक्षा कर रहे हैं।

बिल्लू ने ही लाउडस्पीकरों की योजना बनाई थी। चार लाउडस्पीकर ताबबलू राठौर की काठी सातनश्वर प्रासाद का छत पर लम्बे बांसों में बंध हुए सरमुतिया और सुहागी के विवाह मंत्र प्रसारित कर रहे थे और कस्बे के कुछ घरों में अलग अलग लाउडस्पीकर और माइक्रोफोन भी लग हुए थे। बबलू की कोठी से विवाह मंत्र प्रसारित हो रहे थे और विभिन्न महिलाओं के काग्रेस-समर्थक घरों से यह नारा लग रहे थे— 'जो हमसे टकराएगा चूर चूर हो जाएगा'।

पुलिस सातनश्वर प्रासाद में घुस नहीं सकती थी क्योंकि वहाँ कोई असबधानिक कार्य नहीं हो रहा था। विरोधी पक्ष के छात्र बबलू राठौर की काठी पर जात्रमण करने के लिए बहुत-बहुत उकसाय गए परंतु सुरक्षा के प्रबल मार्चों देखकर उनकी हाकी स्थिति उठ न सकी। उनके पास यही एक अस्त्र बचा था कि विभिन्न टालियाँ में घटकर कस्बे भर की गलियाँ में 'हाय हाय' चिल्लाते हुए घूम और उस 'हाय हाय' का जवाब देने के लिए ही बिल्लू ने अलग अलग घरों में लाउडस्पीकरों का प्रबंध किया था जहाँ से उसका समर्थक युवक टक्कर का हाय हायारमक जवाब दे रहे थे।

विवाह वदिक रीति से सम्पन्न हो गया। बबलू राठौर की कोठी से यह घोषणा की गई कि नव दम्पति को जीविका चलाने के लिए उपहार स्वरूप दान भेंटें भी दी गई हैं।

सुहागी-सरमुतिया के विवाह की घटना ने बबलू राठौर का महत्त्व विशेष रूप से बढ़ा दिया। एक तो शहर में पहले ही से इंदिरा काग्रेस के पक्ष में जनमत संगठित हो रहा था। उसमें इस अंतरजातीय विवाह के रामास ने अपनी सुगंधि जीत भर दी। छिद्दा अहीर के महेशनाथसिंह का साथ छाड़ देने से भी चुनाव पर गहरा असर पड़ा।

चुनाव की सरगमियाँ दिनादिन बढ़ रही थी। चुनाव के चार छह दिनों के बाद ही रमेश ने अपने पिता से कहकर सुहागी को मकान भी दिलवा दिया। सुहागी को दो जगह दूध बाढ़ने का काम भी मिल गया था। घर में दूध बचने का घघा सरमुतिया ही सम्भालती थी। बहुत से लोग उस दखने के लिए ही सुहागी के गाहक बन गए थे। इससे सरमुतिया की सुंदरता की चर्चा फल रही थी।

महाना-भवा महीना बडे आराम स बीत गया। चुनाव प्रचार के गीतों में सुहागी-सरसुनिया के प्रेम पर भी गीत बने और गाय गए। एक गीत बड़ा लोकप्रिय हुआ 'गतवहिमा में झूला भारत रे सुहागी-सरसुनिया की।

गन्ने और वनस्पति के सबसे बड़े व्यापारी सऊ चुनीलाल के इक्-सोते पुत्र स्वतंत्र कुमार लक्ष्मी की कृपावश अपने लिए अनक प्रकार की सुख-सुविधाएँ जाह देने के लिए नतिजना के सारे बघना में भी स्वतंत्र थे। सरसुनिया नया माल है बस्त्रों की हीरोइन है उसपर स्वतंत्र कुमार के 'यामानुमार स्वयं उनका ही पहना हुआ होना है। पारा न सरकोव मुझाई। सुहागी स्वतंत्र के यहाँ भी गाय दुहन के लिए नियुक्त हुआ गया। पन्द्रह-बीस दिनों के बाद ही एक दिन एकाएक सुहागी के घर पर पुलिस का छापा पड़ा। पता लगा कि स्वतंत्र कुमार के यहाँ से उनकी बीमारी घड़ी, अंगूठियाँ तथा सोने की चीजें जो उनके कमरे में रखी थीं, चोरी चली गई थी और इस समय छापे में सुहागी के घर की एक कोठरी में मिल गई। सुहागी चार साबित हुआ और पकड़ा गया।

सरसुनिया यादली-माँ गुहार मचाता रहो पर कौन सुनता। वह बिल्कुल के घर दौड़ी गई। उस दिन वह राजधानी में था। हरमुख के घर भी गई किंतु उसके वकील यादव पिता ने अपनी जाति के एक युवक का छेड़ करनेवाली युवती को बड़ी घना से भन्द गल्ल बहकर अपने नौकर के द्वारा घर से बाहर निकलवा दिया। जब दोना सहारे न मिले तो बबलू राठौर की काठी पर पहुँचा। परंतु वहाँ तो प्रशसका की भीड़ जुड़ी हुई थी। चुनाव के नतीजे आ रहे थे। रेडियो की घोषणाओं के अनुसार बबलू राठौर महेशनाथ सिंह से बार्ड में हजार वोटों से अधिक की जीत में जा रहे थे। प्रशसका की भीड़ में बचारी सरसुनिया की गुहार भला कौन सुनता ?

काठी दर में बबलू तीस हजार मता से आगे हो गए। महेशनाथ सिंह की जमानत तो जल्द होने से बच गई लेकिन वे बुरी तरह से हार। सारे बस्त्र में बबलू के समयका के जुलूस निकल रहे थे। पिटी हुई पार्टी के समयका के दरवाजे बंद थे। बिल्कुल राजधानी से लौट आया था किंतु वह भी जोश में बबलू के यहाँ बधाईयाँ देने और मिठाइयाँ से अपना मुँह मीठा करने के लिए ही मीठा चला गया।

दैनिक 'आजकल' में कांग्रेस की जीत की खबरा के साथ ही साथ दूसरे

पृष्ठ पर नगरपालिका के स्वास्थ्य विभाग के निदेशक डाक्टर गायल की गर कानूनी कायवाहिया के और भी बहुत से प्रमाण प्रकाशित हुए थे। आज कल' के नगरदूत चक्रपाणि चौबे का गुरसरन बाबू ने मिठाइयों के बक्से में एक सौ एक रुपया की गुप्त दक्षिणा भी अर्पित की थी फिर भला उनके परम शत्रु की कलक नया का वरीयता क्यों न मिलती ! बेचारे सुहागी के पकड़े जाने का समाचार उसके महल्ले के ही कुछ लोग तक सीमित रहा। बस्ते में भी खबर न फैल सकी।

उसी दिन तीसरे पहर सयोगवश हरसुख को अपने नौकर से मालूम हुआ कि सुहागी की औरतिया रोती हुई घर आई थी कि-तु-हरसुख के पप्पा ने उसे घर से बाहर निकलवा दिया था। हरसुख पहला व्यक्ति था जो सर-सुतिया से मिलने गया। सुहागी के घर के आगे वाले मदान में छप्पर के नीचे उसकी भस बधा करती थी। हरसुख को वह छप्पर भी सूना मिला। एक महल्ले वाला उस सुहागी के चारी के अपराध में गिरफ्तार होने की सूचना मिली। उसने सरसुतिया के घर की कुड़ी खटखटाई। हरसुख को देखते ही सरसुतिया उसके परा पर सिर रखकर फूट फूट कर रो पड़ी। बहुत समझाने के बाद हरसुख को पूरी बात का पता लगा। सरसुतिया की तरह उसे भी सुहागी के चोर होने की बात पर विश्वास नहीं हुआ। यह कोई धाल चली गई है। उत्तेजित हरसुख बोला-तुम घबराओ मत भौजी मैं बचन देता हूँ कि स्वतंत्र कुमार से अवश्य बदला ले लूंगा। मैं अभी ही जाकर अपने मित्रा को यह सूचना देता हूँ। तुम घर के दरवाजा बंद करके ही बठना। आज शाम या कल सबेरे तक हम सुहागी को जमानत देकर अवश्य छोड़ा लाएंगे।”

छह

दैनिक 'आजकल' आज सवेरे कस्बे के लिए चौकोना चुबक लिए आया था। उस समय जबलू राठौर बतमान जनताई मंत्री महेशनाथ सिंह से सात हजार घोंटा से आगे थे। बघाई देनेबापा की भीड़ 'सातनेश्वर प्रासाद' में घसी पड़ रही थी। जबलू ने घोंटा की गिनती के समय राजधानी के बजाय अपने कस्बे में ही रहना उचित माना था। सतोपीप्रसाद उनके प्रतिनिधि बनकर राजधानी में घोंटा की गिनती करा रहे थे।

सुहागी खोरी के बूढ़ आरोप में गिरफ्तार हो गया बचारी सरसुनिया अपनी थकराहट में इधर उधर फाँके भारतीय डोलती रही। शाम का हरसुख से मिलन के पहले उसके जीवन में निपट अंधेरा छाया हुआ था।

गुरसरन बाबू के लिए आजकल सुनहरा प्रभाव सँवर आया था और सुनदा धूरेनाल के लिए आज सँवर की धूप कटीली ब्राडियों के जगल की तरह फली थी।

'आजकल' हाथ में लिए हुए गुरसरन बाबू विश्वविजयों सिक्कर की तरह सवेरे सट्टी बाजार से डाक्टर कुलदीप कुलश्रेष्ठ के महा जा रहे थे। एक हौकर ने गुरसरन बाबू को देखकर जोर से आवाज उछाली 'हेरथ अपसर की नस रखल के बाले कारनामे पढ़िये।' गुरसरन बाबू का मावला चेहरा भोर के उजाले सा चमक उठा। रास्ता बसते जाने-पहुँचाने लोग रामगुहार करने यही पूछने, 'बाबूजी, यह सुनदा और मापल की घबर क्या सब है?' तो बाबू गुरसरन मुस्करा पड़ते। सट्टी बाजार में घुसत ही जब एक न यही प्रश्न किया तो बाबूजी ने एक दुकान पर खड़े तरकारीया छोटते हुए भगत जी० साल की ओर हाथ उठाकर कहा, 'वा सुनदा मेट्रन के ब्याहला हसब्रण्ड छडे हैं। उनसे पूछिए।

पूछने वाले साहब मिजाज के मसखरे थे। आगे बढ़कर भगत जी के पास गए।

मैंने कहा जराम जी की भगत जी ?'

“जै सदगुर साहब की । कहिए कसे याद किया ?

आज का ‘आजकल’ पढ़ा ?

बबलू राठौर जीत रहे हूँगे और क्या खास बात होगी ।

नहीं साहब चुनाव के नतीजा से अधिक एक महत्वपूर्ण खबर है। आज ता आप भी बबलू राठौर की तरह ही अखबार में हीरो बनाए गए हैं ?”

कौन मैं ?

जी हाँ आप ही भगत जी० लाल साहब हैं न ?

ता ?

डॉक्टर गोयल और श्रीमती सुनंदा जी० लाल की कहानी छपी है ।

मरे ख्याल में सुनंदा तो आप ही की श्रीमती जी का नाम

होगा । मुझे मालूम नहीं ? तरकारी की दुकान से झाला उठाकर भगत जी सनसनाते हुए उठे । तरकारिया खरीदना भूल पतीस पैसे का आजकल बगल में दबाया और एक सनाटे की जगह में बैठकर पूरा काँड़ पढ़ा । मकान खरीदने के लिए सुनंदा को बारह हजार रुपया देकर नगर पालिका से लाखा का लाभ करा देने का जो प्रलोभन गोयल ने कपिला कम्पनी वाला का सकेतो भरा पत्र लिखा था, उसकी व्याख्या चन्द्रपाणि चौध ने खूब ही नमक मिच लगाकर छापी थी । सुनंदा के ऊपर कोई सीधा आभेप न करते हुए भी उस महंगे की शराब की तरह पेश किया था जिस दाम देकर कोई भी खरीद सकता है । भगत घूरलाल तो गायल साहब के जरखरीद गुलाम से भी बदतर चित्रित किए थे । उनके दफ्तर में हान वाल अपमानों का प्रामाणिक चिट्ठा और घूरे भगत की नपुंसक भगताई का तो ऐसा रोक्क बणन किया गया था कि गोयल काँड़ के इस महान उन्धाटन में भगत घूरलाल को अपना राल विल्कुल विदूषक जसा नज़र आता था ।

कबीर साहब की सारी साखिया भगत जी के श्रेष्ठ चक्र में बड़ी तेज़ी से चक्करघिनिया खान लगी पर मन का उबाल दबाए न दबा । सुनंदा के प्रति भयंकर श्रेष्ठ के बगूल उठ उठकर भी उसके भय की तम कालकोठरी में कट में पड़कर धुट धुट जात थे । फिर भी सुनंदा की मनपसंद तरकारिया खरीदना न भूल ।

तरकारिया का झोला और दैनिक आजकल लिए हुए भगत घूरलाल बड़े ताव से ‘सुनंदा निवास’ में घुसे । बेटी सता स्कूल जाने वाली थी । उसके जूता पर पालिश नहीं हुई थी । इसलिए तय्यकथित पिता के घर में

बिछरे तिनके

घुनते ही उसने उनकी आबरू घुलाई शुरू कर दी। भगत जी बोले, "तुम्हारे जूने भी चमकाना हूँ राजकुमारी जी, पहले तुम्हारी मम्मी को उनकी महिमाएँ ता पन्न के लिए दे दूँ। लीजिए देवी जी अपने खमम न० दा क साथ-साथ अपनी महिमा का दूसरा अध्याय भी पढ़िये अणवार म।"

मेहन सुन-दा के लिए अणवार का पन्ना खोलकर भगत जी न रख दिया फिर लता के जता पर पालिश करन के लिए बिबिया-बुद्धा आदि लेकर बैठ गए और कबीर की साखी सुनान लग

वाप पूत की एक नारी जो एक माय त्रिपाथ।

ऐसा पूत सपूत न देखा जो वाप चीहै धाय ॥

कबीरदास जी तिरकास के गुरु थे। बरम्हा, जिम्नू मट्टम के गुा उनसे बडा है कौन ? कोई नहीं। वाप का धाय के चीहै भी तो कसे। पापा नहीं कहती अकन कहती है ससुरी। मा वाप की सडाइया म भी कइ बार यह सुन चुकी थी कि उसका असली पापा ठाकुर एक नामी नेता है। धूरेलास के लिए उनके और सुन-दा के सामने ही वह कह दिया करती है कि "यू आर नॉट माँ पापा। यू आर माई मम्मीज सर्वेंट ओनली।"

जूने रमक उठे। धोबी की बेगी को पहना भी दिए। फिर हाथ धोकर टिफिन बॉक्स में चिकन सडविबेज सजा कर रख दिए। लता ठीक आठ बजकर पच्चीस मिनिट पर घर से मडक के लिए निकल जाती है। बस्ता लेकर भगत ही जाते हैं। जात समय पत्नी की अणवारी सल्लीनता को मुस्करा के दग्धा सोचा, अब अपने चरनो पर झुका के ही रहूंगा माली की। अब सरकार बदली है ता गोपलबा साला भी निकाला जाएगा और ये भी निकाली जाएगी। अच्छा है, तभी मेरे काबू में आएगी यह कलमुही।

लता के जूते चमकाए। फिर उसका बस्ता उठाकर स्कूल की बस तक पहुँचा आए। जब लौटे तो देखा कि उनकी अच्छड सौभाग्यवती मानो सौ जूते खावे बैठी हैं। आजकल उनके चरणो के पास पडा है। सुन-दा ने पति को देखा, कुछ न बोली। भगत जी न पास ही रस छोने में सजियों निवासकर डलिया में रखी। कपडे उतारे अगोछा पहना फिर चूना-तम्बाकू भलत टूण बोले, 'यह सब कारस्तानी उस गुरमरनव साल का है। साने ने इश्वरन के मीके पर ही उस उल्लू के पट्टे के माथ-साथ हमारा-तुम्हारा मुह भी बाला कर दिया। गुरु महाराज सच कह गए हैं

हिरदा भीतर आरसी, मुख देखा नहि जाय।

मुख तो तबही देखिये जब मन की दुविधा जाय ॥

बिधरे तिनके

तमाखू मल गई। दो-तीन बार फट फट किया। फिर उसे होठ के नीचे दबा कर बठ गए और पत्नी के उत्तर की प्रतीक्षा करते रहे। मन ही मन जानत थे कि सदा रजाव दिखलान वाली सुनटा इस समय उनसे भलमनमाहत स बात करेगी। परंतु सुनटा एक शब्द न बोली। हारकर खुद ही पूछा, 'अब सरकार चूक दूसरी पारटी के हाथ में आएगी इसलिए तुमसे एकसपिलनेशन तो जरूर मागा जायगा? क्या जवाब दोगी बोलो?'"

कुर्सी से उठत हुए झिझककर मुन दा बोली 'मैं तो साफ कह दूंगी कि जो मरद अपनी इस्त्री की बर्माई खाता है उसीसे पूछिए।

भगत जी तड़पे। सदा कान दबाकर सुनने वाले के लिए आज बोलने की बारी आई थी सो बोल पड़े 'तुम समझती हो, मैं फसूंगा? अरे मैं साधु-संन्यासी आदमी पजे झाड़कर खड़ा हो जाऊंगा कि इसके लडकों की सुरतें मिलवा ला। हराम की औलादें हैं समुरी मैं साला हाईस्कूल फेल, सास रुपतनी का नीकर ये शानदार हवेली खरीदन की हिम्मत रखता हूँ भला? मैं तो भरे चौराहे पर ठका पीटकर कह दूंगा कि जबरदस्ती बनाई गई मरी नक्ली धमपतनी रण्डी है साली। कविरा सुख को जाम था, आग मिलिया दुख। तीस रुपल्ली का नीकर चरमन और हिल्य अफीसर साला क सामने मरी मजाल है कि कुछ बाल सक्। रण्डी का खसम जो बोलू तो भसम। मैं भी सीधा इसटेमिट द दूंगा कि 'याह मुझसे जबरदस्ती कराया गया था और इस औरत से मेरा पतनी का नाता कभी नहा रहा।'

भगत जी बस्व की नगरपालिका क भूतपूर्व चेयरमन जमादार ठाकुर नरयूसिंह क बड़े भाई ठाकुर बच्चूसिंह की अवध सनान थे। उनकी दो-दो ठकुराइन बास रही और घूरेलाल एक तथाकथित नीच जाति की स्त्री से उत्पन्न हुआ। घूरे भगत से पहले भी रखल के दा बच्चे हुए थे पर वे मर गए। इसीलिए पदा होते ही भगत जी का घूरे पर डालने का टोटका किया गया। यही नाम भी रखा गया। बच्चूसिंह अपने इस अवध पुत्र को बहुत चाहत थे। चूंकि भगत जी की मा बचपन में ही मर गई थी इसीलिए और भी चाहत थे। इन्हें पढ़ाने की भी कोशिश की लेकिन जल्दी ही मर गए और ठाकुर नरयूसिंह अपने नि सतान बड़े भाई की पूरी जायदाद क स्वामी बन गए। उनके अवध भतीजे घूरेलाल उनके सेवक बन। इसी दौर में अपनी शहर की जायदाद की एक किरायेदार तमोलिन की बेटी सुनटा से ठाकुर नरयूसिंह की इश्क हो गया। वह तमोलिन भी वस्तुतः जाति की तमोलिन न

थी, कुछ ऐसी-वसी ही थी। मुनंदा जब नत्थूसिंह से गभवती हुई तो उन्होंने अपने अवध भताजे घूरेलाल से उसका शादी रचा कर उस अपन ही पास रखा। नत्थूसिंह जब नगरपालिका के चेयरमन हुए तो हाईस्कूल फेज घूरेलाल जनम मग्न बलक बना दिए गए। शादी के पांच महीन बाद और अपनी नई नौकरी के पहले महीन में ही घूरेलाल का मुनंदा की पहली बेटी का जन्म रजिस्टर में दर्ज करते समय बेटी के बाप की जगह अपना नाम दर्ज करना पड़ा। लड़की के पदा होने के पांच छ महीने के बाद ही नत्थूसिंह न हेल्थ आफिसर डॉ० गोयल की सलाह से मुनंदा की नस की ट्रेनिंग मिलवाई और उसके बाद ही वह सिविल अस्पताल में ही नस की हैमियन से नौकर भी हो गई। धीरे धीरे नत्थूसिंह की अवैध पुत्री की माँ और भगत घूरेलाल की वध पत्नी डॉक्टर गोयल की आजा की पुतली भी बनन लगी।

छाई घरस बाद नत्थूसिंह की चेयरमनी समाप्त हुई। नगरपालिका को सरकार ने अपने बजट में लेकर एक प्रशासक बठा दिया। गोयल ने मुनंदा और घूरेलाल के लिए एक अलग घर का प्रबंध कर दिया। नत्थूसिंह अपने दोनों सेवकों से वंचित हो गए। मुनंदा बीस रोगियाँ के सिविल अस्पताल की नई मट्टन बनी। बुडिया मट्टन रिटायर कर दी गई। अस्पताल में तीन कमर प्राइवेट थे जिनमें गोयल अपने गरमरकारी सरकारी दोस्तों को मुनंदा की माफत ऐश कराते थे। मुनंदा गोयल की इतनी अधिक विरस्त हो गई थी कि उनके लिए खपौं का सेन-दन इत्यादि भी वही बिया करती थी। चूँकि गुरमरन और गोयल की आपस में चल गई थी इसलिए इन्फेजिशनमेंट क्लब बाबू नौबतराय की माफत ही ऐसे तमाम काम होते थे। मुनंदा नौबतराय से डॉक्टर साहब का हिस्सा बसूलती थी।

मुनंदा के नाम नौबतराय की जिस पत्नी का ब्लाक गुरमरन बाबू ने 'आजकल में छपवाया था वह इस प्रकार थी 'मुगल स्टेशनरी वालों ने डॉक्टर साहब के लिए कुछ तोहफे भेजे हैं। अपना कोई भरोसे का आदमी भेजिए या गुरुद शाम का छ बजे आकर मेर घर में ले जाएँ। प्रेजेण्टस कीमती हैं।—नौबतराय'

भगत जी बड़े लाय म थे। नौबतराय का अपनी पत्नी का चौथा छमम रना दिया। घूरे भगत के ऐसे बड़े सवर मुनंदा ने पहली बार ही देखे थे। मुनंदा की पहली बार ही यह अनुभव हुआ कि वह भगत घूरेलाल की विवाहिता पत्नी है और उससे उन्टे-भीछे वक्तव्यों से वह कहाँ की भी नहीं रहेगी। यह साचकर उसने नारी मंत्र साधा और पति के गले में हाथ डाल

कर उसका मुह अपनी आर घुमाकर प्यार म कहा 'दुर्भाग्य म रहीसें की तावतारी म रहकर भी जत्र मौका मिला तत्र मैं तुम्ह प्यार किया । मेरी छाती पे हाथ रख के नसम ग्याआ मैं तुम्हारी नही रही ।'

नारी शरीर का स्पष्ट सुख था परंतु भगत धूरलाल इस समय उस नारी म पूर्णरूपेण विमुख भ जिममे जवन् स्त्री उसका विवाह कराया गया था और जिसने अपन मारा के साथ बेशरमी से बठकर उसपर दृक्म चलाए थ जिसने अपने बच्चा क मन म उसने लिए नौकर जता जनादर का हीन भाव भरा था और जो सब तरह म निर्णय हात हुए भा वह आज अपनी कुन्दा पत्नी क कारण नितना बदनाम हो रहा है । यह विचार आन ही उसने सुनना का हाथ छटप दिया और दूर सरककर बठ गया । मुन'दा भी हतप्रभ हो खिसियानी मुद्रा म बठ गई । एकाएक साइलेंसर चड़ी हुई पिस्तौल-सी दगी कहा मर पास भी तुम्हारा एक बागज रखा है ?

कसा बागज ?

जो तुमने मुझे म लिखकर उस बखल भिजवाया था जब मैं अस्पताल म डाक्टर साहब क पास था ।

मुझे याद नहा पड़ता क्या लिखा था ?

तुमने लिखा था कि मुझे तुम्हारे और डाक्टर साहब के रिश्ते से कोई आपत्ति नही है । मुझे उनसे क्षमादान नितवा दा ।

धूरलाल का चेहरा उतर गया । देखकर मुन'दा और तेज पड़ी वाली मैं भी यह स्टेटेमेंट दे सकती हू कि अपने स्वारण के लिए तुमने मुझे बश्या बनने पर मजबूर किया ।

भगत धूरलाल उठास हो गए । दा बार ठडी सातें छाडा फिर आप ही आप कह उठ घायल घूमै कह भरा, राखी रहै न ओठ । जतन किया जीव नही लगी मरम की खोट । तुम मलकिन हो जो चाहे कर सकती हो । मगर हमको सबसे बडी चिंता यही लगी है कि मरी इरजत आबरु तो साली उसी दिन खतम हुय गई जिस दिन नत्थ ने तुम्ह मरी खापडी पर गिठनाय दिया । अब चौराहे पर बठा के गिन गिनकर जूते मारी भाई, मगर फिर भी बेशरम होके कहता हू कि जिस काले नाग ने हम काटा है वही अपना जहर चूस भी सकता है । गुरसरन के सिवाय हमारे बचाव का कोई रास्ता अब नही है ।'

'गुरसरन क्या करेगे । वह तो हमारी सुख शांति म आग लगाय के अलग छडे हो गए हैं ।'

विपरे तिनके

'अरे महारानी जी, यह न भूलो कि इलकसन की पालिसी चल रही है। गुरसरनव के दाता लड़क बवलू राठौर के साथ हैं। यह सारा हंगामा उसे इलकसन में जिताने के लिए ही किया गया। या तो सतोपी बाम आएंगे या फिर बवल से आखें लड़ाओ। नभौ इकजत बच सकती है।

सुन-दा तडपकर बोली, 'उठे अच्छे भगत हौ तुम बाह-बाह। गाली देते बखत हम रण्डी बनाया और सगाह दते बखत भी कहाँ कि छि भूम तुमसे घना है। चले जाओ हट जाओ मेरी आखा के सामने में।'

भगत पूरेसाल भी गर्मा गण बोले 'ठीक है तुम्हारी आखा के सामने से ही नहीं, दुनिया में ही हटा जाता हूँ। पुलिस में बिटठी लिख जाऊंगा कि मैं आत्म हत्या कर रहा हूँ।'

सुन-दा हसी बोली 'यह तो तुम पहल ही कर चुके हो और तुम्हारे घर जान के दाद भी मुझे बिघवा ब्याह करन से कोई रोक नहीं सकता।'

सुन-दा के गोद के लड़के मजुस को लेकर उसी समय आया ने प्रवेश किया। सुन-दा बानी 'छिम्मो भया उठे तो दूध पिला देना अपने लिए खिचड़ी खिचड़ी कुछ डाल लो।'

'और आप? बाबूजी?'

मेरी चिंता छोड़ो और ये खाए बाहन खाए भूले रह या मर जाए इनकी मुझे तबिक भी चिंता नहीं है।' कहकर सुन-दा अपने कमरे में साड़ी बदलने के लिए चली गई।

सात

सुन'दा सीध बबलू राठौर की कोठी पर पहुँची। बाहर के यरामदे में बड़ा तख्त पर तीन चार व्यक्ति बड़े हुए थे। उनमें से एक व्यक्ति सुन'दा देवी का पहचानता था हाथ जोड़े और पूछा, 'आप अच्छी तो हैं देवी जी ?

मुझे कुवर साहब से मिलना है।'

कुवर साहब।' दिमाग में उसे कुछ हिसाब-सा फलाते हुए वह व्यक्ति उठकर भीतर गया। फिर पाच मिनट बाद लौटकर आया और बोला 'आइए।

सुन'दा उस व्यक्ति के साथ काठी के अंदर झाड़ग कम में पहुँची। बड़े ताल्लुकेदार की कोठी उसकी मध्यमवर्गीय सजावट की कल्पना के अनुसार स भी सजी-वजी न लगी। एक बड़ी आरामकुर्सी दो हाफ ईंशी घेयें एक बड़ा तख्त जिसपर मली-सी चादनी और मला घब्येदार गोल सजिया रखा था। इसके अलावा तीन चार मामूली-सी कुर्सियाँ और भी इधर उधर पड़ी थी। दीवारों में एक बड़ी सी गोल भेड़ निधन विधवा की तरह जवेली नजर आ रही थी। एक आरामकुर्सी पर कोई बठा था लेकिन उसका चेहरा खुले हुए अखबार स ढका था। सुन'दा कमरे में आई बड़े हुए आदमी के चेहरे का अखबार हटा। सुन'दा पहचान गई। शहर में नय रईस सतोपीप्रसाद को कौन नहीं जानता। उजला छादी का कुर्ता पागामा जूठिया से लदी दोना हाथ की अगुलिया। सुन'दा न बड़ी ही गिड़गिड़ाई हुई मुखमुद्रा के साथ उसे प्रणाम किया।

जवाब में सतोपी का अखबार थोड़ा उठ गया। माना सतोपी के हाथों के बजाय अखबार ही उसे नमस्कार करने के लिए उठा हो। फिर कमरे में सनाटा छा गया। सिर्फ एक बाघ दार अखबार के पन्ने पलटने की खरखराहट हुई।

सुन'दा के भीतर प्रश्नों और कल्पनाओं का एक ऐसा बबडर नाच

रहा था जो मन का न सांचने देता है और न निश्चित ही रहने देता है। फिर भी अनिश्चय ने निश्चय की एक गति ले ली। सती, सतोपी की कुर्सी के पास तक गई। उसे आया देखकर सतोपी क सावले किंतु मुहावने चेहर के सामन मे अखबार हटा। मुस्कराकर बोला 'बबलू बाबू के लिए अभी आपको पंद्रह-बीस मिनट इंतजार करना पडगा, शायद इसस भी ज्यादा समय लग जाए।' कहकर सीधे सुन-दा से आख मिला दी। वह पनापन अचम्भे स भरा था सूजे की तरह कलेजे क आर-पार निक्ल निक्ल गया। सतोपी न पूछा 'आज की घटना स आप बबलू के पाम क्या आई?'

सुन-दा अदा से मुस्कराई कहा, 'नौकरी स तो अब सस्पण्ड होना ही है। मैं कुदर साहब का दो एक ऐसी बातें बतलान आई हूँ—यानी मेरा स्वारथ साफ है मैं ता नौकरी स अब जाऊंगी ही लेकिन डाक्टर गायल की नौकरी—और नौकरी ही नहीं इस शहर म इनकी प्रेक्टिस भी ठप कर दूंगी।'

सतोपी न सिगरेटबेस और लाइटर निकाला एक सिगरेट सुलगाई दो-तीन गहरे कण लिए फिर पूछा 'जिस प्रेमी ने आपका सीम चालीस हजार रुपये कमाने के मौक दिए जो आपके एकाध बच्चे का बाप भी है, उसके पास क्यों नहीं गड ? उनसे बदला क्या स रहो हूँ ?'

उसस क्यों बाला स रही हूँ ? तीन बरस पहले जब मेरा इनका अफेयर शुरू हुआ था तब एक सादे कागज पर दस्तखत करवाए थे। मैं पूछा क्या ? वे बोले, 'वक्त-जूरत घूरेलास से तुम्हार तलाक की अर्जी लिखवाने क लिए। तलाक की नीमत ही न आई। मेरे पति न मेरे हुए घूहे की आरमा पाई है। वे उस कागज पर कपिला कम्पनी वालो स मिलकर मेरे नाम स कोई फोजरी भी कर सकत हैं। अपन को बचाने के लिए व कुछ भी कर सकते हैं। मैं जानती हूँ इसलिए उनके पाम नहीं गई।' सुन-दा एक सास म अगारे मे शब्द उगलने लगी।

तो बबलू इसम क्या कर सकते हैं ?'

'गुना है कि महेशनाथ सिंह की जगह अब वे ही मंत्री बनेंगे। डॉक्टर गोयल ने एक मिनिस्टर की भतीजी के दो बार हमल गिराए थे। अपन महा महीना रखा। मेरे पास उन दिनों के फोटो है। एक दूसरे मंत्री जी की विधवा भावज के गर्भाशय का आपरेशन कराया उसने दो फोटोग्राफ मैंने छुद छींचे थे।'

‘क्यों?’

‘डाक्टर साहब ने कहा था। फाटी इस ढंग से खींच है कि उसमें डॉक्टर साहब का हाथ भर निछाई दे। मगर भावज साहब साफ नजर आए।’

‘वह फाटी तो अब डाक्टर गोयल के पास हाथ।’

सीधा उत्तर आया लेकिन निगटिव भर पास है। फिर कुछ इनराकर जदाज भाशूकाना स गन सबकाकर कहा यडे लोका की गुडिया बन बनकर मैं भी अनुभव से कुछ-कुछ बुद्धि पाई है। जाप जैसे महान पुरख में भरा मैं कुछ छुपा मकती हूँ। नजरें लाज और अन्व से नीची हो गई।

सतोपी को लगा यह औरत चासाव है। काम की है। मुस्कराए, छठे पास आए छोना हाथ उसके कंधा पर रमे यू आर ए रिमल डालिंग मुन-दा। मेरे साथ काम करने को राजी हो?

‘किस प्रकार?’

य विन की माई एडीशनल प्राइवट सफ्टरी। सतरी दू पाउज्ड स्पीड पर मय। एपी?

मुन-दा खड़ी हो गई। नाता पास पास छठे हो गए। इस बार आखा म जाखें डालकर घात करने की बारी मुन-दा की थी। नारी की सहज सम्मोहक दृष्टि पुरुष की दृष्टि का बाधकर सवाल पूछ बठी ‘क्या आप सीरियस है?’

‘आफ कोस।’

‘मेरा काम क्या होगा?’

फिलहाल इस विचार से तुम्हें इगेज कर रहा हूँ कि मेरी बाइफ बनकर हागकाम चलीगी।

मैं गजी हूँ। आप जो कहिएगा करूंगी। कहीं फस न जाऊँ?

‘एक बार फस चुकने के बाद जब तुम फस नहीं सकती—मेरे साथ भी शायद—नहीं। इसीलिए तू ग्रेज कर रहा हूँ। तुम जानती हो वह फोटोग्राफस भर फादर न छपाय हैं।’

हा मेरा मो वाड हसब्रण्ड भी यही कह रहा था।

तुम्हारे नय फाटाग्राफस कीमती हैं। बबलू से उनका खिफ करने की जरूरत नहीं। समझी। अगर बबलू पूछ भी तो कहना मेरी इडीशनल पी०ए० बनकर मेरे साथ ही आई हो।’

बिछरे तिनके

“और मेरा वह कागज जिसके दर स मैं ,”

‘उसकी जिता तुम मत करो । गोयल अब कुछ दिना व वाद तुम्हार
सलव चाटन के लिए आएगा । सब वह कागज तुम से सकती हो ।’

मुनंदा की आखा म आसू छलछला उठे । सतोपी व चरणा पर
अपना सिर टेककर बोली आप देवता ह ।’

आठ

हरगुरु न निःशु न गरमुरिग की मारी बाँ बरी । निःशु बा बररा
तमामा उडा । मत्ताय चौदाय और रसत भी बीड हूय । हरगुरु की
भाते गुगुन भद्रुय मत्ताय बनि । माय ह । न ह । यत मार । बारम्बाभी
भुती व मोद की है । मरिन गुगुन का मिरगार बरबाय न भाँवर
उमका क्या हूय हूय ह । मत्ताय है ?

दण्डरत्न ? बिलू महेश्वर बाना बहु भासा कविता मन्त्रमुद्रिया पर बानेश्वर रमणा हागा । हम पहने उमका र ता का उपाय करना चाहिए, फिर भाग की माफी जाएगी ।

संजिन बाग-बाग म रान हा म^१ । अब ये मुद्राया न पर प^२ तब
तब गिहिया उदा^३ जा चुकी थी । एन दरवाज की खुले ऊपर और नाथ
दाना ही तरफ ग बनी हुई था । मरगुनिया के गायब होन की खबर तजी
त पैनी । मुद्रा न ब गिती भाभी र बग नि चुनी का सदका सापा
बम ऐयाग मही है । मुग उसकी नोहरानो भाज माता बगन दा बार
यही गिहिया पड़ी थी । य सारा मन उगीजा सपा है । गिन्नु और
उगन मित्र की भा यही गज था । चौदाउ उत्तेजिन हारर बाता 'रद
बर दा गाल न पर पर ।

उसका क्या होगा ? बिन्नी याता तुम्हारे पास अब तक गबूग न
ह। तब तक तुम बूछ नहीं कर सकते ।

पौरात न कहा हो क्या नहीं गङगा ? यद्यपि राटोर की जीम म
आधिर हम सागों का हाथ रहा है । हम उमे मजबूर करके पुती रयन
म पर का तलाशी करवा सजत है ।

राव लोग सबकुं के पास गए । मुन्दा के साथ सतोपी भी वहाँ मौजूद था । राव बाते मुन्दा पर पहल लगायी हो गाला हमम यज्ञू भला क्या कर सकत हैं ?

बिल्कुल सड़प उठा ओ नई सरकार बनने से पहले ही करव व पुनिया

कप्तान जोर दा इस्पक्टरों को मस्पण्ड करा सकता है वह भला यह काम क्यों नहीं कर सकता ? '

बिल्लू की बात सुनकर सतोषी चिढ़ गया। बोला, 'उनके खिलाफ तो इतने स्पष्ट प्रमाण मौजूद हैं कि कोई उगली नहीं उठा सकता। लेकिन तुम्हारे पास क्या प्रमाण है कि स्वतंत्र कुमार ने सरसुतिया को उड़ा लिया। और यह भी आसानी से सिद्ध किया जा सकता है कि सरसुतिया का करक्टर खराब था इसीलिए वह भाग गई। आप लोग एक बार फिर गौर कीजिए। बबलू कल राज्य गृहमन्त्री की शपथ लेने जा रहे हैं। वह कुछ नहीं कर भक्त।

बिल्लू मन ही मन बसमसाता रहा। सब लोग बबलू से बिना मिले ही उठकर चले आए।

सतोषी की बातों से पूरी मिस मझली बहुत ही खिन्न हुई। हरमुख बोला, 'अब बबलू का इलेक्शन हो गया न तो क्या अकड़ के बालते हैं तुम्हारे भया ? आज मुझे अपनी लाइफ का सबसे बड़ा शाक लगा है।'

बिल्लू बोला, 'सवाल तो यह है कि सुहागी को बचाया कैसे जाए। और सबसे बड़ी बात यह है कि मुझे सरसुतिया के सम्बन्ध में अब बहुत बड़ा खतरा नजर आता है।'

हरमुख बोला, 'बात तुम ठीक कहते हो। मैं आज पिताजी से एक घंटा फिर बात करूंगा।

चौहान वाला 'बाईं लाभ न होगा। हरमुख, हमारी पुरानी पीढ़ी के लोग अब इतने स्वायत्त हो गए हैं कि उनसे किसी भल काम की आशा नहीं की जा सकती। तुम्हारे पिताजी को बचाना होता तो वे सुहागी की औरत को इस तरह अपमानित करके घर से न भगाते।'

'ठीक है मैं छिद्दा से मिलूंगा।'

तीन चार दिनों में छिद्दा अहीर से हरमुख और बिल्लू ने सम्पर्क स्थापित कर ही लिया। छिद्दा कटु होकर बोला, 'बबलू राठौर तो अब मतरी हुई गए हैं। पुलिस कप्तान, निस्पिट्रर सब क मालिन हैं, उनमें बही।

'देखिए योसा जी हम सबसे मिल आए हैं। गुसाई बाया कह गए हैं

धीरज घरम मित्र औ नारी आपत काल परखिय चारी।
बबलू राठौर अब अमीरों के मित्र हैं। हम गरीबों के सबसे बड़े मित्र,

बिछर तिनके

यानी आपका सेवा में आए हैं और सरमुतिया जी अब कुछ भी कह लीजिए आपकी बहू हैं। हम सबकी इज्जत का सवाल है। अभीर साले अब गरीबों का क्या जीने भी न देंगे ?

छिदा कुछ न बोला माचता रहा। बिल्लू और हरमुख बाड़ी-बारी से सरमुतिया और मुहागी के प्रति करुणा जगाते रहे। थोड़ी देर के बाद छिदा ने कहा, 'तुम सब पच सी पढ लिखे लाग हो। अखवारन में बमचख मचाओ।'

बिल्लू ने कहा, 'नकिन सबसे बड़ा सवाल तो यह है कि इतने दिना में सरमुतिया और मुहागी के सस्तर करम हो जाएंगे। मुन मुहागी से भी बहुत अधिक सरमुतिया जी की चिंता है।'

भाई हमारी जान पहचान के पुलिस वाल तो बबलू राठौर तुम्हरे कस्बे तक हटाय दीन हैं। अब हमारे दाब न बठी। हम चुन्नी की कोठी पर न जाव। तुम अपने छात्रन का जुगाड बठाव न।

दिककत यह है मौसा जा कि यह परीक्षाओं का समय है। सडक—।'

तो हम का करी। छाडि दब भगवान के भरोसे। जौन हार्द तीन हाइ अब का कहा जाय जाआ।'

बिल्लू और उसके साथी घुटकर रह गए। बिल्लू ने राजधानी के अखबारा में सरमुतिया-मुहागी के सम्बंध में दो लेख लिखे। उसमें नये राज्य गृहमंत्री माननीय उत्तमसिंह उर्फ बबलू राठौर पर भी कुछ तीखी छाटाकशी हा गई थी जिसके कारण बबलू और सतोपी दोनों ही बहुत नाराज हुए। जिस दिन राजधानी के पत्र में बिल्लू का लेख आया था उसी दिन सतोपी ने कस्बे में अपनी दुकान वाली कोठी के ही विशाल लान में अपने परम मित्र माननीय राज्य गृहमंत्री जी के सम्मान में एक बहुत बड़े समारोह का आयोजन किया था।

वह अपनी एंटीशनल प्राइवेट सक्टरी श्रीमती मुन्ना जी० लाल के साथ राजधानी में सबेरे सबेर ही बबलू की कोठी पर गया था। बबलू उस समय नहा रहे थे। उनकी पत्नी मुन्ना की देखकर मुस्कराई बोली 'वाह छुटकनू भया भाभी न आए और हम लोगों को पूछा

अरे यह तो मेरी नई प्राइवेट सक्टरी है भाभी। वह हमारे हेल्थ आफिसर दुष्ट गोयल के चक्कर में बेचारी न बड़ी बेइज्जती और तकलीफें उठाइ हैं। बेचारी को मजबूरिया का लाभ उठाकर गोयल न करीब

करीब इन्हें बानूनी तौर पर फसा ही दिया था। यह और इनके हसबण्ड बेचारे हमारे बवाल की शरण में आए। बसू बिब्ली थे इसलिए मुझसे ही बातें हुईं मैंने गोयल वं जाल स निक्कलन के लिए इन्हें अपनी एंटीशनल प्राइवेट संकटरी बना लिया और गोयल के खिलाफ एव हनफिया बयान दन करवा के गिविल हॉस्पिटल का नौकरी में भी इनका मुक्त करवा दिया। निम्नी शरीफ औरत का तय करना आजकल गोयल जैसे ब्यूरोक्रेट का बायें हाथ का सत्त हा गया है।

कुवरानी साहज वाली आज ये नशन में बिरतू भया का आर्टिकल मुहागी सरमुतिया पर भी ता आया है। बिरतू भया न आपके दास्त पर भी नो ध्यम्य बाण मारे हैं।

सतोपी वाले भाभी, बवाल बेचार इसमें जर ही क्या सकत है, आप ही जतलाइए। जय वं कारे-बोरे नेता ता है नही मंत्री है। और सरकार ता एबीडे-मठ पर चलती है। क्या किया जाए? सरमुतिया और मुहागी गाना ही से मुझ सण्ट परसेण्ट महानुभूति है पर आप ही जतलाइए, कारी अफवाहा पर सरकार स्वतन्त्र कुमार का कस पकड़ सकती है?

घोड़ी दर गद माननीय गृह राज्य मंत्री नहा धोकर जाए। कुवरानी साहिबा उस समय चाय नाश्त का प्रयत्न करने चली गई थी। बवाल मुनंदा के पास बैठने हुए बाला, आप मुनंदा हैं न?

मुनंदा न गदन धुका कर शमाय स्वर में कहा, जी।

‘हमारे बच्चे वं डा० गोयल में ता इनकी—

मुस्कुराकर सतोपी वाला अमा उस भुनो, अब में भर साथ मरी मिसज का राल प्ने करने के लिए हांगकांग जा रहो हैं। इनके पासपाट के लिए आया हू। एव सिफारिशो पत्र लिख दो पासपोर्ट आपीसर की। शाम के फरान में इनकाइट करने जा रहा हू। तुम्हारी घिटटी देखर वह बात भी साथ ही साथ करना आजमा।

श्रीमती मुनंदा सतोपीप्रसाद और श्री सतापीप्रसाद के नाम ॥ वन पालपाद पर दाना एव हफत के बाद ही हांगकांग उठ गए। बवाल मंत्री के सम्मान में मन्त्रियों का शानदार पार्टी में जा मिरमिता बना ता पाटिया हाजी चली गई। एमा समयता या कि अपन-अपन सम्माना में इन बेशुमार पार्श्वों में जाना ही प्रत्यक्ष मंत्री का प्रथम राष्ट्रीय महत्त्व का काम हा गया हा। इस समय हाई स्कूल और इण्टरमीडिएट के दम्नहान चल रहे थे। बिरतू और चौहान अपनी-अपनी ट्यूशन में ही अधिक समय दत थे।

बिपर तिनव

रमेश अपन ममेरे भाई के विवाह म सम्मिलित हान क तिण अपनी ननिहाल चला गया था। हरसुख और उसक बबील पिता म अधिक नहा बनती है। दोनों एक दूसरे स बचन ही रहत हैं। हरसुख अपन पिता का इकसीता बेटा है इसलिए बहुत नाराज हावर भी वह उसस सम्प्रघ बिच्छेन करन की मन स्थिति म एक क्षण भी नहीं आ पात। पिता चाहत हैं कि एल०एल०बी० करके वह अपन पतृक पेश म ही आ जाए किन्तु हरसुख अपन पिता के मुह पर उनके बकालत क पेशे पर लानन भेजना है। दो बवारिक मा यनाआ का सघय चलता ही रहता है।

देखत ही देखत परोक्षाए बीत गई। गमिया आ गई।

नौ

बिल्गू का कमरा। शाम का वक़्त। भर्मी बहद। हवा करन के लिए अखबार दफती और एक टूटा हुआ हाथ का पखा। सत्तार का प्यास लगी। उठकर सुराही के पास तक गया। उलटी पूरी ही उसट दी किन्तु एक बूद पाना न निकला। बोला 'मो यार, अपनी ता करवना हो गई।'

धाना की सखी सत्तार की बात से टूटी। रमेश बिल्गू और चौहान को नरुंरें उस तरफ गइ। हम पडे।

बिल्गू हसकर बोला, 'जा बेटा, नीचे क पब्लिक नल स अपनी प्यास और गम कर ला। हरसुख कमबकन आया नही। वही पडोसिया के घरा से चाचा मामा नानी मामी बन्क तेरे लिए ठडा पानी ला सकना था।'

चौहान बोना, 'जावे नल से सुराही भर ला न यार।'

सत्तार न कहा 'अवे तो जेब से एक अठनी भी निकाल दे ताकि एक किलो बरफ भी ले आऊ।'

इस बात का उत्तर बिल्गू ने दिया 'यटा आजकल जेब खाली है। मइ जून म एक भी टयूशन नही मिलती।'

चौहान न अपनी जग टटोली, एक चबनी निकल हो आई। 'आधा बिला ही ले आना।'

हद है यार। यह इन्दिग सरकार भी महुगाई पर कष्टाल नही कर पा रही है।'

अमा इन्दिग जी क्या काई भी पार्टी आ जाए मगर महुगाई को ताड न सवेगी।

'महुगाई की समस्या तो है ही, देश के विभाजन की समस्या भी आ रहा है। अमम गल म अटका मछनी का बाटा बन गया है। फिर भी यह दयो कि यहा विद्याभियो का समठन बसा बना है। सारे अधिकारिया का घेराव किए घठ है। सारे काम ठप्प कर दिए।'

इससे हम सीखना चाहिए यार। अखिन अलम छात्र मय न अपनी

संगठन शक्ति सही सरकार का महा तब मजबूर किया है कि वहां का राज्यपाल कमलाहकार मरीन अब उनसे बिना शर्त के बातें करने पर तयार हो गए हैं।

जा भी हा अभी विद्रोह की आग यहां पूरी तरह से धमी नहीं है। यह पिछली 21 तारीख का असम का नौ नगरा म सना बुलानी पडो थी जनाब।

चोहान और रमेश की बहस में बिल्लू की बीबी के घुए और उसका बाना न योगदान दिया। इधर वह अपनी बिना से भी परेशान है। सासाना परीक्षाएं पूरी हान हो ट्यूशन में बढ़ हो जाती हैं। कच्चे में दो चार चारीचकारिया के सिवा और कोई खबर ही नहीं मिलती। तपती धूप और लू में साइकिल पर राजधानी जाकर सचिवालय और सूचना विभाग के फेंके लगाता है। कुछ खबरें बनाता है नया फीचर लिखने के लिए कुछ न कुछ मसाला लेकर भारी धूप में चार बजे तक घर लौटता है। हिंदी और अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं में लिखता है। 'एक स्वीकृत हो जाने पर उनके छपन और फिर पस आने की प्रतीक्षा में ही उसके दिन बटते हैं। जाम तोर से चक्के आता है। दिल्ली कलकत्ता और बंबई से आने वाली चक्के वकी में महीन-डड महीन के बाद ही भुन कर आती हैं। ट्यूशन में न रहने पर हम आकाशी वस्ति के दिना में कभी भूखे रहने की नीवत भी आ ही जाती है। आज भी यही हालत थी असल में कल शाम से ही वह भूखा है। बीडिया भी चुकने पर आ गई हैं। सोच रहा था कि छुट्टी में भया होना तो उन्हें एक्सप्लायट किया जा सकता था। मा के पास जान को जी ता हाना था मगर यकन कुछ ऐसी थी कि फिर से साइकिल चलान में आलस आ रहा था। चाय का तलब भी मगर उसे भी अपनी कल्पना से ही तप्त कर लेने के सिवा कोई चारा न था। इसलिए बहस में ही अपन आपका उन्मा लना ही पसंद किया। कहने लगा असम के विद्यार्थियों को ऐसी अव्यस्त एवता के लिए बधाई देने को जी तो चाहता है मगर सब पूछो तो गप्प के हक में यह अच्छा नहीं हो रहा।

चोहान गरमा गया क्या अच्छा नहीं हो रहा है जनाब? बचर अपन ही घर में बंवास से घुट रहे हैं। बगानी मारवाडी मुसलमान सभी ताउनक घर में बैठकर उहीकी छाती पर भूग दन रहे हैं। असमिया लाग बचारे विद्रोह न करें तो आखिर क्या करे?

रमेश बोला लेकिन यार जो बगाली मारवाडी और मुसलमान

वहा सो-सो, पचास पचास वर्षों से बसे हुए हैं उन्हें बाखिर कैसे निकाला जा सकता है।

हरमुख ने उसी समय कंधे में प्रवेश किया। देखते ही बिल्लू नाटकीय मुद्रा में आला, "निकाल साले वरना निकल जा।"

जमा, तुम तो पहेलिया बुझा रहे हो। क्या निकालूँ?"

कम से कम एक रुपया जिसमें खबानी एक पकेट चाय के लिए और पिछहत्तर पैसे में जितनी शक्कर आए स आओ बेटा। सत्तर बरफ लेने गया है। तुम चीनी से आओग तो यारा क मिजाज शरबती हा जाएग।

'जमा बारह आने में आएगी जितनी ज्यादा से ज्यादा सौ ग्राम। पीका शरबत पीने से भला क्या फायदा।

जमा यार न होने से कान मामा ही भले।'

हरमुख बोला 'अगर तुम्हारे स्टोव में मिट्टी का तल है तो मैं चाय का पकेट और पचास ग्राम चीनी लिए आता हूँ।'

'अब तल तो ईरान और ईराक पी गए। जाने दो यार बरफ आ ही रही है। ठंडा पानी पी-पीकर जमान को कोस लेंगे।'

ठंडा पानी पी-पीकर बहसें फिर गरमा उठी। अचानक आया मुद्दागी—
दुबना पका मगर समतमाया हुआ। सब ओग उससे गले मिलने के लिए छेड़े हो गए।

बिल्लू बोला तरे दुर्भाग्य की पीडा का मैं ममझ रहा हूँ दोस्त।'

'जेल से निकला हूँ मगर अब खुनीनाल के बेटे साले की गल्ल काट कर फामी पर चढ़ने का ही इरादा है। मान न मरी सम्मुतिया को छीनने के लिए ही " फिर वह न सबा, पूर फूटकर रो पड़ा।

बिल्लू ने उसकी बाहों में भर लिया, वाला इतना निराश न हो मुद्दागी हम सब तुम्हारे साथ हैं।'

मुद्दागी ने बिल्लू के दोनों हाथों का बंधन दीवान आवश में हटाते हुए कहा जब तक मैं उन दोनों बाप-बेटों की गल्लें काटकर उनसे घर की बह-बेटियाँ को बेखुश न करूँगा तब तक मुझे चैन नहीं आएगा।

हरमुख भी उत्तेजित हो गया बोला अबले तुम ही नहीं हम सब बागी बनेंगे मुद्दागी। पूजीपतिया का खून पिय बिना

बिल्लू बोला, याद रखो कोरी तावबाजी से काम नहीं चलेगा। हम खूनछरावे में हम लोग गिरफ्त में आ जाएंगे।

तुम कायर हो बिल्लू।

म कायर नहीं बल्कि अक्ल की तलवार से दुश्मनों के गले काटना चाहता हूँ। जाखिर एक बात बतलाओ कि यह स्वतंत्र कुमार साला किस दूत पर अपनी राक्षसी लिप्माएँ पूरी किया करता है? काली कमाई की धनशक्ति पर ही न। इन सालों के छिपे गादामों का पता लगाओ। उस जगह का धराब किया तो जनता भी तुम्हारे साथ हागी।'

हरमुख बोला हा यार बिल्लू की बात में दम है। मुहागी भी इन बातों में प्रभाव में धीरे धीरे आ चला था। सहसा सटके के साथ वाला 'इसका एक गोदाम तो मैं जानता हूँ। हमारे कटारीपुर की चौहद्दी के पास है। शेषनाग वाला टीले से जरा आगे ही जमीन के ज़रूर उसका गोदाम है।

तुम्हें कैसे मालूम मुहागी?

अर अपनी आखिर दख्खा है भैया। जब से सनाग की महिमा नहीं फली रही और ई जगह जगल रहा। तब हम अपने दोर चराने बहा जाया करते रहे। तब छ मात बार हमने बहा टुकें आकर खड़ी होती देखी थी। एक गुण्डा साला साधू बाबा बनाकर बठाया गया है वहा। वहि की झोपड़ी से गुदाम का रस्ता है। हमारे गांव वाले सब जानित है। मगर जब उधर गऊ चरान की मनाही हुय गई है। मुहागी में बतलाया।

हरमुख की आखों में भी स्मृति की चमक आई। बोला मुहागी की बात में दम है बिल्लू। तुम्हें याद हागा कि मास्टर प्लान में शेषनाग माग का जाग बनाकर सीधे ग्राण्ट ट्रक रोड से जाड़ने की बात उठी थी। लेकिन लाला चुनालाल ने ही वह स्कीम ठप्प करवा दी थी।

बिल्लू ने कहा मैं इसका पता लगवाऊंगा।

पता लग जान के बाद बिल्लू की यह चिन्ता हुई कि थमदान आरम्भ करते हा चुनीलाल अपना चेहरा बचाने के लिए हर तुक-बतुक का बाल बाजिया चल जाऊंगा। उसने एक मुदर योजना बनाई। प्रदश की नई सरकार के स्वामन्त शासन मंत्री श्री अशर्फीलाल से एक डपुटेशन नकर मिला। बिल्लू ने आवेदन-पत्र दोना हाथा से आगे बढ़ात हुए कहा अर प्रगतिशील युवकों की सरकार आ गई है माननीय और हम छात्रगण भी उसमें सहयोग करना चाहते हैं।

माननीय अशर्फीलाल नताबत मुस्कराए। आवेदन-पत्र लेकर पटना शुरू किया ता मुस्कराहट कुछ और बढ़ी। अखी भय पर रखत हुए प्रसन्नतापूर्वक बान अरे भाई आपके क्षेत्र के मंत्री बुवर उत्तममिह है

उनस उदघाटन कराते । बहरलाल विचार बहुत अच्छा है आपका ।”

बिल्खु खट से बोला हम लोग प्रगतिशील छात्र हैं माननीय । बुवर साहब ता हमारे है ही मगर यह काम आपके शुभ कर कमला से हो तभी हमारा होमला बढेगा । क्याकि आप हो तरुण कविनट म सबसे तरुण मंत्री हैं ।

घौघरी अशर्फीलाल अपनी मरुणाई पर फूल गए । बोले लिखवा दो भाई किस दिन करोगे ?

‘ परमा, सुबह दस बजे ।”

मंत्री जी पी० ए० को दखकर बोले ‘ डायरी म नाट कर लो ।”

पी० ए० वाला, लेकिन परमा हजूर आपको आठ बजे सबेरे आलम पुर दौर पर जाना है ।

यह लो और भी अच्छा है । आप नौ बजे उदघाटन कीजिएगा और उधर स ही आनमपुर चले जाइएगा । उधर स सिफ दा-डाई फर्नीचर कच्ची सड़क स जाना हाभा यह अवश्य है परंतु युवका का नायकत्व यदि युवा मंत्री जी करेंगे तो इससे हमारा मनोरंजन बढेगा ।

सब बात तय हो गई । उदघाटन के दिन जानबूझ कर सबेरे के अख बारा म इस सम्बन्ध की कोई सूचना नहीं दी गई । लेकिन छात्रों की एक अच्छी-खासी भीड़ वहा उपस्थित थी । नगर के प्राय निधन जन जनार्दन को भी लडके घर लाए थे । श्रमदान का उदघाटन समारोह बड़ी धूमधाम म हुआ । पहला भावना माननीय स्वायत्त शासन मंत्री न ही चलाया । उनकी फांगे भी ली गई । छात्रा के रचनात्मक उत्साह की मंत्री जी ने भूरि भूरि प्रशंसा की । मंत्री जी विदा हुए ।

सड़क निर्माण की सूचना पाकर चुनीलाल चौक मगर बाड़ी एकाएक उनके हाथ से निवृत्तता हुई नजर आ रही थी । लडके उम भूमि पर जब दस्त घेराव किए हुए थे और जान म खुदाई काय कर रहे थे ।

पहला भावना शोषण की नकली साधु बाबा न ही मचाया ।

मारो सान को सासा चारा का दनाल है । साधु बाबा ठोंक-पीट कर मुजा किए गए । नकली साधु पत्ते छू भागा ।

मंत्री जी ने अनानक उदघाटन की खबर राजधानी से जय बख्शे के पान पर पहुंची और उदघाटन उभी स्थल का जहा चुनीलाल का गोनाम है ता दरोगा जी ने कान ठनक । उन्होंने मंत्री जी के माघ आए हुए बखान साहब के कान म कुछ कहा । तब ता घर का नहीं चल

सकता था।

सबसे पहले पापड़ी ही गिराई गई। जहाँ नकली बाबा का चूल्हा था उस स्थान का मुहागी व निर्देश पर पहले छोड़ा गया। दा हाथ खींचते ही भुरभुरी मिट्टी उठा के फेंकते ही पत्थर की चटिया मिली। लडकी म उमाहू आ गया। जिन् मानूम था व नये उत्सास म थे और जिन लडकी को इस रहस्य का पता नहीं था वह कौतूहलवश आगे गुंके गुंके पड़ते थे। पत्थर बहुत भारी नहीं था। आठ दस कुदाला की नोक से ही ऊँचा उठान लगा। नीचे दरवाजा और दरवाजा पर ताला। बिल्लू चिलाया, देखो भाई यह है शहर के सबसे बड़े चोर चुनीनाल का छिपा हुआ गोदाम। यही है वह जाली शक्ति जिसके बल पर उनके लडके स्वतंत्र कुमार ने मुहागी का घर उजाड़ा है। कितने बेचारे-बेचारिया का कलेजा जलाया है।'

बदला लो बदला लो की आवाजें उठने लगी। ताले का कुण्डा तोड़ डाला गया। नीचे सीढ़िया नजर आ रही थी। बिल्लू ने रमेश के कान में धीरे से कहा 'तुम इसकी फोटो लेकर कमर सहित भाग जाओ। थोड़ी देर में ही अब कुछ न कुछ उत्पात होने वाला है। फोटो डेवलप कराके रखना।

पापड़ी के आसपास की जमीन और भी जोश से खुदने लगी। मिट्टी हटाते ही गोदाम की छत चमकने लगी। लडका का उमादकारी विजयो ह्लास हुल्लड के रूप में लगभग आधे कस्बे में गूँज उठा।

चुनी का खबर लग गई थी। नकली साधु पहरेदार भी उनकी काठी तक पहुँच चुका था। पुलिस की दो ट्रकों घाने से चले पड़ी। बिल्लू पहले से ही हाशियार था। चौहान को चौकसी के लिए पहले से ही खड़ा कर दिया गया था। जैसे ही उसने आकर खबर दी वैसे ही बिल्लू ने अपने साथिया से कहा एकडाई में न आना मारो इधर उधर छितराकर भाग चलो। भागो भागो।

हरसुख बोला अमा अब तो तुम्हारे बबलू राठीर मंत्री हैं।'

बिल्लू ने कहा प्रवास न करो। तुम मुहागी सत्तार बगरह को लेकर भागो। बिल्लू ने दोनों हाथों से उन्हें लगभग थकेल ही दिया। कुछ लडका न सुना, कुछ ने नहीं सुना। बेईमानी का एक स्पष्ट प्रमाण उनके सामने था और वे बड़ जोश में थे। सत्य और आदश के दूध में उबाल आया था। ट्रकों भंडान के पास पहुँच गई। यानदार ट्रक में लगे लाउड

बिखरे तिनके

स्पीकर से गरजने लगे, 'आप लोग यहाँ से चने जाइए।'

कोई विद्यार्थी चिल्लाया 'हम यहाँ श्रमदान कर रहे हैं।'

'यह श्रमदान नहीं होगा।'

बिल्कु ने चीखकर कहा, 'जबर होगा। खुद मन्त्री जी इसका उद्घाटन कर गए हैं।'

ट्रक के लाउडस्पीकर स दरोगा जी का आदेश गुंजा, 'मैं पांच मिनट का समय देता हूँ। भीड़ तुरंत यहाँ से चली जाए।'

ट्रक के सिपाही लाठियाँ ल सक्ती नीचे उतर पड़े। बिल्कु चिल्लाकर बोला 'भाइयो! तुम लोगो मत जो नामद हार के चले जाए।' फिर पुलिस से ललकार कर कहा 'आप लोगो को सज्जा नहीं आती है। यहाँ एक चोर बाजारिये का गोदाम छिपा है और आप लोग उस समाज विरोधी का ही पक्ष ले रहे हैं? याद रखिए यदि पुलिस की लाठियाँ चली तो हम भी बगला लेने के लिए तयार हैं। छात्रों के हाथ में फावड़े और कुदालें हथियारों की तरह उठ खड़ी हुई। लेकिन वे भी ही कितनी! अधिकांश लड़के व जनता तो दशक बनकर आई थी और निहत्थी थी। ट्रक से हुकुम गरजा— 'शुरू करो।'

खाकी वर्दी की लाठियाँ इधर-उधर घूमने लगी। आधी स प्यादा भीड़ छट गई। दरोगा वाली ट्रक फावड़े-कुदालें लिए हुए लड़कों की ओर बढ़ने लगी।

फावड़े कुदालें कुछ न कर सका। लाठियाँ का जार अधिक था। बिल्कु की पीठ पर लाठी पड़ी। वह लड़खड़ाया मिरा। फावड़ा उसके हाथ से छीन लिया गया। भागत भागते भी दो लड़के बिल्कु को बचाकर ने जाने लग 'लेकिन पुलिस के घेरे में आ गए। बिल्कु समतल दम पर द्रष्टु 'लड़के थोड़े समय के बाद पुलिस की गिरफ्त में भी आ गए। जो स्थान मल की तरह उल्लास से गुंज रहा था वह मरपट की तरह सूना हो गया।

दस

कसर भर म तरह-तरह की खरों कली हुई थी। बिल्लू क गिरफ्तार हान को सूचना गुरसरन बाबू को भी मिस गई थी। पुत्रमोह की रसायन स उनका स्वाथ भरा कायर हुन्य रूपी पत्थर भी पिघल उठा। मन के बावलेपन म पहले घर क भीतर ही गए और अपनी परनी पर ही चिल्लाने लग लखली न अपन सपूत की सीला। उल्लू के पटठे ने मेरी नाक ही कटवा नी। पुस्त दर पुस्त की आकर चुल्लू भर पानी म डुवो नी मालायक न।

बिल्लू की मा घबराकर वाली अरे हुआ क्या ? किसन क्या किया ?

और कौन करेगा ? आपक बड होनहार सपूत बिल्लू गिरफ्तार हा गए है।

ह। मा के दोनो हाथ कलजे पर आ गए। आखें फटी फटी सी हो गई और एक क्षण क लिए उनक मन म स्तब्धता छा गई। गुरसरन बाबू आवेश म आकर बोलत ही जा रहे थ। चुनीलाल से लडन चले थ सरक। अर करोड़पनी आन्मी है। सभी साल बईमानी म घन पदा करत हैं। काई नइ बात है। भगवान वेन्यास जी खुद अपनी कलम स लिख गए है कि धन कोरी सरुवाई से इकटठा नही किया जाता। मगर आपके साहजजान ता दुनिया क सबन बड अकलमद है।

बिल्लू की मा घबराकर पति से चिपट गइ और कहा कुछ भी करा मेरे बिल्लू को बचाजा। अब तो छटकनू का दोस्त मतरी है। जाओ उसके पास। तुम्ह मेरी कमम। मैं तुम्हारे परा पडती हू।

क्या बताऊ छटकनू इम दम हैं नही। वही मामला मुलझा सकते थे। घर एक बार तो राजधानी जाना ही पडेगा। देखो बबलू क्या करत है ?

अदुल मत्तार चौहान और हरमुख तीनों ही अपने-अपने कामा म मुस्तद थ। मुहागी रमेश क घर म भूसे वाली कोठरी म छिपा दिया गया

था। रमेश के घर का चुना नीवर मँकू जात का अहीर और दूर पास के रिश्ते में मुहागी का कुछ लगता भी था। रमेश मँकू बाबा के हाथ-पर जाकर मुहागी की रक्षा का भार उठ दे आया था। मोके की तस्वीरें रमेश न खींची थी। उन्हें सबर बह और अब्दुल सत्तार राजधानी की आर माइबिला पर दौड़ चले। रमेश चौकनी चाल में बम्बे भर में डोलते हुए गोणम के सत्य का उल्पाटन करने लगा। ऐसा ही मैं जान और भी बिलन गोणम हूँ। पंडित का परशान करके ही ये लोग धनी बनते हैं और धन के जोर पर ही पुलिस का भ्रमण हाथ का गिलीना बनाते हैं। चुनी का लड़का माना गरीब की जोरत उठा के ले गया और जनता के काना में जूतक न रेंगा। इनके पाप का उदघाटन हुआ और पापी का न पकड़कर उल्पाटन करने वाले हमारे बोरनवा बिल्कु शीवास्तव को पुलिस पकड़कर ले गई। यान् रक्षा आज एक गरीब की जोरत उठाई गई है कम दूसर की परसा तीमर की उठाई जाएगी।

बहुत जनता के जुलूस में सबसे पहले बम्बे के रिक्शे वाले ही शामिल हुए। फिर धीरे धीरे भीड़ बढ़ती गई। चुनीलाल हाथ हाथ। स्वतंत्र कुमार हाथ-हाथ। चिल्लाते हुए वे मोर्चा देने के सामने पहुँच गए। नारा बोल गया। मुहागी की औरत का पुलिस आगद कर। दरंगा जी बाहर आ गए। हाथ जोड़कर बोले आप सब लोग शांत हो जाए।

शांत कैसे हो जाए जी। रकाबगज का थानदार सागा लाठी चार्ज करना गया और आप कहते हैं कि शांत हो जाए। चुनीलाल का लड़का मुहागी की औरत को उड़ान के लिए इतना बड़ा पडम न करे आर हम चुप रहे जाए। आप भी हमारे भाई हैं। आपको घर का स्त्रियाँ न माय ऐसा अनाचार हो और आप क्या खामोश बैठेंगे ?

घान का फाटक बर था। दरामदे में दरंगा श्री और दाधार पुलिस बात चुपचाप उड़ के और फाटक के बाहर रमेश गरज रहा था। दरंगा समझदार था। उसने शांतिपूर्वक कहा देखिए मुहागी की औरत के गायब किए जाने की रिपोर्ट तो आप माय दर्ज करवा ही चुके हैं। हम विश्वास जिलाते हैं कि

रमेश फिर गरजा हम किमा का विश्वास नहीं करते। जब तक मुहागी की परती तलाश करके पुलिस नहीं लाएगी तब तक हम यही बैठकर धरना देंगे।

महाजय मैं आपकी बात का पूरा समर्थन करता हूँ। मगर मेरी

प्राथना है कि अगर घरना दना है तो कप्तान माहूव की काठी पर जाकर दीजिए। हम छोटे लोग पर नाराज होने से आपका क्या मिलेगा। हमारे हमारी यह चीज़ी तो पटना के कप्तान में जानी भी नहीं है। हम क्या परे शान करत हो ?

लोगों की भीड़ों और समझौतों भरी वातावरण में उन ने पुलिस कप्तान की काठी की ओर बढ़ना शुरू किया। हिन्दू आध्यात्मिक को रिहा करी चोर-बाजारिया का लूटने सरस्वती देवी का अक्षरण करने वाला का दण्ड दा। कप्तान का कोठी के बाहर कुम्पाय पर हुंकार का पहाड़ उठा हो गया। कप्तान माहूव की काठी पर पहरा देने वाले मन रिया का उद्देश्य पर सगिनें भी चढ़ गई। घण्टे-मका घण्टे तक अनवरत क्रम से नारे चलत रहे। एकाएक जन की दो टुकें आ गई। लड़के गिरफ्तार करके टूका में भर जान लग। थोड़ा का बहुत-सा भाग जो उमास्मृता स्थित रहा था दुम दबाकर घायल गया। फिर भी दानो टुकें ठगाने भर गई। घरना समाप्त हो गया लेकिन विश्वर में बंद मुवा शेर जनमानों पहलने तक सड़का पर नारे दहकाइत रहे। नगर के वातावरण में क्षोभ भर उठा। कई सरकार के लिए प्रोद्य भते यवन जगह जगह जवाना से बाहर निकलकर जनता और सरकार के बीच में भनामाति य बड़ा रह था।

बबलू राठीर एष पुराने छोटे ताल्लुकदार के उत्तराधिकारी थे लेकिन अपा छापकाल से ही के समाजवादी विचारधारा के पोषक थे। आरम्भ में छात्र नेता पिर बाग में अपने बन्धु के परम उत्साही नेता बन गए थे। बाद में मजदूर गोधी की युवा नेता में भी भरती हो गए और जनता सरकार के दिना में महामाई विरोधी कई आन्दोलन का नेतृत्व किया। भरी सभाओं में कई चार-बाजारिया के नाम बघडके लिए और सरकार से उन्हें पकड़ने की मांग की। उनका नहने वे दहला यह पडा कि अपने फाम का अपनी पुरानी बिसान प्रवा का साथ देकर काआपगटिक फाम बना लिया। श्रमिक किसानों का काआपगटिक मजदूरों के मिलती थी लेकिन त्याग के नाम पर निधन मनायता बाप में लिए सबके वेतना का कुछ भाग हजम भी हो जाता था। डिवीडण्ड बांटते समय भी बबलू राठीर कुछ न कुछ अथशान्तीय जागूरी के करिश्मे कर ही स्थिताने है लेकिन सब मिलाकर उनका प्रजावाणी चहुरा अब तक आमतौर से उजला ही रहा है। चुनाव जीत गए मही नहीं यह विभाग के राज्य मंत्री भी नियुक्त हुए। कस्बे और आसपास के गांवों में उनके अभिनन्दना की होड़ लगी। सबसे अधिक

चमत्कारी तमाशा उ होन यह दिखलाया कि अपनी हर अभिन दन मभा म व साइकिल पर ही गए। उनक शहा आदि सरकारी सुरक्षात्मक पुछला का भी माइकिलो पर ही चलता पडता था। वदलू राठौर अभी तक मो राजी-खुशी हीरा बन रह परतु इस चुना व गोदाम काण्ड व कारण उनकी मन स्थिति साप छछूंदर की सी हा गई, निगले ता जघा उगल तो कोली।

बाबू गुरसरन साल बस स राजधानी पहुँचे और रिक्श स बुर उतमसिंह की सरकारी कोठी तक। पहल ता प्रवण की मुजाइश ही न लिखलाई दो। सतरी ने टके सा जवाब द दिया जनता से मिलन का टाइम चार से पांच बजे तक का है।

'भया मंत्री जी मुझे अपना बुजुग मानत हं मेरे लटक के बट अच्छे दोस्त ह मैं उहीक मतलब क एक बटे जम्मी काम से आया हू। जाकर मेरे नाम की एक पर्ची तो द दो।

पर्ची पहन स ही लिखकर जब म रख लाए थ, जो पांच रुपय व नोट के साथ सतरी जी के हाथो म रख दी। सतरी नाम की पर्ची भीतर अदली को देकर चला आया। घड़ी की बड़ी मुई ही तही छोटी भी आग बडती रही मगर एक घंटे तक काई जवाब ही नहीं। गुरसरन बाबू की बुजुर्गी और आबहदारा को घीरे घीरे ताव भी आ चला। मगर सतरी से बोले, 'भया मंत्री जी अगर यह सुनेंग कि मैं उनक दरवाजे स बिना मिले ही लौट गया ता आप लोगो पर नाराज हो जाएंगे। मैं मामूली आने वालो म नहीं हू। व मुझे चाचाजी कहकर पुकारत हैं। क्या समझे ?'

सतरा जाना उनके भेजेंटरी से पूछिए।

गुरसरन बाबू अदर पहुँच गए। अदली स कहा, मैं पर्ची भेजी थी।

अदला वाला, माननीय मंत्री जी रिजी है।

गुरसरन बाबू को ताव आ गया। चिक् उठार और सेफ्रेट्री के कमर म घुस गए। कहा मैं मंत्री जी का चाचा हू। पान मिठावर कहिए बि सतापी के फादर बाबू गुरसरन साल आए हैं।

बहन का रौखीना लग प्रभावित कर गया। पी० ए० ने टेलीफोन उठाकर मंत्री जी मे कहा। दा मिनट म ही राज्य गहमवो चटपट आ पहुँच और गुरसरन बाबू के घुल छुकर बोल कम तकलीफ की चाचाजी ? आइए अ दर बलिए। नमरे से निवसत समय गुरसरन बाबू की नजरें

पी० ए० म इस तरह मिली मानो पूछ रही हो। अब समझे बेटा, मैं कौन हूँ ?

अब न म बठकर चुनी क गानम का सारा हाल सुना। तिल्लू की गिरफ्तारी का समाचार भी सुना। घण्टी बजाई। अली आया। पी० ए० को बुलाया। पी० ए० आया।

हमारे बस्व क डी० एम० पी० का फोन मिला आ और हन लाइन दा। फिर पूछा सतापी कब तक जा रहा है चाचा ?

अभी तक तो कोई खबर मिली नहीं कुवर साहब। पिछले तटार म आया था कि हांगकंग स यूगाय भी आएगा।

बिल्लू का अब कण्ट्रीन म नया हागा चाचा। इसका बिगो न बिगो गवर्नमेंट प्लास्ट पर लगा हो दना हागा।

अब यह मय ता जाय ही नाग कर सकत हैं मर बश का ता रहा नहीं तिल्लू। क्या बतलाऊ इसकी चिंता मुझ चन स बुटाया भी भागन नहा दगी।

तब तक लाइन मिल गई। राज्य गहमन्ती घोन गिरफ्तार किए हुए सब नडका की फौरन छोड़ दा। और चुनीताल क सडक स भी बहला दा कि मुहागी की औरत अगर चौकीस घण्टे क अंदर अपन घर न पतुची तो मैं उनक खिलाफ सख्त कामवाही करूंगा।

चौकीस घण्टे के अन्दर सरमुतिया की लाश उसके घर क पिछवाड नाल म मिली। खबर बिजला का तरह दीड गई। तब तक बिल्लू आदि भी आजाद हा चुक थ। उधर मुहागी बाबला हा उठा था। रमेश और हरमुण न जबन्स्ती उम पकडकर एक कमरे म बंद किया और बाहर स कहा, दिमाग ठण्डा करो मुहागी, तुम्हारी पत्नी का हत्यारा बचकर नहीं जाएगा यह हम बचन दन है। घण्टे नड घण्टे म ही तुम्हें सूचना मिल जाएगा कि हमने क्या किया ?

बिल्लू क कमरे म बठक जुड़ी। पडाम क घर से कुछ फोन राजधानी किए गए। कुछ अपन कस्ब के दो इन्टरमीडिएट कालजो क छात्र ननाभा क पास दोरे। परीक्षा के दिन पास थ। घण्टे भर म ही पाच मो त्रुड लडको न चुनीताल की हवनी घेर ली। सरस्वती क हत्यारे का बाहर निकानो। उनकी काठी क टनीफोन तार काट दिए गए। उनकी कोपी क दरवाजा और चौखटों पर पेट्रोल छिडककर जाम लगा दी गई। लडका की इस कायवाही ॥ पुलिस दल सतक ता अवश्य हुआ पर उपकप्तान स लेकर सब इस्पेक्टर तक कोई कारवाई करने म हिचक रह थ क्योंकि कल स्वयं राज्य

मन्त्री जी ने ही आदेश देकर लडका को छोड़वाया था। उ हँ फान पर मारी घटना की सूचना गई। राज्यमन्त्री जी का आदेश हुआ लाश व चारा तरफ बड़ा पहरा लगा दिया जाए। चुनीलाल के फाटक पर जा आग लगाई गई है उसे फौरन बुझान का प्रबंध किया जाए। इसमें नडक अगर विरोध करें तो जामू गस का प्रयोग किया जा सकता है। सरस्वती देवी का शव थड़ी धूमधाम में निकलगा। इसका इंतजाम कर रखिएगा। म यहाँ से रिजव पुलिस के दस्त भी भेज रहा हूँ।

चुनीलाल की काठी का फाटक जल रहा था। ऊपर के दरवाजा पर मशालें तान-तानकर फेंकी जा रही थी। पचास पुलिसमन की टुकड़ी और पाँच सौ क्रोधाग्र छाला की भीड़। भला मुकाबला ही क्या था। फिर भी पुलिस दल व दिवलाइ पड़त ही लकड़ों के साथ करत हुए बाहर निकलन लगे। सरस्वती देवी की मौत का बदला ला पूजीवादियों का नाश हा 'यह सरकार बदलनी है आदि' नार लगने लगे। चुनीलाल की काठी का मार्चा छोड़कर जाग बरती हुई छाल भीड़ से छेछाड़ करना पुलिस ने शायद अच्छा नहीं समझा। वह आत ही चुनीलाल के जलते फाटक को बुझाने का प्रयत्न में लगी। नककाशीदार फाटक चौखट इस तरह से तर की गई थी कि लकड़ी का बाहरी भाग लगभग जलकर विद्रूप हो चुका था। चौखट से लगी आयन पेण्ट की दावारा पर भी कुछ जरब आ गई थी। ऊपर फेंकी हुई कई मशाला में से भी एकाग्र कारणर साबित हुई। ऊपर के बरामदे का लकड़ कुत्तिया जलने लगी था।

लडका के जान और पुलिस के आन की बात सुनकर चुनी और स्वतंत्रकुमार दोनों ही हस्तम मोहराय की तरह अकडत हुए ऊपर के बरामदे में खिलाई दिए। नीकर भीतर से भी पाना की बाल्टिया भर भर फेंक रहे थे और बाहर से भी पुलिस वाल और माहिले के दम-भाव लोग भी बाल्टिया पर बाल्टिया डाल रहे थे। अन्ध-भाव मिनट में आग का तमाशा घुम हा गया। चुनी की काठी का अघजला फाटक फिर खुना और चुनी के क्रोध में सपत हुए बाहर आण इम्पक्टर से कहा, यह मेरा आपन शरीफ का रत्ना मुश्किल कर दिया है।

इम्पक्टर ने आग बढ़कर उनका जान में कहा "अपन घट को दो चार निम व लिए माफ कर दीजिए। आप भी शांत रहिए। बुवर साह्य राज घाना से चल चुक हैं। सोनी हो दर में यहाँ होंगे। आपकी रत्ना व लिए मैं आठ गड़फलधारी कांस्टेबुल छोड़ जाता हूँ। क्या तूफान मचाया ॥

साला न। जय ता पुलिस की नाकरी साली क्या कहें। घर में चलता हू। आप भा शात बठिएगा। मुझ रिपान मिल चुकी है कि राजधानी स भी लडन चल चुक है। चुनीलान का जाय चूह का तरह फान दवाकर बठ गया।

जुलूम सडका स गुजर रहा था। दुबान पटापट बग हा गही थी। कानगाडारिया मुनाफाखोरा का धुली घमकिया दी जा रही थी कि इस नगर का एक भी गानाम जनता की आवा स ओगल न रह पाएगा। शहर म जातक छा गया। बस्त्र का सडका पर बिद्राही नार लगाकर घूमती हुई छात्रा की भीड सरस्वती दयी की साश व पास आ पहुची। तब तक बसलू राठौर की झडदार गाडी घटनास्थल क निकल वाली सडक पर आ पहुचा थी। बसलू को देखत ही बिल्लू उत्तजित हुआ मगर बबलू मन्नी ने अपनी चतुराई स बिद्राह का क्षण अपन हाथ म ल लिया। कार स उत्तरत ही नाटकीय ढंग म जिलू का कलज स लगाकर बिलयत स्वर म कहा, 'इस जयाय का बदला अवश्य लिया जाएगा बिन्नु अवश्य लिया जाएगा।

वात इननी कार स गही गई कि ओरो न भी मुनी। बबलू मन्नी की आखा म आसू भरे हुए थे। आलिंगन मुद्रा छाडकर पूछा कहा है सरस्वती दयी का शव ?

पुलिस आग पीछ। भीड छटती गई। शव की ओर देखा और फिर आसू बहात हुए आवश की मुद्रा म उत्तजित भीड का सम्बोधित करन लग, 'पूजीपतिमा व द्वारा पिछडे वर्गों की नारिया पर आय दिन अत्याचार बढन हा जा रहें हैं। हम इसका दमन करना होगा। उन बहादुर युवाभा का मैं हार्निक यथाई दता हू जिहाने एक कालेबाजारिय व गोदाम का उन्धान किया। बिल्लू श्रीवास्तव हमार बस्त्रे का रत्न है। आदि आदि बहुत सी बातें कही। और यह भी कहा कि इस शहीद बहन का शव सम्मान म निकाला जाए। सारा खर्चा व्यक्तिगत रूप स मैं दूंगा। तब तक राजधानी स भी साइविला पर लडक जान लग थ लेकिन जब घरवाला का मन ही ठण्डा किया जा चुका था तब बाहर वाला को मनान म भी देर न लगा। शव व सम्बध म पूरा कानूनी कायवाही की जा चुका थी लेकिन शव का श्मशान ले जान से पहले एग बार मुहागी का निखला देना जरूरी था। बसलू राठौर की झडेनार मरकारी गाडी पर बिल्लू हरमुख और चौहान रमेश के घर पहुचे। मुहागी व कमरे का द्वार खोला गया। अपनी ही धाती विजनी व पखे की छड म बाधकर मुहागी न अपन

बिखरे तिनके

आपको फासी लगा ली थी । जब द्वार खुला तो सबके सब देखकर धक् रह गए । पति-पत्नी की लाश एक साथ उठी । सारा नगर, बबलू मंत्री और बड़े-बड़े धनी-मानी भी शवयात्रा में शामिल थे । सुहागो और सरसुतिमा मरकर युवका के मन में अति की ज्वाला बन गए थे ।

ग्यारह

मरपट से सोटती भीड़ क्या सवण क्या असवण सभी का मा करणा और श्रोत्र स मय रहा था ।

अब पस वाला का जमाना है भया । गरीब की आबरू छतरे में है ।

मुहागी का पिता आग का पूला लिए हुए जब चिता की परिश्रमा कर रहा था तो लहखड़ाया गिरा और बेहोश हो गया । आग का पूला गिर गया । अब भीड़ उस वचान के लिए चिता के पास और लग गई । बिल्लू ने जलत पूले का अपनी चप्पल से बुझा दिया, जा ठीक मुहागी के पिता के सिर के बगल ही में गिरा था । अकस्मात पहचानन वाला ने दया कि प्रसिद्ध डाकू छिड़ा मुहागी के बहास पिता को कंधे पर डाल रहा है । वह उस भीड़ में से निवालकर ले गया । मंत्री पुलिस और भीड़ चुपचाप देखती ही रह गई ।

सरसुतिया के बूढ़ा माता पिता भी मरपट पर आए थे । किमीन कहा, इहास आग जलवा दो । बिल्लू नाराज हो गया । वाला मैं धम-धम की यह फार्मलिटीज नहा मानता । चिता में आग मैं दूंगा । हरमुख, ए चौहान, तुम दोनों बूढ़े-बुढ़िया को सम्मान रखना ।

चिता की उठती ज्वालाओं के साथ ही बिल्लू का नारा गूजा । पूजा पतिया का नाश हो । 'सबड़ा कण्ठा से यह नारा गूज उठा । धनी मानी जनता धीरे धीरे पीछे होने लगी, गायब होने लगी । बबलू मंत्री ने बिल्लू के कंधे पर हाथ रखकर प्यार से कहा अपने आवेश को शांत करो भाई । तुम बिगड़ोगे तो यहां का वातावरण उमादी हो जाएगा । मैं वचन देता हूँ कि इस स्त्री के हत्यारा को छोड़ा नहीं जाएगा ।

सरसुतिया के चढ़ा माता पिता को बिल्लू और उसके साथी सम्भाल कर उन्हें घर की ओर लंचले । यह राय मंत्री ने डी०एस०पी० को धनी मुहल्ला और बाजारों की रक्षा करने के लिए विशेष आदेश दिए । 'आतंक' कार्रिया पर नज़र रखें । बिल्लू भरे भित्त का भाई अवश्य है परंतु उसपर

और उसका साथिया पर पूरा मरसा नही किया जा सकता। य और भी कुछ गोदामा की तलाश करेंगे। तुम दो चार अनइम्पार्टेंट विस्म व वनियो-वक्कालों को पकड़ लेना, कुछ सामान भी निकाल लेना। इसमें जन-आक्रांश थोड़ा काबू में आएगा। समझे।'

"जी मर, आपका आदेशानुसार ही सब काम कर दिया जाएगा।

'दा चार दूकाना पर ता छाये आज ही ढाल दीजिए इससे बानावरण पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा और लड़कें तब भी कुछ अशांति उत्पन्न करें ता बल-परसो तक बिल्कु और साथिया की भी किसी विशेष पड़पड़ का आरोप लगाकर अपन कब्ज़ में रख लीजिएगा। मर कच्चे में हर हालात में शान्ति रहनी चाहिए।

गृह राज्यमंत्री की झंडेदार गाड़ी नायब कप्तान और दूसरे पुलिसमनों के सल्यूट लेकर चली गई।

राजधानी में आए हुए और कच्चे के छात्रों का विखरा विखरा जुलूम फिर सत्रक व खास बाजारा से पूजीपतिया व प्रति शोध भरे नारे लगाता गुजर गया। बाजार पहन स ही बंद था। घनिका व मोहल्ले पुलिस के दलों से भरे हुए थे। यहा तक कि आसपास की छतों पर नज़र रखने के लिए कुछ हथियारबंद पुलिस वाले बंद छतों पर टकस रह थे। मारा कच्चा रात के मरघट की तरह मुनसान लग रहा था। सबके, गलिया सब मुनसान। बाजार में पुलिस की गश्त। गरीब घरों में घनिका व अनाचारों के लिए गलिया। हाथ बेचारा जवान पति पानी का जोड़ा।

बिल्कु और उसके माथी जिस समय सरसुतिया की माता के घर में उन्हें मातृना दे रहे थे बहुत-से नात रिश्तेदारों की हाथ-हाथ भरी भीड़ घर-बाहर भरी हुई थी। तभी अचानक छिद्दा अहीर भीड़ में धमता हुआ आया। कुछ लोग उस पहचानते थे। कुछ देखते ही बाप गए छिद्दा सरसुतिया के बाप व पाम आया और उसके कंधे पर हाथ रखकर कहा, 'पथराना मत आज स परमो तमक के बीच में खुनी और उमक लड़के में बंसा ल लिया जाएगा। मैं शिठदयाल को भी बचन देकर जा रहा हू। इस बखल अहीर-पामी सब एक हैं।'।

बिल्कु ने उठकर छिद्दा को गले में लगा लिया और कहा, "अहीर-पामी ही नही नारे गरीब एक हैं। बात छिपी न रह सकी। पुलिस तक सूचना पट्ट बंदी। मतमाद प्रसाद उफ बिल्कु थीवास्तव, बनराज चौहान हर मुज मादक रमश मुज और अन्त सत्तार अब इन पाचा की गिरफ्तारी

क बारण्ट जारी कर दिए गए। सयांग स पुलिस क आन क लगभग पंद्रह-बीस मिनट पहले ही सत्तार क पिता अवकाश प्राप्त हुवलदार अब्दुल गफ्फार हाफत भागत हुए जिल्लू क कमर पर पहुच जोर भातर पहुचत ही गरजना शुरू किया सालहरामियो शरीफ मा-बाप की ओलाद हो और डाकुआ स मिलत हा नालायको। जल्तो स भागे। पुलिस तुम्ह गिरफ्तार करने आ रही है। भागे यहा से जल्दी।

पांच युवको स सनसनी फल गई। बिल्लू ने अघड गफफार मिया क पाव छुए और कहा आपने मौके से खबर ददी। अब पुलिस हमारा कुछ न बिगाड सकेगी। साइकिलें उठाओ यारो।

पाच मिनट स ही चारो साइकिलें पकरिया गेले की गली स निकली और य जा बा जा। पुलिस जब पहुची तो शिकार गायब हो चुक थ। रईस मोहतरा स खास तौर स सठ चुनीलाल की कौठी पर पहरा और बढा दिया गया था। साठ सत्तर हजार की आबादी के कस्ब मे गिजली की तरह यह सूचना फल गई। रात स कस्बे के अहीर पाड पर अचानक आक्रमण हुआ। घरा क दरवाजे मशालो की आग स जल उठे। सुहागी के पिता शिउदयाल उसकी माता और छाटी बहन तीना ही की हत्या कर दी गई। साफ स मुह डक हुए लुटेरा स मे एक व्यक्ति बार-बार मह कहता था कि 'सालो अगर किसी की सास भी सुनाई दी तो फिर देख लेना।'।

जलत हुए मकानो को छोडकर अहीर पाडे की भीड बाहर मदान स ठिडुरी हुई एक जगह खडी हुद थी। इस घमकी क बावजूद भी तब कुछ बचस चीतकारें निकल ही गई। जब लुटेरो न जवान स्त्रिया का सावजनिक अपमान करना शुरू किया कुछ अहीरा का शीय फिर स लौट आया। एक डाकू दो यक्तियो की पकडाई स आ गया लेकिन दूसर ही क्षण क दोना यक्ति गोलिया के शिकार हो गए। डाकू भाग गए।

दूसरे दिन कस्ब स और अधिक सनसनाहट फल गई थी और रात कटारीपुर के पासिया पर छिदा जहीर के गिराह का आक्रमण हुआ। वहा भी घ पुलिस पहुचन की सभावना नही थी इसलिए पण स्वतंत्रतापूर्वक हत्यायें, अनाचार और अत्याचार हुए। कटारीपुर के भूतपूर्व जमीदार ठाकुर रिपुदमनसिंह अपनी बडूक लेकर अपन घर क ऊपर बाल छज्जे पर खड थे। डाकू उधर ही से भागे। रिपुदमन ने गोनी चलाई। एक की बाह धायल हुई और दूसरे ही क्षण रिपुदमन अपनी बडूक सहित छज्जे से

नीचे लाश बनकर गिर पड।

मामला भारत व्यापी प्रचार पा गया। मुख्यमंत्री गृहमंत्री, राज्य गृहमंत्री और पुलिस वाला के चीटी दल सी भीड कस्बे और कटारोपुर म भर गइ। न छिद्दा अहीर और न पाचा युवक।

कस्बे स जाठ बम दूर लालपुर गाव की टूरी मस्जिद मे पाचा युवक बठ थ। सुहागी और सरसुतिया के परिवार की हत्यामें उह गुस्मे से भर रही थी। बिल्सू बाला, इतन बेगुनाह मारे गए पर वह हरामी का पिल्ला स्वतंत्र कुमार अभी तक जीवित है। उस मारे बिना मुझे धन नहीं मिलेगा।'

सत्तार बोला, मैं खुद भी यही सोच रहा था।'

हरसुख न कहा, 'जब तक स्वतंत्र कुमार अण्डरग्राउण्ड रहेगा हम साग कुछ न कर सकेंगे। और तब तक पुलिस हम गिरफ्तार भी कर चुकी होगी।

'एमी-तसी साला की। पुलिस की सात पुश्ते भी हमारा पता न पा सकेंगी। लेकिन बबलू साले की गद्दारी भी मैं नहीं भूलूंगा। मुख म राम बगल म छुरी। चौहान बाला।

हरसुख बाला 'अरे यार, ये लोग पूजीपति समाजवादी हैं पूजी पहने समाज वा म। हम यदि कुछ करना ही है तो इनको पीपण करने वाली व्यवस्था का बदलना होगा। बात के प्रभाव से सब लोग कुछ धन स्तब्ध रह फिर रमेश बाला यार खाने-पीने का क्या डौल लेगा?'

गम्भीर मुद्रा म कुछ सोचत हुए बिल्सू ने एकाएक रमेश की ओर देखा और हम पडा। तुम्हारी इस मयापवादी समस्या पर विचार करना ही होगा। मैं समझता हूँ एक साइकिन बेच दी जाए। कम मे कम चार छ दिन ब्रह्म चने चाय और बीडिया मे गुजारा चल जाएगा।'

सत्तार बोला 'एक नहीं दो विकेंगी। मैं रामगज के एक लोहार को जानता हूँ। एक दिन बातो जाता म ही अब्बा म सुना था कि वह बट्टे बनाता है और बकत है।

'अब माने मुश्किल म बालीस-मबास रुपये म तो ये हमारी सकेण्ड हैण्ड साइकिनें विकेंगा। बट्टे क्या आसानी म आ जाएगा?'

हरमुग्र की जान पर चौहान ने तड से उत्तर लिया 'बेच दो साली मर साइकिनें। बट्टी की सख्त जरूरत है। स्वतंत्र कुमार की जान लिए अगर मुझे चन नहा जाएगा।

दूर पास का बहुत-सी बातें सांच लगे व बाज़ तीन सादकिलें हो बची गई एक राक ली गई ।

आज यह खडहर ता बल वह । शाम होने ही जगह बदल जाती है । जमाना को चाय पीने हुए चार दिन हो गए थे । बीडिया भा घूम हा चली था । उनके टुन बचाकर रख लिए जाते और फिर तलब व बकन एक ही वश में वह तलब भी राख हा जाती । बट्ट ता आ गए मगर गोलिया व लिए पसे कहा में आए । अभी ता निशाना सीखना है गालिया छान्त बकन हाय का सटका बगान बनने की जान्त डालनी है । रात में बिल्लू माइक्ति पर बम्ब व चक्कर लगाता किमी भगम व दामन का दरवाजा खण्डता और स्वतंत्र कुमार के सीट आन की खर व मम्ब घ में दाह लगाता था । एक दिन पता लगा कि स्वतंत्र कुमार शहर ही में है तबिन अपनी हवनी से बाहर नहीं निकलता । चुनीलान की हवली का पुराना नक्कालीनार पाटक प्तना बिरुप हा गया था कि नय सिर में जगल दार पाटक लगाना पडा और उसके पीछे शटर लगाना पडा । जब तक पाटक मुक्यवस्मित न हुए तब तक आठ व दूरघारी पुलिसमनों की दामाज की तरह खातिरें होनी रही । चुनीलान की हवली में घुमना मुश्किल था । कटारीपुर का गोताम खानी हा चुका था और नई सरकार ने पुरान बलक पर पत्ता डालने व लिए गोताम व खडहरा में फिर मिट्टी कुटवाकर मास्टर प्लान की सडक का कटारीपुर व आग लायगज और फुलियामऊ तक श्रमजान से बनवाने का लम्मा लगवा दिया ।

रोज शरणस्थलिया बदलत हुए बिल्लू और उसके साथी गुननारपुर की हड पर जा पहुंचे । अपने जिले में निबन चुक थे । यहा में बम्ब या राजधानी जाना अधिक श्रमसाध्य था । इन पांचा साथी को लुकत छिपते और भागत अत्र बारह दिन बीत चुके थे । लइया चने या सत्तू सान-सान कर खात हुए अब पांचो वोर हो उठे थे । चाय-बीडी की तलब भी सता-सता भारती थी । गुननारपुर के पास से ही रेल लाइन गुजरती थी । बिनार एक टूटा हुआ परित्यक्त रेलवे क्वाटर नई शरणस्थली की तरह बना गया । कोठरी का पश पक्का था मगर उसके दो कोना पर बड़े-बड़े बिल नजर आ रहे थे । छोटी मोमवत्ती व सहारे मुआयना करते हुए जब बिला पर नजर गई तो सत्तार बोला यार बाहर से मिट्टी के ढले लाकर इह भर दाा चाहिए । हो सकता है इहें कभी चुहा ने खोदा हा और अब साप रहत हा कहकर सत्तार मोमवत्ती लिए हुए बाहर पडे गुम्मीं

वे टूट टुकड़े बटोरने लगा। बिल्बू यह ठिकाना देखने के बाद तुरंत ही साइकिल पर अपने कस्बे की ओर दौड़ पड़ा था। फुलियामऊ के छाड़े हुए मंदिर में आग की ऐसी लपटें उठ रही थी जसे चूल्हा जल रहा हो। दो एक छायाएँ भी भिवालय में इधर-उधर टहनती हुईं दिखनाई दी। बिल्बू की उत्सुकता बढ़ गई। शिवालय के चबूतरे से साइकिल टिकाकर मोड़िया बढ़ा। आड़ में छिपकर मंदिर के भीतर साव जाव करने लगा। पीछे गलत पर सड़न हाथ पड़ा, 'कौन है वे ?'

आवाज में सारा भय दूर कर दिया। छिड़ा जी आप। मैं बिल्बू हूँ।

'अर भया, खूब मिल।' छिड़ा की आवाज इतनी ज़ार की थी कि मूर्ति विहीन शिवालय के भीतर बड़े लोग उठकर बाहर आ गए। छिड़ा ने एक से कहा 'कनूय।'

'हा दादा।'

'चबूतरे के नीचे भया की साइकिल खड़ी है, उठाकर छिपा दे। आभा बिल्बू भया, अदर आओ।' दोनों शिवालय के खडहर में गए। बिल्बू को बठाते हुए छिड़ा ने कहा, हम बड़े परेशान रहे कि तुम लाग आखिर कहा गब हुइ गए।'

बिल्बू ने मारी कथा कम में सुनाई।—कल रात वह भी इसी खडहर शिवालय में छिपे थे। तीन साइकिनें बेच दी जिसमें दो कट्टे आए और कुछ चना खबेना इकट्ठा हुआ।'

कट्टे क्या खरीदे बिल्बू भया ?

जिसके कारण इतना बड़ा हत्या काण्ड हो गया उस स्वतंत्र कुमार का अपने हाथों से मारुगा छिड़ा जी। बिल्बू बड़े तल से रोना।

छिड़ा ने उतनी ही ठण्डी आवाज में प्रश्न किया 'तो अब तक मारा क्या नहीं ?'

'छ गोतिया हमारे पास है और परसा ही कस्बे में खबर लाया हूँ कि अभी चुन्नी की हवेली पर आठ दस पुलिसमन का पहरा लगा है।'

छिड़ा एक ठण्डी सास छोड़कर बोला मैंने परन किया था बिल्बू भया कि चार दिन में साले बाप-बेटा को इस दुनिया में उठा दूंगा। लेकिन अभी तक जुगाड नहीं बठा पाया। तुम लाग में होमला ज़रूर है मगर यह काम तुम्हारे मन का नहीं हम ही करेंगे।'

'हम क्यों नहीं कर सकते ?'

बिप्रेतिनके

‘सेर की भाद में घुसकर सर को मारना है। पहले निसानेवाजी सीख लेआ। कहा है तुम्हारे साथी?’

“गुलनारपुर में एक उजड़ हुए रेलवे क्वाटर में रात का डेरा डाला है। अब तो घर से चालीस बिल्लीमीटर दूर हैं हम लोग। राज राज बस्व तक टोह लाने में भी अब मुश्किल हो गई है। बल हम लोग ने इस गांव में पुलिस का गस्ता देखा था।’

छिड़ा हस पड़ा, ‘अर यार सब अपन ही आदमी पुलिस की बर्दों में है। तुम बकमा खा गए। घर आज तो मजे से गरमागरम रोटी-दाल खाओ। तुम्हारे साथियों को भी बुलवाए लेता हूँ। जब तक चुन्नी और स्वतंत्र कुमार मारे नहीं जाते तब तक तुम हमारे साथ ही रहो। खाआ पीआ और मौज करो।’

छिड़ा ने तीन साइकिलधारी साथी बिल्लू के मित्रों का लानक लिए गुलनारपुर चल पड़े।

वारह

छिद्दा के दन के साथ दाल, रांटी बबरा भाग और मलाई पत्ता अथ
 और दूध पीने हुए तीन दिन बीत गए। बीरापुर का जंगल पाम ही था।
 तीसरे पहर छिद्दा उन्हें अपने साथ स जाता और निशानेबाजी मग्न होता
 था। उसका भेदिय बच्चे में दिन रात चुन्नी मठ की हवेली पर बराबर
 निगाह रखत और टाह लेते रहते थे। ऊपर के छत्रों पर अब डकर
 सिगरेट पीत हुए स्वतंत्र कुमार का मगू न एक दिन देख लिया। हवेली में
 नगमरा नामक एक नौकर का अनाथ लड़का काम करता था। मगू न उस
 परचा लिया था। पहली मजिल में क्या है दूमरी और तीसरी में कौन
 रहता है यह सब ठिकाना भी लग गया। एक दिन धान स टोह मिली
 कि भूतपूज मंत्री महेशनाथ सिंह के साल का लड़का इस्पेक्टर जगदव सिंह
 आज शाम में अपनी टुकड़ी के साथ चुन्नी मठ की घुली हवेली का पहरा
 देने जाएगा। सुनते ही छिद्दा के मन प्राणा में पन उग आया। टाह लगाई
 जगदव की मुठठी गरम की, मंत्री पफा की पराजय का बदला लेने के
 लिए जगदव का सिंहत्व भी पसा की गरमी में गरमा उठा। सब तय हो
 गया। छिद्दा का गिरोह रात के ग्यारह में पुलिस की बर्नियो में हवेली पर
 पहुंचेगा और जगदव का खुल आम यह खबर दगा कि अभी अभी यहा
 छिद्दा के घावा धानने की खबर मिली है। जगदव सिंह धान का जाली
 रखता पढ़कर उन्हें भीतर जान देगा। लूट के माल में भी पुलिस की हिस्म-
 दारी तय हो गई। एक तो बर्दिया अधिक नहीं थी दूसरे नौमिस्त्रिय धाबुआ
 का लेकर जाना उचित नहीं था। इसलिए छिद्दा ने बिल्कू और उसके
 माथिया का बही रहने के लिए कहा 'दो डार्ड बज तक लौट आएं।
 फिर रातारात अड्डा बदलना है।'

काम सब बायदे स हुए लेकिन बाजी उलट गई। राजधानी में आए
 हुए जागूसा का समय स कुछ पहले ही टाह लग गई थी। नायर पुलिस
 कप्तान खुद पुलिस के एक बड़े दल का नेतृत्व करते हुए चुन्नी का काटी

की ओर चल पड़। छिद्दा का गिरौह पहुँचा। हवेली के भीतर भी चला गया। तब तक नायब कम्रान अपने दल के साथ पहुँच गए। दसों पहरेदारों से कुछ लागा ने राइफल छीनी और सीधे भीतर चले गए। छिद्दा का आधा गिरौह ऊपर का साँढिया पर चढ़ चुका था आधा नीचे था। पुलिस की भारी भीड़ को अंतर आत देखकर एक चिल्लाया हासियार। 'देशाबंदूक भा दाग दी। पुलिस ने भी फायरिंग शुरू कर दी। नीचे वाला पाँचा डाकू भुन गए। नायब कम्रान साहब का आडर मरजा 'छिद्दा तुम्हारा खेल खत्म हो चुका है मरणा कर।

ऊपर की मजिल के खाल दरवाजे पर अभी एक भी कुल्हाड़ा न पड़ सका था और नीचे जागन में पुलिस भरी हुई थी और छिद्दा के साथिया की लाशें पड़ी थी। तब डाकू सीनियो से उतरने लग परंतु छिद्दा ने अपने आपका सरेण्डर करने के बजाय बनपटी पर पिस्तौल रखकर मौत के हवाले कर दिया। ऊपर के साथ हुए लोग पहुँचे ही जाग उठे थे। आसपास के महल्लों के घरों में भी जाग हो चुकी थी। बाद घरा की खुली पिडकिया में क्या हुआ क्या हुआ की बीआ रार मची थी। थाटा ही दर में चारा ओर खबर फल गई कि चानीलाल सेठ की हवेली में डाका पड़ा किंतु डाकू पकड़ गए और छिद्दा मारा गया। चन्नपाणि चौबे की मोपेड मोटर साइकिल भी अपने पन्न मालिक के रिश्तदार की हवेली पर जा पड़ी।

दूसरे दिन दैनिक आजकल में इस काण्ड की बड़ी विस्तार से चर्चा का गई था। गददार पुलिसमैना में एक भूतपूर्व मंत्री का रिश्तदार भी पकड़ा गया है। उधर सबेरा होने पर बिल्सू और उसके साथी बड़े परेशान थे। छिद्दा तो रात ही में जाने को कह गया था। क्या हुआ जो ये लोग अब तक नहीं आ सके? खान पीने का सामान कुछ कपड़े सस्ने के टुकड़े अभी बचे पड़े थे। तब हुआ कि बाकी लाग बीरापुर के जंगल में पोखर के पास जाकर वहीं अपना पड़ाव डालें। खान पीने का थोड़ा सा सामान साथ लेकर तीन साथी बीरापुर गए और बिल्सू साइकिल पर छछूंदर की तरह छिपता हुआ बस्ते की ओर चला। रौनकपुर गांव में पहुँचते ही खबर लग गई कि छिद्दा और उसके कई साथी मर गए, कुछ पकड़ाइ में भी आए हैं। कच्चे में बड़ा हल्का मचा हुआ है। खान के मामने छिद्दा और उसके साथियों की प्रदर्शित लाशों को देखने के लिए भीड़ उमड़ पड़ी है। एक दूसरे से कह रहा था, चला हमहूँ देख आईं जिनका नाम सुनि के पवन बापि जात रहे ऊ सार कच्चे मच्चे चलो देख आईं।

विषय-विनय

‘हम न जाय माई पाच कोम घरनी नापी और मने मुरदन क मुह निहारी। ई ठनुआई हमत न होई।’

त्रिभु का मन भावबुद्धि विचार सबमे एकाएक सूना हा गया। साइकिंग पगडण्डों की लीक-लीक आग छोड़ती चली गई। तहसीनगज की भीड़ का दखतर होश आया कि आज बाजार का दिन है। वही एक हाकर में उसने निब आजकन पुरोदा। सनाट में बटकर पड़ा। मुह में एक जाह निकल गई। कुछ भण स्मृतावस्था में रहे फिर उसकी साइकिंग सनमनाती हुई बीरापुर की ओर दौड़ चली।

उम समय सूरज सिर पर आ पहुंचा था। जंगल में पाखर के पास चारा मापी मिल गए। रमण खिचनी खा रहा था। सत्तार चौहान और हरमुख ग्रामा ग्रामर आराम में लेट नट सिगरेट पी रहे थे।

बिलू को देखते ही सत्तार न कहा अमा जा गए चडडागुलाग्र ? अमा क्या हुआ, चहरे का चन्दा पपूज करी हा गया है।

त्रिभु न साइकिंग एक बिनारे फेंकी। आजकल उनके सामने फेंका और हडिया में बची-बुचा छिबड़ी का पत्तल पर परोस बगर ही गपागप खान लगा।

उधर सत्तार और हरमुख की नजरें आजकल पर जमी हुई थी। कुपान डकत छिदा ने आत्महत्या कर सा — शीशक सुनकर रमण खात-खान चौक पड़ा। पत्तल छोड़कर खबर पढ़ने के लिए उठन ही लगा था कि बिलू न बाह पकड़कर फिर में बठा दिया। ‘पहले जाता जाओ बाद में मावा जाएगा। सत्तार जोर जोर में अखबार पढ़न लगा। सन मुनन रह। खबर के नीचे सम्पादकीय टिप्पणी थी कि डकता के चित्र बन के एक में छाप जाएंगे। चू नीलाल सठ की पुण्यात्मा लिखा गया था। सत्तार न अखबार एक आर फेंक लिया और बुझी सिगरेट फिर में जलाई। खाकर हाथ धाने के बाद बिलू और रमण भी पास आकर बैठ गए। रमण ने ता फिर से अखबार उठा लिया लेकिन बिलू अबुल सत्तार का डिग्रिया से सिगरेट निकालकर डिग्रिया पर डक डक करना हुआ मुम्कराता हुआ रोना साल डाकुआ का माल नूट लाए हो। कितनी डिग्रिया ह तुम्हारी जेब में ?

अमा उनकी फिक न करा। यह चलनाओ कि अब हम लाग क्या करेंगे ? हमारा ठिकाना कहा लगेगा ? चौहान ने परेशानी भर स्वर में पूछा।

हा पार यही तो समस्या है। न खुदा ही मिला न विसाल मनम
ह।

‘पुलिस के हाथों से आखिर हम लोग कहाँ तक बच सकेंगे। चलो,
लट अंस सरेण्डर। जो सजा मिलगी भुगत लेंगे। आग देखा जाएगा।’

हरमुख की बात पर चौहान जोना क्या देखा जाएगा? हमारा पयू
चर ही क्या रहा। बेगुनाह बन घूम रहा है। भाग्य न कहा ला पटका।
जिस साल की बजह न हमारा पयूचर अघेर में डूब गया है जिसने मुहागी
जौर सरम्बती सी भली आत्माओं का नाश किया जिसके कारण जहीरो
पासिया की बस्तिया उजड़ी वहाँ मूछा पर ताब दिए शान से घूम रहा है
और हम निरपराध लोग सत्य का पत्र लेने के कारण ही इधर उधर मारे
मारे डाल रहे हैं। इन सालों का मर्यानाश हो।

सत्यानाश ही नहीं साह्य सत्यानाश हो साला का। पर यह बतलाओ
कि अब हमारा पयूचर प्रोग्राम क्या होना चाहिए?

हरमुख बोला छात्ता को संगठित करेंगे।

इतना आसान नहीं है हरमुख। छात्त स्वयं राजनीतिक दला की
गाटिया बने हुए हैं। कौन साथ देगा किसपर भरोसा किया जाए? फिर
यनिर्वसिटी साली वाद कर दी गई है। सबक अपने अपने धरा में भगा
दिए गए हैं। हास्टल खाली करा लिए गए हैं। यह देखो आज ही के पेपर
में तो यह खबर भी है।

बिल्बू सब सुनता रहा। मिगरेट पूकता रहा फिर एव गहरा कश
छीककर मिगरेट का टुना दूर फेंकत हुए बोला घबरा मत जाखिरी
दाव फेंकने जाता हूँ। या तो आज से कल के भीतर हम आजाद हो जाएंगे
या फिर जलखान में ही रोटी दाल का प्रबध हो जाएगा।

क्या करोगे?

बाद में बतलाऊंगा। तुम लोग भी वहाँ से खिसको। गुननारपुर में
पटरी के सहारे सहारे तुम आज रात तक रसूलपुर पहुँच जाओगे। वहाँ
छिपने का ठिकाना कर लना। मैं जा रहा हूँ।

कहाँ?

वाद में बतलाऊंगा। बिल्बू ने साइकिल उठाई और चल पड़ा।

पुलिस की नजरा में बचन के लिए छछूँर चाल में छिप छिपकर
चलत हुए राजधानी पहुँचना इतना दुष्कर बाय था कि बिल्बू के दातो
पसीने आ गए। गुननारपुर से राजधानी तक की दूरी सीधे मडक में भी

विष्णु तिनके

सगभग चानीम बि० मी० श्री वि० तु इस टोनी मंत्री पास म आठ बि० मी० और चड गई। राजधाना पटुचत पटुचत ग्राम हो गई। नम्बर वार्डम चौकिया राड पटुच गया। गज्य गृहमन्त्री माननीय उत्तमसिंह राटोर उप बबलु जी की मोटी पर मतरिया का पहरा था। वि० भूतलर कम जाण

फिर जो कडा बिया, सोचा हर सिपाही मुझ थाट ही जानता है जा पण्ड जान का डर हा। मगर बबलु हो यदि अपन मन्त्रागन क रीय म ही पात करें? ऊह, करेंगे भी ता जेन भजन से अधिब बया कर सकेंगे। इस करारी जीवन ॥ ता जस ही भली। हिम्मत कर जा गिल्लू जान म घुस जा। जय म रखा एक बागड निवासकर उसपर अपन नाम क बजाय लिखा—'मनापी अनुज बबलु भाई की सेवा म काम अर्जेंट। पचीं सेवर पाठक पर गया। अकडकर पूछा माननीय मन्त्री जी सचियालय से आ गए ?'

मिपाही अकडकर बोला क्या काम है ?'

मैं उनक घर म आया हू। ठहीग काम है।

माननीय मन्त्री जी क घरवान का मनरी न दपतर वाल कमर म भेज दिया। अब निजी सचिव महादय अरडे कहा 'माननाय कुवर साहय इस समय बहुत व्यस्त हैं। आपका उनम क्या काम है ?'

गिल्लू को जाछ सो आया किंतु उस दवाकर मुम्नरात हुए कहा, मरी यह पचीं उन तक पहुचा दे और फिर मुझ पर रीव दिखनाए।

निजी सचिव महीन्यन एक बार पूरकर गिल्लू की तरफ दया। पचीं रख ली और काम म लग गया। वि० को बुरा लगा। तनिक तेज स्वर म बोला जाय जितना भी गिल्लू करेंगे उतना ही माननीय मन्त्री जी आपक ऊपर नाराज हाय याद रखिए।'

निजी सचिव महादय भुनभुनात हुए उठे। पचीं सेवर डाइग दम म चले गए। पचीं देगकर कुवर साहय चौक। फिर कहा "पोछ वाल कमर म ले जाकर उह आगम म बिठा दो। किसी नीकर ॥ चाय बगरह द आन क लिए कह दना। मैं पन्द्रह-बीस मिनट म आता हू यह उनस कह दना।'

सगभग आघे घण्टे क बाद बबलु आए।

'सुम।'

गिल्लू न उठकर पर छुण और कहा अरेस्ट कराना चाह तो करा सकत हू बबलु भया।

‘क्या बकत हो ? आराम से बठी। यहा तुम्हें कोई अरस्ट नहा कर सकता लेकिन तुम लागा न यह क्या तमाशा बना रखा है भाई ।’

‘तमाशे की बात तो चु नी या स्वतंत्र कुमार से पूछनी चाहिए बबलू भया । जिहाने हम फरार बनाकर इतने त्तिना म तरह-तरह की यातनाएं भागवा दी ।’

बबलू राठीर ने कोई उत्तर न दिया। जब से एक सिगरेट निकाली, उस हाठो म दवाकर फिर पूछा ‘छाना वगरह छा चुक हो कि नहा ?’

जी बल रात जवश्य छाया था। मुवह एक प्याला चाय पीकर चला था। रास्त म मानीपुर आकर एक प्याला और पिया और अब भूख और थकान क मारे

अरे मगर ‘माननीय मंत्री जी ने आवाज दी, भया के लिए नास्ता लाजा। और देखो मरी एक बनियान और सुयी भी इनके वास्त लाकर दो। (बिल्लू से) तुम पहने नहा धाकर प्रश हा जाआ तब बातें करेंग ।’ कहकर माननीय राज्य गह मंत्री उठ खड हुए। दरवाज तक पहुंच कर एक बार फिर मुड, पूछा ‘सतोपी कब तक सीट रहे हैं ?’

बिल्लू न हसकर कहा आप बड गलत आदमी से पूछ रह हैं बबलू भया। बबलू भया मुस्कराकर चल गए।

हाथ मुह धोके कपड बदले चाय पी नास्ता किया और सिगरेट मुह म तबाकर भविष्य की चिंता की घुए की तरह अपनी मन दलि के सामने फनाने लगा। थोड़ी देर म भाभी साहिबा आइ। उनके हाथा म छादी की एक रशमी बुशट और पतनून थी। बिल्लू अदब से खडा हो गया। पाव छुए। भाभी न कहा ‘कसे है बिल्लू लाला ?’

फिलहाल सो फरार हू और माननीय राज्य महमत्री के घर म इस समय छिपा हुआ हू।

सुनकर भाभा मुस्कराई। कहा, अब महा से जाजाद होकर ही जाएगे आप। मैं आपके भया की अट्टीमटम ने दिया है। ये कपडे रख जाती हू। अपने पुराने कपडे दे दीजिए लाला।

‘कमा ?’

‘देवरा की कयो का जवाब भामिया नहीं दिया करती। आपके नाप के कपड मगवाने हैं। सतोपी भया कब आएगे ?’

जो जवाब मैंने अभी थोड़ी देर पहले बबलू भया का दिया था वही आपको भी देने से काम चल जाएगा ?’

भाभी कुर्सी पर बठ गई। कहा, मैं समझ गई आप यही कहेंगे कि मैं क्या जानूँ मैं तो फरार हूँ।'

भाभी की हल्की हसी में दबर् की मुस्कराहट घुल गई। श्रीमती उत्तम सिंह ने कुछ रुककर फिर कहा 'उस औरत के मार जान का मुझ भी बहुत दुख है। सी० आई० डी० वाले जाच भी कर रहे हैं।'

जाच करके भी क्या होगा भाभी? अपराधी इतना शक्तिशाली है कि कभी पकड़ा न जा सकेगा।'

"वह पकड़ा जाएगा। मैंने आपको भया से बहुत पहले ही यह साफ साफ कह दिया है कि स्त्रियाँ के लिए मैं भी माय मासूमी।

'मैं जानता हूँ कि भया पर आपका कितना प्रभाव है। मगर मैं यह भी जानता हूँ कि बड़े राजनेताओं का प्रभाव आपसे भी अधिक शक्तिशाली है।'

भाभी चुप हो गई। एक ठंडी सास छोड़ी फिर कहा आपके भया घण्टे भर के लिए बाहर गए हैं। आप कहेंगे तो मैं आपका खाना पहले सगवा दूँगी।

मुझे जल्दी नहीं है। साथ ही ध्यान। भया से बात करनी है। हो सके तो मुझे पढ़ने के लिए कोई किताब या पत्र पत्रिका भिजवा दीजिए।'

भैया सगमग साढ़े नौ बजे आए। इस मिनट बाद बिल्कू के कमरे में कदम रखा। कहा 'तुमको काफी दूर भूखे रहना पड़ा।

मुझे रोटी से ज्यादा आपसे बातें करने की भूख सता रही है।

वह भूख भी शांत होगी। चला पहले खाना खा लें। बड़ी भूख लगी है। आज सब बाहर बाल टाल दिए गए हैं। वस मैं तुम और तुम्हारी भाभी।

'तब तो लुगी-बनियान की इस राजसी वशभूषा में चलूँगा।'

भोजन के समय बात श्रीमती बबलू ने ही चलाई। पूछा 'एक भाई गृहमंत्री और दूसरा अपराधी। अच्छा व्यंग्य है। मैं आपको इन भयाजी से भी कह चुकी हूँ कि अगर सतोपी भैया न होते तो यह इनकेशन जीन न सकते थे।

बबलू मान, मैं इससे इकार नहीं करता और मुझ से सम्बन्ध बहुत दुख है कि तुम लोग के खिलाफ मारण्ट जारी करवाना पड़ा। मैं शर्म के मारे गुरसरन चाचा को यह नहीं दिखा सकता।

छाते-छाते बिल्कू बोला 'भाभी की स्पष्टवादिता का अनुकरण

उन्का दवर भी करंगा, बबलू भया। आप बल मुझे छुड़वाएंग और परसा गिरफ्तार करवा लेंग। राजनीति भला किसकी संगी हाती है।'

बबलू कुछ न बोल। बिल्लू न बात आग बढ़ाई, पहले सिद्धांत जोर उद्गम स्वायं ध अउ सत्ता और अध स्वाय है। पहले इमर्जेंसी का समय देखा फिर चार घाड़ा वाली जनताई वग्धी की सवारी दपी अब यह समाजवादी नोबनत्र भी देख रहा हू। समय की हवा का दूर साका जहर भरा ह। जान क लिए कहा स भी आस्था नहीं मिलती।'

बबलू चुप रह। श्रीमती बबलू न एक बार पति की आर देखा कि शायद कुछ कह पर वे मौन निवाला तोड़त रहे। बिल्लू अपन जोश म था, कहता ही चला गया आप जिदगी की असलियत को झूठे सच्चे दलगत नारा स महलाकर हमको यानी सारे देश को बब तक धाखा दत रहगे ?

जब बबलू मंत्री तज हुए। कहा खाली बातों से काम नहीं चलगा बिल्लू। हमको अस्तित्व की रक्षा क लिए कभी कभी झूठ का भी सहारा लेना पड़ता है। लेकिन वह झूठ झूठ नहीं नीति होता है। क्या समझत हो कि हमारी ही पार्टी अक्ली झूठी है और दूसरे सच्चे है ?

मैंन यह कभी नहीं कहा बल्कि मैं तो कह चुका मुग जाज देश के किसी राजनीतिक दल पर विश्वास नहीं। मंत्री राजनीति आज जनता का दुख भुगान पर आमादा है उह दूर करन क लिए कांड भी प्रयत्नशील नहीं। दुग्घालय के साइन बोड सामन टाग कर सभी ने अपने अपने शराबखाने खोल रख ह।

तो इसका सारा दाप तुम केवल मरी ही पार्टी पर क्या घोषत हो ? क्या (तुम मोचत हो कि) दूसरी पार्टिया चार इकता और एसी ही बुरी संगत स जुडकर अपनी गांगे सर कर लें और हम सत्यवादी हरिश्चंद्र बनकर त्याग तपस्या की ढालक बजाए ? मैं पूछता हू कि दवे-कुचल धग की औरता पर यह घनात्कार कब नहीं हुआ ? यह अयाम क्या आज ही हो रहा है ? दरअसल दूसरा पार्टिया वान पपर पतिसिटी कर करवे हमारी इमेज बिगाड रहे है।' जब बबलू मंत्री जाश म देर तक बोलते हो चत गए तब बिल्लू का जोश भी गमाया और जल्दी जल्दी निवाले निगलने लगा। गोया प्लेट म परासे हुए मार छप्टाचार की सफाई कर रहा हो। जब वह चुप हुए ता चटनी चाटकर कुबरांनी साहवा की तरफ देखकर बोला 'भाभी आप ईश्वर को मानती है या नहा ?'

क्या मैं हिंदू नहीं हू जो न भानूगी ?'

ईश्वर बबल हिंदुओं का ही नहीं सबका है ?”

‘विल्कुल ठीक मगर तुम कहना क्या चाहत हो ?’

बबल इतना हो कि हमारी संस्कारगत मान्यताओं का अनुसार हम किए का दण्ड भुगतना पड़ता है। सरसुतिया और सुहागों की आत्माएं आप से अपना हिसाब भी मांगेंगी। उन्हें किसी पार्टी से मतलब नहीं। वह आपसे पूछेंगे कि माननीय मंत्री जी, आपके चुनाव क्षेत्र में दा निरपराधा की जाने क्यो ली गई ?”

बुवरानी साहवा की ठकुरती अहता सतीत्व की अग्निमणि का मुकुट धारण कर बाल उठो विल्लू लाना, य तो नया आदमी है, जवाब न दें मगर मैं पन्द्रह-बीस हजार खच करने को तयार हूँ। आप एक अच्छा स्मारक बनवाइए सरसुतिया सुहागों का। मैं इनकी बर्माई से या पत्तूक सम्पत्ति से एक बानी बौनी भी न लूँगी। मेरे बाप ने मुझका बहुत कुछ दे रखा है।’

बबलू पत्नी का मुह दण्ट रह फिर उठे पत्नी की कुर्मी के पास पहुँच, एक घुटना टक कर दाना जूठे हाथ ऊपर उठाकर हथेलियाँ के सिर जोड़ दिए पाहिमाम देवी जी, शरण में आए हुए की रक्षा करो।’

बुवरानीजी मान से हस पड़ी, हाथ से उनकी बाह को हल्का-सा धक्का देकर कुर्मी से उठत हुए कहा, शरणार्थी का अपनी नकनीयती का सबूत दना होगा।

मैं बिना मांग ही यह बचन देता हूँ कि बच तुम्हारे दबरे और उमके साधियों का कारण्ट वापस से लिया जाएगा।’

‘इसके साथ ही आपका स्मारक के लिए जमीन भी अलाट करवानी होगी।’

‘इसका उपाय भी बतलाता हूँ। आज्ञाद हान ही विल्लू यह घोषणा करेगा कि हम प्रेमी युगल का स्मारक बनवाएंगे। दूसरे दिन फिर यह घोषणा भी इसी की तरफ से प्रसारित की जाएगी कि श्रीमती मजुला उत्तमसिंह न स्मारक बनवाने के लिए निजी रूप से पूरा खच दन की उगा रता दिखलाई है।’

विल्लू मुस्कराकर धाना ‘और यह भी घोषित करदूँ कि श्रीमती सिंह स्मारक में अनन मायक का पमा लगाएंगी।’

तीनों हस पड़। वयनू बान, अरे इनके मायक का पमा भी तो मेरी समुराल का ही है।’ जब माननीय मंत्रीजी हाथ धो रह थे तब हाथ धोने

विखरे तिनके

के लिए पीछ खड़े बिल्लू ने कहा 'यह स्मारक आपके भावी इनक्शन के लिए मुनाफा बन जाएगा। पालिटिशियन हर काम में मुनाफा देख लेता है।'

बबलू वाश वेसिन से हटकर हैंगर पर सटका तोलिया उतारत हुए मुस्कराए फिर कुछ रुककर गंभीर स्वर में कहा 'राजनीति वंश्या का प्रेम नाटक भर हो गई है लेकिन भाई—अब तो भरी गति साफ छछुंदर बेरी। जाओ आराम करा। तुम्हारे दूसरे साथी इस समय कहा हंगे?'

मैं उनसे कह के चला या कि रसूलपुर में कही रात बिताना। मैं सोचता हूँ इसी समय चला जाऊँ।'

बबलू मंत्री से अधिक बड़े भाई के रौब से बोले जाइए आराम कीजिए। सुबह पांच बजे मेरी कार तुम्हें रसूलपुर पहुँचा दगी। दा धण्डे वही रुककर आप साग चलिएगा। तब तक वारण्ट वापस ले लिए जाएंगे।

पड़े पड़े बिल्लू सोचता रहा क्या यही है स्वतंत्र भारत का मतलब। हुवेली की दीवालें नीब से लेकर ऊपर तक चिटक चुकी हैं। दरारें बन्ती जा रही हैं। इस खस्ता इमारत को पूरी तरह से गिराकर नई बनाने का काम तो नहीं हो रहा बस उन दरारों पर हल्का पलस्तर घड़ाकर ढाकने का प्रयत्न किया जा रहा है। राजनीति का सत्य चुनाव के बाग़ तक सीमित हो गया है—चोर स हा और शाह स भी हा। तुम अपना स्वाध पूरा करो और मैं अपना। क्या यही है स्वस्थ समाज के निर्माण का स्वरूप। आखिर कहा जाएगा यह भारतीय समाज? क्या हालत होगी हमारा? सोचते सोचते बिल्लू के सामने एक बिराट शून्य समा गया। शून्य में भी किसी न किसी रूप में प्राण हलचल करते ही रहते हैं किंतु यह शून्य तो लाशा से भरा है। कहा जाए क्या करें? जाजाद हुए पर भविष्य के जटिल प्रश्न जाल में कद हो गए

पीडा भरी चिन्ताओं की सूली पर चढ़े चढ़े ही नादन जान पड़ जा गई।

तेरह

बिल्लू और उसकी साथिया के करार हो जाने से गुरसरन बाबू दुखी तो बहुत थे किंतु उस दुख को मिटाने के उपाय भीनर तर करत ही रह। अपनी पौडा की आग पर वे अपनी दफ्तरी राजनीति की हडिया चपाकर उसीको पकाने में दक्षिण हो गए। वह और रिपाटिर चपपाणि, हथ्य अफसर और उनके गुगों के पीछे हाथ धोकर पड़े हुए थे। सुन दा ता पहने ही उनकी गरणागत हो गई थी। उनके पति भगत जी० लाल जी उध श्री घुरेलाल जी अब छुटकनू के दफनर में काम करत हैं। सुन दा सतापी के साथ विदेश में है। जी० लाल घर में बच्चे पालते हैं और दफतर में कदीर की साथिया सुनाते हैं। बल रात जब बिल्लू बबलू की काठी में था तब भगत घुरेलाल जी ने गुरसरन बाबू के दरवाजे की कुण्डी खम्खटाई, 'बाबू साहब—बाबू साहेब।

गुरसरन बाबू की आख अभी थोड़ी देर पहल ही लगी थी कि पत्नी ने जगा दिया, 'देखो कौन आया है?'

गुरसरन बाबू नीचे उतरकर बैठक के दरवाजे के पास आए पूछा, 'कौन है?'

'मैं हू बाबू साहब, जी० लाल।'

साइट खुली दरवाजा खुला जी० लाल भीनर आए और जाते ही गुरसरन बाबू के चरणा पर लोट गए। रोनी आवाज में कहा, 'मर प्राण बचाए बाबू साहब।

'क्या क्या क्या हुआ, क्या हुआ। भगत जी बताता।'

उगली से आखें पाछते हुए घुरेलाल बोले 'क्या वह बाबू साहब, कुछ कहा नहीं जाता। बस सतगुरु साहब के सबद याद आ रहे हैं कि

गूंगा होदगा बाबला बहुरा होदगा कान।

पावन त पगुल भया गोयल मारा जान।

अब मैं बच नहीं पाऊंगा बाबू साहब। अब मुझे कोई बचाव नहीं सकता,

आप ही मरे सनगुर चन हो शायद मरे और भरे बच्चा व प्राण बच जाए ।'

गुरसरन बाबू ने हाकिमाना रीउ स जी० लाल का यह वादलापन रोका कहा पहले बात बतलाओ जी। साधिया बाद म मुन लूंगा। गोयल ने क्या किया ?'

जर अभी अभी बसी आया रहा ।

कौन बशी ?

वह छीपी टोल का गुच्छा है हुजूर। डाक्टर गोयल ने उस अभी-अभी भजा था। वह गया है कि हाथ पर तोड़ के घर देंगे घर म आग लगाय देंगे। बच्चा को भून भून के क क क बाव बनाय देंगे। अरे मेरा क्या हायगा नाथ ?'

'बच्चा की देखभाल क लिए किसको छोड़ आए हो ?'

किसका छोड़ जाता सरकार। लडकी स कह आया हू कि दरवाजा म ताला जडके बठना मैं आपको खबर देने आता हू। चलक पुलिस म रिपोर्ट लिखवाय दीजिये सरकार मरी तो पाने म कोई सुनेगा नही कबिरा सिरजन हार विनु मेरा हितू न कोय अब आप ही बचाय सकत हैं सरकार।'

गुरसरन बाबू कुछ सोचकर बोले चलो पहले चक्करपानी चौक क घर चलत है। उसको साथ लेकर पाने चलेंगे।

चमपाणि चौके की कृपा से और दस रुपये के नोट की बदौलत धान म गोयल क खिलाफ जी० लाल की रिपोर्ट दज हो गई। यही नही दूसरे दिा सबेरे ही आजकल म प्रकाशित होने साथक एक उम्दा खबर भी बन गई। गुरसरन बाबू दनिक 'आजकल की एक प्रति जब म डालकर लखनऊ चल गए। शिशामत्री क पी० ए० जगदम्बा सहाय उनके सग फुकर भाई क दामाद है, उनसे स्वास्थ्य सचिव के पी० ए० की कुछ रिश्तदारी है। उनम उह फीन करवा के डाक्टर गोयल की फाइल पर हान घाली काय वाही क सम्बध म पूछनाछ की कहा कि हमारे अबिल इन लों बाबू गुरसरन लाल तुम्हार पाम जा रहे है।

वहा स गुरसरन बाबू स्वास्थ्य विभाग पहुचे जेवम एक डिब्बी सिगरेट और बनारसी पान वाल की दूकान म आठ पाना की पुडिया अपन प्लास्टिक क ब्रीफकेस म रखकर लाए। जगदम्बा सहाय के रिश्तदार यानी स्वास्थ्य सचिव क पी० ए० साहब भी गुरसरन बाबू के नामरासी थ। अतर केवल

इतना ही था कि वे अपना नाम शुद्ध गुरशरण वर्मा लिखने से और बहते थे। गुरमरन बाबू ने गुरशरण बाबू को पहले पानों की पुडियां खालकर पेश की। मात आग बढ़ी। धीरे धीरे पता लगा कि गुरशरण जी गुरमरन बाबू के बड़े चिरजीव के सगे साढ़ू हैं। उनका बड़े दामाद स भी उनका सबब निकल आया। जब रात बन गई। गुरशरण जी गुरमरन के बड़े बन गए। गुरमरन बाबू डाक्टर गोपाल और नौनराम के विरुद्ध चान्दौट का ममौदा बनाकर लाए थे। गुरशरण वर्मा न उस दफा और सहमति प्रकट की। मसौदा कुछ मुधारा के बाद टाड़प हुआ। बम्बई की नगरपालिका के प्रशासक का नाम स्वास्थ्य सचिव का आदेश हो गया कि डाक्टर गोपाल और नौनराम को तिलखित कर दिया जाए। पोस्ट विण जान वाले पत्रों की सूची में प्रशासक के नाम सचिव का आदेश पत्र रजिस्टर करवा के गुरमरन बाबू न उस लिफाफे का अपने ग्रीफेस में रखा और धुशी-धुशी घर लौट आए।

पर म धुशियों के फीचर छूट रहे थे। उनके छीटे तो अपनी गली में घुमते ही उनपर पड़ने लग थे। कुछी छटछटाइ तो बिल्कुल ही द्वार खालने आया। देखकर बाबू जी की बाँछें पिल गई। बड़े ने पाव छुए। 'मम्मी' और 'पापा' ने एक दूसरे का इतनी आनंद और गदगद नह भरी आवा से देखा कि गुरमरन पापा निछावर हो गए। बड़े स सब बातें सुनी फिर मलाप में धान "आज भरी बड़ी धुशी का दिन है। सा यह सिगरेट का पाकिट तुम्हीं रख ला हम तो पीने नहीं। स्वास्थ्य प्रभाग में गये थे कि तुम्हारा पाना स ही काम चल गया। कल माले गोपाल और नौनराम का पता माफ हो जाएगा। इतने में बिल्कुल की मुक्ति पर उस बधाई देने के लिए कुछ और योग आ गए। बात खजो के दूसरे रंग में बह गई।

दूसरे दिन सबेर दस बजे ही गुरमरन बाबू प्रशासक का दरबार पहुँच। उनके पी० ए० चन्द्रप्रकाश अग्रवाल न बड़ी आश्चर्य की, पूछा 'कैसे कष्ट किया, बाबू जी?'

'अरे भाई बस्ट-बस्ट क्या समझ ली साधन सचिव ही है। कल राजधानी गया था वहाँ हेथ सफेदरी के पी० ए० हमारा एक नामरासी है कुछ रिश्तारंगे भी दिखन जाइ। कहन लगे जाइस हो गए हैं पालन करने वाला है। मैं बड़ा डिस्चर रजिस्टर पर उड़वा कर मुय ही दे दोजिए, कल सबेर हो पढ़ा दूँगा सा यह ले आया है। कहकर प्राफेकम स एक चिन्टी और पाना की पुडियां निकालकर मेज पर रख दी। चन्द्र

प्रकाश मुस्कराए पाप की पुडिया खोलते हुए कहा, मेरी बेअदबी क्षमा कीजिए बाबूजी। दरअसल आपको तो गुरुजी बहना चाहिए और हम सब लागों का गुरमरन। चंद्रप्रकाश ठट्ठावा लगाकर पान मुह में रखने लग। गुरमरन बाबू मुस्कराए।

ट्रीफ़ेस में हाथ डालकर एक और कामज निकाला और उसे चंद्र प्रकाश के सामने रखते हुए कहा। ड्राफ्ट बनाके ले आया हू। देख लो और टाइट करवा के अभी प्रशासक महोदय से हस्ताक्षर करवा लो जिससे लव के पहले ही गोयल और साल नौयतराय का मुह कासा हो जाए। गोयल से चान लन घाने का नाम मैंने छोड़ दिया है। अपने किसी भरोसे के आत्मी को गोयल से चाज लने के लिए भेजना। ऐसा जो साले की थोड़ी बे जावरद भा कर। साले ने मेरी आत्मा को बहुत बहुत सताया है। इमे कौड़ी का तीन बनाना है। यहा भी सब काम तस किया फिर चक्रपाणि के घर फोन मिलाया। सयाग से वह मिल भी गए कहा अरे भाइ चौबे जी तुम्हारे अखबार के लिए एक ताजा खबर गायल सस्पेन्ड हो गए हैं और नौयतराय एस्टेलिशमेन्ट बलक भी। हेल्थ सेक्टर ने लिखा है कि भ्रष्टाचारिया का कड़ी से कड़ी सजा मिलनी चाहिए। प्रशासक के दफ्तर से उत्तरकर गुरमरन बाबू नाचे अपने पुराने दफ्तर में आए। दफ्तर में एस० डी० शर्मा और मानस महोदय पंडित रामखेलावन मिश्र बैठे बत्तिया रहे थे। डाक्टर कुलश्रेष्ठ स्टेनो की मशीन भी खटखटा रही थी। गुरमरन बाबू के दफ्तर में घुसते ही जाइए-आइए की धूम मच गई। वे मानस महोदय के पास ही कुर्सी पर बैठ गए। मानस महोदय की जाय पर थपकी दकर पूछा और सुनाइए पण्डित जी आज आप सबेरे सबेरे दफ्तर कैसे जा गए।

एसा है बाबू जी कि मैं आज तीन राज से छट्टी पर हू। कल और परसा कनकपुर में हमारा प्रवचन था सो वहा गए थे। रविवर आए था पता चला कि शर्मा जी की बही कल शाम जब स्कूल में जा रही थी तब स्कूटर से टक्कर लग गई। मैंने सोचा कि हाल चास ले जाव।

अर राम राम शर्मा जी अब क्या हाल है उसका कितनी बड़ा है बेबी?

शमाजी बान चिंता की कोई बात नहीं बाबूजी भगवान ने बचा लिया। बटक से दाहिन कंधे की हड्डी उतर गई थी। एडजस्ट करवा ली। प्लास्टर चढ़वा लिया है। कुछ दिना में ठीक हो जाएगी।

“मगवान रक्षा करें। आजकल तो शर्माजी पूछिए ही मन गाडिया ऐसे जघाधुध चलाई जाती हैं कि आए दिन एकसीडण्ट हाते हो रहत हैं।”

मानस महादधि बोले, ‘अजी कुछ मत पूछिए। हम तो समझत थ कि इदिग शामन म अनुशासन आ जाण्गा पर यहा ता अभी आरम्भ से ही ओर भी चौपट हान लगा।

डाक्टर कुलथेष्ठ थोमती गाधी के बड़े भवन थ, बाले, ‘वे देवारी क्या करें? जब हम-आप ही सब तरह स चौपट हो गए हैं। दरअसल ये विरोधी पार्टिया उनकी सरकार को घसन ही नहीं देना चाहती।

शर्माजी बोले विरोध तभी हाता है जब कोई न कोई कमी होती है।’

‘अर कमिया तो पचासों हैं। सन्नटी नाव का खेना आसान नहीं है, शर्माजी,’ डाक्टर कुलथेष्ठ बाले।

बाता को राजनीति के चक्र स निकालने के लिए शर्माजी से गुरसरन बाबू बाल ‘और सुनाइए शर्माजी, बाबू नीबतराय कहा गए?’

‘बहु आजकल अपन कमरे म बैठत है बाबू साहब, और इस वक्त तो साहब भी आए हुए हैं।’

साहब की बात हो ही रही थी कि एकाएक उपप्रशासक महोदय श्री रासबिहारी टण्डन और उनके पीछे प्रशासक के पी० ए० बाबू चन्द्रप्रकाश न कमरे म प्रवेश किया। सब लोग आदर से उठ खड हुए। हेल्थ अफसर डाक्टर गोपल क कमरे की ओर जाते हुए चन्द्रप्रकाश ने बाबू गुरसरन को आख मारी और दोना मुस्करा दिए। मानस महादधि मिश्र जी की दृष्टि म य मुस्कराहटें छिपी न रह सकी। उनक भीतर जाने के बाद पूछा ‘यह टण्डन और चन्द्रप्रकाश यहा क्यों आए हैं?’

शर्मा बाल ‘पना नहा। मगर काइ एक्स्ट्राआडिनरी बात है जल्द। अर भाई डाक्टर कुलथेष्ठ, प्रश्नकुण्डनी ता लगायो।

गुरसरन बाबू ने बीच ही म टार दिया। क्या प्रश्न-व्यसन की बाग बरन हा मार इतनी बड़ी ज्वालिप विद्या को इतनी छानी छोटी बाता के लिए नवनीष देने की जल्दगी हो क्या है?

ठीर कहा। इसम प्रश्न कुण्डनी क्या करणी शर्माजी? अब तो उत्तर कुण्डनी बनान को कहिए। प्रश्न ता मानस महादधि की बाग अधूरी रह गई। ए० आ० साहब के चपरासान आकर शर्माजी म कहा, टण्डन

साहब आपकी याद कर रहे हैं।

शर्माजी जल्दी से उठकर चल गए। मानस महोदय अपनी कुर्सी गुरमरन बाबू के पास छिपका लाए और धीमे स्वर में पूछा 'गायन क्या ?'

'मस्पेडड। गुरसरन बाबू का स्वर धीमा बिन्दु आपके जोर से बाल उठा "नीतिराय भी।

एक गहरी सांस के साथ दुबारी छोड़कर मानस महोदय अपनी कुर्सी पर तन कर बैठ गए। तभी स्ना ज्योतिषी अपना हिसाब फना-समेटकर प्रमत्त मुद्रा में बाल गिट्टीवरमेष्ट के बाद हमारे पूज्य बाबू जी की चरण रज आज पहली बार आशिम में पड़ी है कोई बड़ी बात तो हानी ही चाहिए। यहाँ हमारे मानस महोदय जी बैठे हैं सुंदर काण्ड की एक चौपाई पाद भाती है कि उहाँ निताचर रहहि ससका। जब ते जाति गयऊ बपि लका। चौपाई पूरी करके मानस महोदय हस फिर गुरसरन बाबू का मीठी दृष्टि से देखत हुए कहा 'हमारे बाबू गुरसरन लाल जी की जन्म कुण्डली में शत्रुहता योग पड़ा है डाक्टर साहब। मैं तो पिछले बीस वर्षों से देखता चला जा रहा हूँ 'वरन कुबेर मुरेम समीरा : रन सनमुख धरि बाहु न धीरा।

यह साहब के कमरे से डाक्टर गोयल मिर लटकाय बुझी लालटेन-सा मुह लिए उपप्रशासक टण्डन जी के साथ निकले। सारा दफ्तर खड़ा हो गया। उपप्रशासक की नजर गुरमरन बाबू पर पड़ी मुस्कराकर पूछा 'कहिए आप यहाँ क्या ?

'जनम भर की जादन है हूबूर। कभी-कभी पुराने मित्रों से मिलने चला आता हूँ। गुरमरन बाबू के कहते ही उपप्रशासक का साथ छोड़कर डाक्टर गोयल तबड़ी से दफ्तर के बाहर निकल गए। टण्डन साहब उत्तर सुनकर धीमी चाल से निकल। जब शेर निकल गया तो दफ्तरी जिडिया चहचहान लगी। मानस महोदय गुरसरन बाबू की जाय थपथपाकर घोल, जय हो। जय हो। जय जय धुनि पूरी ब्रम्हण्ड। जय रघुवीर प्रवल भुजदंड। (आखें मूँकर अपन दोना काना की लवें छुड़ जोर हाथ जाडे) अब हमारे सहयोगी हरवचन सिंह सरदारों का क्या होगा भाई। वह भी तो लिस्ट में थे। ये हमारे जन्म भरन बाबू माताप्रसाद भी थे।'

माताप्रसाद सुनकर काप उठे। उसी समय गुरसरन बाबू कुर्सी से उठत हुए गवभरी बाणी में ध्यान अर, अरे शेर तेंदुमे ता मर ही गए अब

भेड़ियों, स्यारा को भी देख लिया जाएगा। चलो, जरा शर्माजी का वधाई और नौवतराय की विदाई की शुभकामना देता हूँ।

गुरमरन बाबू अपने पुराने कमरे की तरफ गए जहाँ शर्माजी नौवतराय से राज ले रहे थे। उनके चल जाने के बाद मानस महोदधि ने कुर्सी छान कर उठते हुए एक अगड़ाई ली, फिर कहा 'समय अब कठिन से कठिनतम आ रहा है, कुलश्रेष्ठ बाबू। साचता है प्रीमेच्योर रिटायरमेंट लवें घर बैठ जाऊँ और श्रीराम सौकरार का ध्यान में ही समय बिताऊँ। कुत्तिया अब तेजी से उछलेंगी। (नवे स्वर में) य हमार बाबू साहब दफ्तर से गए नहीं हैं यह समझ ला सब जन।

“अब यहाँ कौन आएगा, मिथ्या जी ?”

‘मिथ्या यहाँ होनी तो उत्तर देती’

गलती हुई महाराज क्षमा चाहता हूँ लेकिन चरता बात को न ताड़ें। मैं समझता हूँ कि मुश्ताक अहमद ही आएंगे अभी तो।

हा चीफ सनटरी इस्पेक्टर ही दर्जा दोयम हैं फिलहाल वही आ सकते हैं। किंतु अभी कुछ कहा नहीं जा सकता। आजकल राजनाति में भया जिसका पीवा पसेरी बैठ जाय वही सच्चा हकदार है।

“आपकी बात सच है। ज्यातिप के अनुसार भी सन 85 तक तो बहुत ही कठिन समय है। घटे बड़े उलटफेर हो सकते हैं।”

उसी समय बाबू नौवतराय बाहर आए। चेहरा फक्ककाया हुआ लेकिन आँखें हुई मुस्कराहट के साथ सबको हाथ जोड़कर कहा, अच्छा खुश रहा अहलेबतन हम तो मफर करते हैं।

सब चुप रहे।

छज्जू चपरासी नौवतराय के पीछे पीछे दस पांच कदम गया पर जाने पीछे मुड़कर भी न देखा मरान हुए निबल गए। छज्जू जब लौटकर दफ्तर के कमरे में आया तो मेज़ा के बीच में खड़ा होकर नाच उठा। खिचड़ी दाढ़ी मूछा वाले दुबले-पतले छज्जूराम को नाचते देखकर सभी हस पड़े। याद मेज़ाब की जोर बाने से पहले ही बाहर बाबू गुरमरन लाल का मद मद मुस्कराता निप दिप-मा चमकता हुआ भयं मुछड़ा अपने पुराने कमरे के दरवाज़े पर झलका। कुछ-कुछ शाही बंदम की चाल से चलते हुए व बाहर आ रहे थे। मानस मातङ ने नज़र पड़ते ही उन्हें अपनी जपजपकारी से लपका ‘जय जय हो। आपकी प्रवृत्ति परामर्श की गायी स्वर्णा तरा में लिखे जान के योग्य है। वाह, वाह क्या बहना।’

छज्जूराम ने घर हो दफ्तर न हा — एस स्वर में ललकार कर कहा 'जर मिसरा जी आप तो खाली क्या ही बाचत हैं। मुला बाबूजी ने यहा प्रितच्छ रामलीला कर दिखताइ। कहकर छज्जूराम गुरसरन बाबू के चरणा पर चुक गए। यह शायद पहला ही अवसर था जब मानस महादधि उन्हें मिथा जी कहने वाले की टांग न खाच मके। बाबू साहब की आवाज में अफसरी रोव धलवा चपरासी को झिडककर कहा अब तुम्हार रिटायरमेंट के दो-ही तीन बरस रह गए है। आदतें बदला। समीज सीखा। जाओ।

सबसे रामायणमा करके दरवाजा के पास जाकर फिर पलटे कहा अरे भाई मिसिर जी महाराज आपके साथ जरा एक काम था।

मानस महादधि जूत में पर डाल चटपट अपने थोट की सिलवटें सीधी करते हुए गुरसरन बाबू के पास आए। गुरसरन बाबू ने उनके कंधे पर हाथ रखा और एफनर की सीढ़िया उतरने तक कुछ न बोले तबक पर आकर कहा गुज्जी तुम्हारे विजनेस की बात है।

आना कीजिए।"

हागकाग से हमारे बेटे के साथ एक बही के रहने वाल सिधी और एक अमरीकी सेठ आ रहे हैं। अरबपति पाटिया है। ता सतापी ने मुझे लिखा है कि सिधी सेठ रामलीला देखना चाहता है। उसने लिखा है कि संगीत नित अकादमी जाओ। मैं सोचा पहले आप ही से क्या न पूछ लू।

मानस महादधि ने गभीरतापूर्वक कहा अब अरबपति और विदशी है ता प्रभु मूरन भी जाकी रही भावना जसी' के अनुरूप होनी चाहिए। कुछ नृत्य कुछ गान कुछ कुछ मुखौटा और वेशभूषा की तबक भडक — मतनब यह है कि नव रस सिद्ध विलायता जारकस्ट्रा के साथ।

बाबू गुरसरन की बाछ खिन्न उठा बड़ी प्यार भरी दृष्टि से उनका देखत हुए मीठ स्वर में कहा हमारे कस्ब के रत्न है आप तिजोरी में रखन लायक।

हम एक ऐसे प्रदर्शन में भाग ले चुके हैं। तब खाली हम अपने प्रवचन अग्रजा में बोलना पडा था बाकी हमारे रामायण पाठ से बिन्शी बडे प्रभावित हुए थे। खर रामकृपा से आपका आयोजन बडा सफल हागा। राजधानी में संगीत नाटक अकादमी है म्यूजिक कांजेज है संगम हमारा प्रेम योत्तर है। रुपये दस में बारह हजार लगेग।'

‘जरा ख्याल है मिसिर जी।’

अपनी दक्षिणा मैं इसम जोड़ी ही नहीं महाराज। अरे डासरा, म्यूजिशियन आर्बेस्ट्रा वेशभूषा, राजधानी से आर्टिस्ट का यहाँ तक लाने से जान का खर्चा इन सबका अनुमान लगाइए और रही मरी दक्षिणा तो समके लिए तो जब थी राम जानकी सरकार की आरती करू तब जा थड़ा हा चम्बा दोजिएगा।’

बाबू गुरसरन कुछ दूर सोचत रहे फिर कहा, ठीक है, आप कल हमारे सतोपी परशाद के दफ्तर में चले आइए। खर्च के लिए कुछ एडवांस ल लीजिए मगर अब शत है, वह भी सुन लीजिये।

‘सुनाइए।’

‘इस महीने की पच्चीस तारीख का शो होगा। कहा जाएगा यह आपका बाद में बतलाया जाएगा। मेरा ख्याल है कि राजधानी के फाइव स्टार होटल ‘मीठा’ में जहाँ वह लोग ठहरेंगे उन्हीं का आडिटोरियम बुक करा लू। वहीं और भी बड़े-बड़े लोग मची बत्ती बुलवा लिए जाएंगे।’

‘अरे अभी सत्रह दिन है। कल से दौड़ धूप पर लगूंगा तो पंद्रह दिना में रिहसल पक्के हो पावेंगे। खर सब ठीक होगा। आप निश्चित हो जाए।’

चौदह

दिन का तीमरा गहर। विल्लू क कमरे में और सब थे बस चौहान अभी तक नहीं आया था। ग्योब पर बतनी में चाय के लिए पानी गर्मा रहा था और जवाना पर बहस। सत्तार चिट्ठे पर बह रहा था मरे साले नकमली। हमारी नेशनल लाइफ पर आखिर क्या असर डाल सके? हम जस कितन जवाना की जिंदगिया चौपट हो गई साली।

जमा यार उल्लूखों की धातें न कर। असल में यह साध कि यह धाममार्गी एक अच्छे उद्देश्य के लिए इतना जोश इतनी दीवानगी रखत हुए भी जगह जगह अमफन क्या हुए? जस हम लागा की सुहागी और सरमुत्तिया बाण्ड पर यादगुवन और उचित नाच आया था वैसे ही मार्क्सिस्ट कम्युनिस्ट। म के उग्रवादी गुट ने इस शुरू किया। वह फैल हो गए। हम भी फल हो गए। समझा बटा हवलदारजाद।" हरसुख न कहा।

बतली जारदार मुस्कारे छाइन लगी थी। सत्तार न स्टाव बन किया। चाय की पत्ती डालने के लिए ढकना खोला और बद किया फिर अपनी दाहिनी आर सन्न पर रके प्याले शीश के गिलास आदि हाथ से दीवार की आर पिसकाये और उधर मुह करके आमन मामन बठ गया ठंडे स्वर में हाथ जोड़कर बोला 'मरे बाप थे, रिश्ते ली इससे मैं इकार नहीं कर सकता मगर ए इटनकचुअल आला सठजाद जनाव रमेश गोयल साहब और जनाव वकीलजाद हरसुख यादव साहब आप दोना के बालिदेबुजुग बार तो छट्टादार के ममदर के ह बस और शाकि हैं। सूप बोन ता बोले छननी क्या बाने जिसमें घुत्तर छ'।

रमेश न हसत हुए कहा 'मान लिया यार। अब झगडा मन करो। लाभा चाय दो छटपट। ये विल्लू कहा गया है यार हरसुख?'

शतान को याद करो शतान हाजिर। पीछ के दरवाजे से निकल हमता हुआ वाला सत्तार क्या बात है बेटे मुह क्या फूला है तरा?'

रमेश न हसकर कहा अरे इस हरसुख न विचारे की छोपडी पर

नवसलिया की भस चढा दी, चुटीला हा गया है तुम कहा थ इतनी दर से ?”

‘वो जरा, मकान भालकिन ने बुलवाया था मा ।’

‘बाबू साहिब ! अर बाबू बिल्लूसरण जी हैंग ?’ सीढिया की पतली सुरंग से आवाज आई ।

कौन आया ?

बैतली म दूध चीनी डालते हुए सत्तार का हसी जा गई ‘बाहू क्या नाम लिया है बिल्लू सरन । अब मैं भी यही कहा करूंगा ।’

कौन है भाई ?” कहत हुए बिल्लू उठकर सीढिया की तरफ झाकने चला गया । दखते ही कुछ-कुछ पहचाना मगर चुप रहा ।

टरीपीन की पतलून बुशट खादी की टापी से झाकती चुटिया और बुशट म झाकनी कंठी ने माथ कपान पर कुकुम का रामान्दी चूल्हा । दाहर बन्म के दाढ़ी भूछा बाल भगत जी० सालजी हाथ म सुभाष छाप झाला सटकाय सीढिया के दरवाजा तक आ गए । बिल्लू सरककर एक किनार हो गया । रमेश नीर हरमुख सम्मलकर बठ गए । सत्तार कपा नीर गिलासा म चाय आजता रहा । सबकी तरफ दाया हाथ उठाकर खीसे निपारत हुए ‘ज सदगुर साहेम किया और पास खड हुए बिल्लू की तरफ देखा । बिल्लू बोला कहिए ।

भगत जी सामन बठे हुए रमेश का ही बिल्लू समझ रह थे इसलिए अकडकर बाले नहूंगा मगर आपस नही । मैं श्रीमान बिल्लूसरण जी

सत्तार वाला अजी भगत सुनन्तासरन जी साहब आप बिल्लू सरन स ही बात कर रहे हैं । (रमेश की आर सिर घुमाकर) ये तो बिल्ली सरन है ।’

चोकर भगतजी क तबर बदल गए, गिडगिडात हुए बिल्लू को दखा कहा, “आप हो बाबू गुरसरण सालजी क सुपुत्र हैं ?’

जी हा आइए बठिए ।

‘छिमा कीजिएगा । आपको कभी दया नहा था

‘बाई बात नही । बैठिए चाय पीजिए । सत्तार न पढ़ता गिलास उनके मामने रखा फिर औरा की तरफ चाय क प्यान बढ़ान हुए चटकर कहा ‘अरे भाई हरमुख, पहचाना नही इहें । य द फेमस भगत सुनन्ता सरन

“हा ॐ। सदगुरु साहेब तो अपन आपनो राम जी का कुत्ता कहते थे पर मैं तो कुत्ता राह का, घूरा मरा नाऊ।” कहकर दम तोड़ सा दिया, गदन लटका ली फिर एक गहरी सास ढीलकर चाय का गिलास उठाया एक मुड़का लगाया और फिर एक ठंडी सास ली। चारो मित्र ध्यान से भगतजी की एक एक भाव भंगिमा देख रहे थे मद मन मुस्करात हुए एक दूसरे को कनखिया से ताक रहे थे। एक चुस्की लेकर विल्लू ने कहा “कहिए भगतजी कस क्या किया ?

‘क्या कहें। सद्गुरु साहेब (कान पकड़कर) नइ नइ रहीम साहेब का सबद है कि जापर बिपना पडत है सा आवत यहि दम। कहत हुए भाखें भर उठी भर्राय गल से कहा आप सब लोग ने सरसुतिया सुहागी की मरजाद बचान के लिए जुद्ध किया अब भरी लाज बचाइय। क्या कहूँ ससुरी के पहल पार की लोंडिया ने जाज भरे बजार में मेरे ऊपर जूता घोष मारा और उल्लू का—(रोना शुरू) प प पटठा कहा। भगत जी फूट-फूटकर रोने लग।

दाढ़ी मूछा वाल तीस बत्तीस बरस के जवान का हुदक हुदककर रोना देख चारा का हमी आ रही थी और दुख भी हो रहा था। और लोग चाय पीते रह मगर विल्लू ने उनकी बाह पर हाथ रखकर पूछा शांत हो भगत जी यह बतलाइए कि किस लडकी ने भरे बाजार में आपका अपमान किया ?

हासा से आसू पाछकर रूमाल तलाशने के लिए बुशुश और पतलून की जेबें टटोल डाली न मिला तो झाल से मला अगोछा निकालकर मुह पाछन लग फिर कहा किमकी लडकी बतलाऊ भया। जनम मरन रजिस्टर पर तो पिता की जगह मरा ही नाम चना हैगा और बा भी इस पापी अधम का अपने हाथ से ही चनाया पडा था क्योंकि बेटी का बाप उन सभ नगरपालिका का अधिष्ठ था मेरा सगा चाचा साला हरामी की जीलाद। जब वा पट में आई तो ससुरे ने जबरदस्ता मेरे साथ उसकी भयो के फरे डलवा दिय। सदगुरु साहेब उसी के लिए कह गए हैं कि जारू जूठन जगत की

जरे तो तलाक दीजिए हरामजादी का। बिस्सा पाव कीजिये। य भा भा भा भा राते क्या है ?

सत्तार का इस तरह कहना, विशेष रूप से सुनंदा का हरामजादी कहना भगत जी० लाल को बुरा लगा। रोना त्रिगूरना बिसार कर सतेज स्वर में बोले, “एक कनक अरु कामिनी निसफल किया उपाय। वह तो

सदगुरु साहब मेरे लिए सैकड़ा बरस पहले लिख गए थे। मगर करम लिखा भी कुछ होता है। मेरी अम्मा क्या अपन बस मे होकर ठाकुर बच्चू सिंह मेरे पिता की सावेदार बनी? उनकी दादा ठाकुराइन बाबू निबली और मेरी अम्मा ने मुझे जनम दिया। ठाकुर बच्चू सिंह की जजाद का इकलौता वारिस होके भी मैं अधिवारी नहीं हूँ। बारन कि मेरी अम्मा मेरी जगदम्बा भीच जाग की थी। वो क्या हरामजादी कही जाएगी? मेरी सुनदा की फिर हरामजादी क्या कहाँ? और अगर है तो उसे हरामजादी बनाने बाने ऊँची जान बाने—ताबत बाने—पस बाने अर्थात् आप सब लोगो को भी हरामजादा बनि हरामजाद नही कहा जायगा?" प्रश्न की सकीर अपनी आया से सत्तार की आखा न सीधी आचन क लिए गदन उधर घुमा दी।

भगत जी की लपट बामो ने मोड़ी देर के लिए मजबूत अपने प्रभाव मे बाध लिया। वह सबता बिल्लू न सोझ, पूछा तो आप पहा किसलिए पधार है?

'हा अब आपने काम का प्रश्न किया है। बात यह है कि कल सता के पास नियुपाय स सुनदा की एक चिट्ठी आई है, साथ म एक मोटू है। आपके तिरिमान भाई साहब और बा समुरी यतबहिया डाल छड है और आस-पास डेर सार गुड्डे-गुड्डिया, छिलौन और चीज बस्तुआ का प्रदर्शन हो रहा होगा और लिखा है, टू सता, भयक गूढ़ रस्मी विष लो काम मम्मी पापा। श्रर, पापा चाहे जिते बनाआ हम कुछ नहीं कहूँ। हमारा आसिरवाण है। बाकी जो य लिखा है कि अकल अर्थन मैं ठीक तरह स सुम्हारी दखनाल करत हूँ क नहीं बख्ते और जो न करें ता कह दना कि आकरक मैं उह ठीक कर दूगी। तो इससे हमारा भारी अपमान हुआ है। लडकिया अवश्य पारा की हैं परनु भयक ता मेरा है और य सबा भी भयी कि क्या को समुरी आयक मुने तनाव ता नहा द दगी।

लम्बी बाता का कम सटने से तोडकर बिल्लू न पूछा, 'इमरा उत्तर भला मैं क्या द सकता हूँ?

"सा तो नहीं द सकत मैं जानता हूँ। मैं तो यह अरदाम करन आया था कि आप अपने भाई माहेय से कहिएगा कि उस चोरीम घण्टे भर ही अपने पास गये बाकी हमारा घर उममे न छुवायें। हम आपके पाव पडते हैं। हमारी आवरू न त्रिण्डें।

'आपकी आवरू अर है कहा। क तो लुट चुकी।' सत्तार ने फिर

घरा खेल दिखला कर भगत जी का तान दिया। व बाल— जब तलक सुनना मिसज जी० लाल है और उमकी मताना के बाप की जगह मरा नाम दज है तब तलक मरी आवर वीन ल सकता है। यस मरी यही प्रायना है आप स।'

यह मय बातें पापा से कहिए।

बान असल म य है कि बाबू गुरमरल लाल जी मर आपीसर रह हैं और अय ता मेरे मालिक व पिता भी हैंगे। उनस कहत लजा आती है। आप कह सकत है। अर यह भी कह दोजिए कि अगर उनस वच्च होपेंगे ता उनक बाप की जगह भी मैं अपना नाम लिखा दूगा। बाकी मरी जाउका न जाय धर न बिगड यही आजर है मरी। आया म फिर आसू कुछ-कुछ सुक्कनें भी सुनार्द दा।

चौहान आ गया। कमर म भगत जी का नया नमूना देखकर चौका। तिल्लू ने तौरिया चटाकर भगत जी से कहा भगत जी मुझ आपस जाई सटानुभूति नही। मैं भाई स इस मामले म कुछ न कहूंगा। आप जा सकत है।'

भगत जी० लाल ने उह घूर कर देखा फिर एक प्राध मरी हुकार सी छाडी। शोला उठाया खे हुए कहा हज काव ह व ह वे गया कती बार कबीर। मरा मुग्गमा क्या खता मुरवा न बोर पीर। एस पीर हम का क्या बचावगे। आप लीगा व कारण देस रमातल म जाय रहा है।' और भी कुछ बड-बड करते निकल गए।

डर्टी। पवटेंड। हरमुख भिगा कर बोला। सत्तार ने चौहान से पूछा क्या वे सले अय तक कहा मर गया था?

'अरे मरा नही जिदा हाव आ रहा हू और तरे लिए भी ज़िदगी का पगाम लाया हू।

सब लोग उत्सुक नज़रा से उस देखने लग चौहान वाला अभी दोपहर म विल्लू व पापा ने चपरासी भेज कर मुख इसके मया के दपनर म बुलाया।

नरसा छुट्क नू भया व स्मगलर किम्बा का काफिला आ रहा है न उनके स्वागत—

'हा हा मुसस कहा कि विल्लू तो नासमयी कर रहा है। दा तीन दिन इधर दा तीन दिन उधर—पाछ छ दिन का काम है। सौ रुपय रोज देंगे।

“सो हमे राज ?” सत्तार उचक पडा ।

‘हा यह भा बहा बिवाद म पमानेट कामकाज म भी लगवा देगे चाह तो गवनमट म या बिजनस म ।’

मुझ ल चल भया । बवन मनगी मे सतरी बनवा देने क लिए सिफा गिब कर दे इमक पापा वस । चौराहे पे ‘गो स्टाप’ का नाच नाचत हुए रोडा रागि बमाऊगा । फिर एक बीबा हो सानी—अब जवानी भडवनी है पार ।

हरमुख जाखे निकालकर गुरीया ‘मान अभी कुछ दिना पहले ता एण्टी बरकभाके गिर वन कर हम लोग क साथ नाम बमावा और अब समगलरा क साथ नाक बटाएगा ? त्रिपू की दख, बाप भाई सब को छाँ कर

विलू कर सकता है मैं नहा । मा-बाप दो ब्याहने नायक यहेने उनक लिए राटी बमाना हा मरे लिए सच्ची दश सबा है ।’

हा पार मर साथ भी यही समस्या है । बिना मक्क स पीठित । उड भाई फिन्नी हारो बनन की छुन म हा बा बरम पहल अपनी पत्नी आर बच्ची को छाहकर बगई गए सो जोरो बनकर बत्ती सटके ह । सालभर स ता चिन्नी पत्नी भी उही भाई । छत बटाई पर दहर गुजारा चलामा जा रहा है । जोरिका मुझ भी पुकार रही है । जब राम्ना खुला है तो बंद नहीं बग्या । जनता अभी बिद्राह के पकाव पर नही जात । आदशों क पाछ इनन जीवना स जुजा खलना मरी आत्मा को मथारा नही है ।’

‘जाना सालो गहारी करो । अभी बिल्लू और रमेश मरे साथ है ।’

सत्तार चिड़ गया बाना तुम्हारे पिता न दार् तीन लाख बमा लिए है । रमेश क बाप तो दम-बारह लाख क आतामो है । तुम्हारे बाप तुमस लाख नाराज हों मगर कारिस ता तुम्ही हाम । रमेश को भी

घात का पेटा दकर रमेश बाना, ‘मर्, तीन चार दिन पहन इमके पापा हमारे गरा आण थ । कम्बे का गमनीला बमनी का प्रापटी—मुकूट बपडे आनि—नेने । मुझस उहोने मने फादर क सामन भी बग या कि मडा अट्टा मोरा है । लम्बा जार टुनिया की मर का लाभ हापा । मैंन मना कर दिया । फादर भी बाव कि मर तीन लहका म अगर एक नना बने ता हर्जा नहा । वह छथ म नही आया ।

हा भाई, अगर उनक पाप बारह साथ है तो चार लाख तुम्हारे हिस्म म लिख जाणव । बग सू की बमाई म मुनछरे उडाना और सू

मारीं न मदी का नाटक घुसता। मल्लाम र हिर कान्हा सी।

ठीक मान लें और वे भी विराम स्थिति में आया । — मरा भय हुआ
 रसमा का पतारिका हींसा बननी आ रहा है मरीदा का मित्रही मगर
 पारत हुआ आ रहा है । आनी बहना भावना विमलित भावने
 मगारवाही माविनी का पतारिका म मार मान ब मिला ।

रमणः कः तपोऽस्यां यतिः शुभः कः ता वना यत्तु । १॥

[illegible]

गतात् की शरी-शरी क० ॥ रम० का बुध र० पा० म बा० रा शुभ
मरी इमात्तात् और मरी ममात्तात् ॥ १११ ॥

विष्णु बीगम गदा बजा करे मार द आत्म शी म नाशनी

गुप्त नर गद्दी विह्वल । मैं भाग्य बाल इम समय की तियावता का
 मूल नाहूँगा । गुप्त बचन मेरी श्रम तथा बलाग्न रचना ? गुप्त म आत्म-वा
 तिर गद्दीहराका तावा । गुणगो-नरगुणिया अयाय मतवाहूँ ही जात और
 ॥ वाय की रक्षा न निग बचन मला दूरा गुणित पाव लवा । पाठ र
 ममात्रवा । त्रिभुजमाग अगष्ट ही और इनका समस्त भेदा उका
 छवछावा म मान जाते और उक्त भी मानामास करे ? पाठ र
 ममात्रवा ।

गीता का मन्त्री का हस्तमुख व तद् न गीता तुम भी ना ना रह हा
उसी समय दर की छाँ म ? उसी वक़्तु मन्त्री व आप मविम पान व लिए
नाहो रमहाय ?

इस रोग में। मगार भी जान स आया अब हम यह मगार
 पर पुन बि हम अता और अपने परधाना न निर राडा रोगी नमानी है
 और व सुम्हारे माय रहन न हम मिल तहा मरणी ना मनिवा बटा
 जाएन। आग भुम्हारे काम पात का सातन इकर है मगर मात ना बि
 यह र भा मिल मका ता छ-मान रोज म यह छट-मान मो गत्य ता नमा
 हो सेन। सुम्हारा समाजवा अब तक पूजीपायी की नटपुसा मनवर
 नाचना रटुगा तब तक हम अपनी रोगी-सातन का जुगाड़ करने न निर
 एस हो सिसन सिसनकर पीना हाया समासो। डिपात्रणे।

नल यार यों गर्माएगा तू बहुत लम्बी शिब जाएगी : यहमबाजी

की पुरानी आदत का लाल सनाम कर और चल। देर हा रही है।” चौहान न सत्तार का हाथ पकड़कर घसीटा और सीढ़ियाँ की तरफ बढ़ा।

रमेश देखता रहा फिर मुस्कराकर कहा, ‘यारो हमारा आठवें नवें दर्जे सय एम० ए० तब का साथ क्या इतनी आसानी से भुलाया जा सकता?’

नहीं, जब तक घुटे दिला भ हिलोरें उठान के लिए यहा आए अगर गुजारा नहीं। और भाइ गुस्से में तुम दागो को काई अगर बड़बो

रमेश ने चौहान के गले में हाथ डालकर अपना आर घसीट लिया फिर हमरे हाथ से सत्तार की बाह दबाई कहा यार बहस का एक मुद्दा तो हल हा ही नहीं पाया। नूने छड़ भर दिया खाली।

सत्तार बोला वीन सा मुद्दा?

‘वही जवानी भडकने वाला?’

सुनकर मबके चेहरा का तनाव हट गया हसी सहसा उठी। हरसुख चहककर वाला मुन-दाआ की कमी नहीं यारा। एक दूतो हजारों मिनता है। बाकी जिनकी किस्मत में जोरए हागी वे खशी से गुलाम बच्चा की सट्टा बढ़ाकर अपनी भडकने शात कर देंगे।’

हसी खुशी महफिल बर्खास्त हुई। रमेश भी फिर न रुका, चला ही गया।

कमर में रह गए बवल बिल्नू और हरसुख। सनाटे के समदर में थोड़ी देर दोनों ही चूबे रह फिर चुप्पी तोड़ी बिल्नू ने। अपने कमरे में सरमरी दृष्टि घुमाकर वाला पिछल पान वरमों में जब से मैंने यह कमरा लिया है हम पाचा का बहसें गाली गलीज हसी-ठहाक इतने भर गए हैं इसमें कि अब उनका सूनापन अखरना बहुत जरूरी है।

हायार भुझे तो लगता है कि एक जन्म में ही हमारा पुनजन्म हागा। आज का बहस में एक लाभ मुझे अवश्य हुआ है। मैं भी तुम्हारी तरह घर से अलग रहूंगा। पिता के पमा पर समाजवाद का नाटक नहीं खेनूंगा। यहा नहीं राजधानी में रहूंगा। वहा नेशनल दफ्तर में मेरी घुमपठ है। रस्ता निकाल लूंगा। फ्री-लान्स जनलिज्म। धरे लिए अब यही पुनजन्म का जीविकापाजन काम बनेगा। पार्टी के दलदल में उतरकर अपनी गर्मी से उस सोछा भी मरा उद्देश्य हागा। मैं अब आतंकवादी दर्रे से समदीप प्रणाली को बेहतर समझता हूँ। उसी का सहारा लूंगा। मैं इन सा १२ रागमा की लका में विभीषण बनूंगा। विभीषण महार तहा था

अपन घर म आसुरी मत्ता का विराधी था ।'

मैं सहमत हूँ। हम भल ही यह तिन सा न सवें जा हमारे मपना म बसा है मगर उसक लिए भगमक अपन समाज म बगारिक हिलारें ता उठा ही न्य।

तो तुम भी मर माय राजधानी म क्या नहीं रहन ?

नहीं मैं अत्र यही रहूँगा। मुन कहानी-उपमास लिखन की प्ररणा मघर कुछ तिन म जनाया म मिलन सगी है एकाध लिख भी टाला है नाम रखा है 'रानक और स्वानि बू'।

हरसय मुक्कराया पूछा और स छिगान म तुम अवश्य मपन रहे हो मगर मरी नजर म आत है यानू तुम्हारी स्वानि बू'।

मिन्नु शेंपा मुक्कराया पूछा कच रेखा ?

परसा कि नरमा। तुम नीच सिगरेट सने गए थ। मैं आव बठ गया। य पीछ के दरवाज का पन्ना खुला

हमत हुए हरमुख के कध को मगवर कुछ कुछ शेंपन हुए कहा विधवा है बेचारी। दो बरम पन्ना केवल फेरी की गुनहगार हा गई थी। मरी मकान मालकिन म एक तरफ मातत्व भी भरपूर है और दूसरी तरफ अपनी दकियानुमित म बठार भी है। श्यामा भी हठीली है। दा बरस कठिन तप स काट। मैं फरारी म लाट के आया तो ऐसी श्रद्धाभिभूत थी कि पहली बार यह पीछ का दरवाजा खोलकर आरती का थाल लिए कमरे म आई। आरती की परा पर फूल चढ़ाए परछुए। भावविह बना मुक्कराती हुई चली गई। फिर आई है पूछा आप खाना खाक तो नहा आए ? मैंने कहा भारी नाशता किया है भूख नहीं है। कुछ बोली नहीं सीधे हाथ पक्कर भीतर न गई। खाना पिनाया। माजी न भी भद्रता की मिठास दी। अच्छा लगा।

फिर ?

फिर दो चार दिना क बात ही हम दोना बहाश हो गए। दानो का पहला अनुभव। मैं फिर बहुत तज्जित हुआ कहा यह ठीक नहा। अच्छा है तुम किसी से विवाह कर ला मैं एव अपनी बात से बधा हूँ और कोई बधन न स्वीकार्या।

फिर ?

'बोली मेरी जिन्गी म जो पहली बार आया है उस ही मन म पति भी मान लिया। जब माह हो न हो तुम चाहे छोड दो मैं न छोडूंगी।

हठीली है। मा से भी मेरे सामने ही माफ-साफ कह दिया।”

“मा क्या बोली?”

“पहले जरा उदास और खिची खिची रही। अब ठीक है। कहने लगी कि आवरू न सुटे। मैं कहा आवरू जाने का डर हुआ तो शर्तिया विवाह कर लूंगा। पर अभी तो सब ठीक ठाक है आग की कौन जानता है। अच्छा यह तो हुई उप बात अब मुख्य पर आ जाओ। हम अपने उद्देश्य को लेकर एक हैं।”

“एक हैं।”

“लेकिन मैं अब शायद सक्रिय राजनीति में उतरना अपने लिए कम उचित नहीं समझता हूँ। ट्यूशन पत्रकारिता जमे चलती है चलती रहेगी। अगर यह क्या उपयास लेखन मुझसे सफलतापूर्वक निभ गया तो फिर यही मेरा करियर भी बनेगा।”

‘राजधानी तो आया करोने न?’

“नित्य। बिना नागा। लायन्नेरी आए बिना कही मेरा गुजारा है भला। फिर वही से खबरा की रोटिया भी भुनेंगी।”

“अच्छा, मैं चलूंगा। एक बार पापा से दो दो बातें तो होनी ही हैं।”

हरसुख भी चला गया। बिल्कुल सोचन लगा पापा ने मुझे अकेला करने के लिए मेर मित्रा को भी फोड़ लिया लेकिन व मुझे डिगा न पाएगे। बोड़ी देर बाद उठा। नीचे के दरवाजे बंद करने गया। जब ऊपर आया तो देखा, कमरे में श्यामा उसकी आखा के लिए उत्सव बनकर खड़ी है। •

—अमृतलाल नागर

16 अप्रैल 1982

11 बजे रात्रि

અવને સર મ કામુગ મળા શા રિરા'તે પા ।

मै गङ्गा-तट । इस जगत् का यही तट है जहाँ आह्वार मन्ना म
यगा है मगर टमक निग भग्मक भया ममाज ५, क्षिपार्थक हितारे
मा ग्या हावेग ।

ता पुन भी : समा समाध्याना न कदा तनी मय

मही मैं अब दही बना। मूज बनाती उतनाम दिग्गज वर प्रमोदा
 नष्ट कुटुम्बिताम अब दही दिग्गज मही है तकाध विद्य भी दही है
 ताम रमा है पातक और म्यानि वर ।

हमारा मुखरता का पूरा और न छिपाता मनुष्य अवसर मलय रहे
हो मलय मरी नखरा म भाव है या मनुष्यगी स्वाति व ।

बिन्दु सौदा मुम्बईगंगा गुला कब देगा ?

परमादि उम्मा । मम पाप मिमरुतमन नत थ । * और यठ
मदा । य पीछे क नरपात्र का मन्त्रा मन्त्रा

एतन हूए हरमुख ब बज बा बबबर बू बूछ गोपन हू कहा,
 'विधवा है बबारी।' बरम बहन बबम परा की गुहाहा हो गी।
 मरी मवान मानविन म एव तरप मानस भी भरपूर है और दूगरी गरफ
 अरनी दविपागुगिया म बठार भी है। श्यामा भी हनीली है। दा बरम
 बठिन तप म बा। मैं पगरी म लो ब आया ता ऐगी अन्नाभिभूत थी
 नि गहली बार वद् पीछे बा दरवाजा गानकर आरती बा घाल निग
 बमर म आई। आरती की पग पर वूम पड़ाए परछा। भावविह बना
 मुस्करानी हुई बली गई। फिर आई है पूछा आप घाना गान ता नही
 आए ? मैं कहा भारी नाजना बिया है भूख नहा है। बूछ बानी नहा सीध
 हाथ पकडकर भीतर म गई। गाना गिलाया। मांजी ने भी भन्ता की
 मिठांम दी। अच्छा लगा।

‘पिर ?

फिर दो चार दिन का वास हो हम दोनों बहोश हो गए। दादा का पहला अनुभव। मैं फिर बहुत गज्जित हुआ कहा यह ठीक नहीं। अच्छा है तुम किसी से विवाह कर सो मैं एव अपनी जान से बचा हूँ और कोई बचन न स्वीकारूँगा।

‘फिर ?’

‘बोली मेरी जिम्मे म जा पहली बार आया है उस ही मन म पति भी मान लिया । अब ब्याह हो न हो तुम चाहे छोड़ दो मैं न छोड़ूंगी ।’

हठीली है। मा से भी मेरे सामन ही साफ-साफ कह दिया।”

“मा क्या बोली ?”

‘पहले जरा उदास और धिची धिची रही। अब ठीक हैं। कहने लगी कि आवर न सुटे। मैंने कहा आवर जाने का डर हुआ तो शर्निया विवाह कर लूंगा। खैर अभी तो सब ठीक ठाक है, आगे की कौन जानता है। अच्छा यह तो हुई उप बात अब मुख्य पर आ जाओ। हम अपन उद्देश्य को लेकर एक हैं।’

एक हैं।’

“लेकिन मैं अब शायद सक्रिय राजनीति में उतरना अपने लिए कम उचित नहीं समझता हूँ। ट्यूशन पत्रकारिता जैसे चलती है चलती रहेगी। अगर यह क्या उप-धास लेखन मुझसे सफलतापूर्वक निभ गया तो फिर यही मेरा करियर भी बनेगा।’

‘राजधानी तो आया करोगे न?’

“नित्य : बिना नागा। लायब्रेरी आए बिना कहीं मेरा गुजारा है भला। फिर वही से खजरा की राटिया भी भुनेंगी।”

“अच्छा मैं चलूंगा। एक बार पापा से दो दो बातें तो होनी ही हैं।’

हरसुख भी चला गया। विल्लू सोचने लगा, पापा ने मुझे अकेला करने के लिए मरे मित्रा को भी फोड़ लिया लेकिन व मुझे डिगा न पाएंगे। थोड़ी देर बाद उठा। नीचे के दरवाजे बंद करने गया। जब ऊपर आया तो देखा, कमरे में श्यामा उसकी आँखा के लिए उत्सव बनकर खड़ी है। •

—अमृतलाल नागर

16 अप्रैल 1982

11 बजे रात्रि